

# सच की दर्शक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सशोकार की मासिक पत्रिका

## नोट बंदी 2.0



कलम इनकी जय गोल  
महावीर सिंह



कर्नाटक चुनाव यैं कांग्रेस की  
जीत के मायने



भारत में मजदूरों की दशा और  
मजदूरी दिवस की सार्थकता



G7 की बैठक से चीन को  
दी गई कड़ी चेतावनी

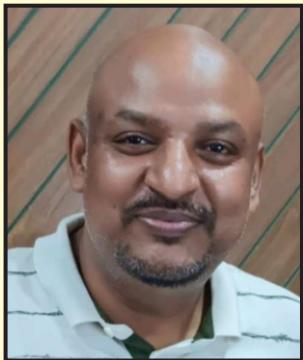
# वक़ार ज़ाहिद उर्फ बल्ला



सभासद

समाज वादी पार्टी

मवई खुर्द भाग- 2 वार्ड नं. 10



## आशीष जायसवाल

 **pharmanation**  
LIFE SCIENCE

57, Mainatali, Mughalsarai, Chandauli U.P. (India)  
Mob. : 9415288377, Email : pharmanation.mgs@gmail.com

## डॉ ज्ञानेश कुमार पांडेय (जी. के .पांडेय)

मैनेजिंग डायरेक्टर

विद्या हॉस्पिटल मुगलसराय चंदौली



## महेंद्र यादव

प्रधान संघ अध्यक्ष नियमताबाद विकासखंड

पूर्व प्रधान

भिसौरी ग्राम सभा

नियमताबाद विकास खंड

# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 07, अंक : 2, मई, 2023

संपादक

ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक

आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक

मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक

शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार

दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर

बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी

अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी

अजय राय

अशोक शर्मा

जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स

संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय

सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,  
चेतगंज वाराणसी

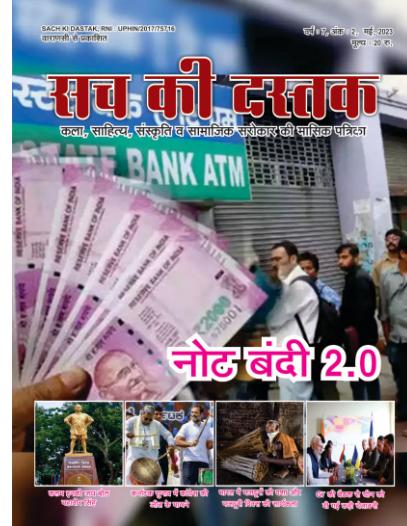
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)

म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)

मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी ठोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।



## स्टेट ब्यूरो प्रभारी

- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
- दीपाली सोढ़ी - असम
- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
- श्री रामकृष्ण सहस्रबुद्धे - महाराष्ट्र
- डा. जय राम झा - बिहार

## ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
- सुनील मित्तल जिला प्रभारी धौलपुर (राजस्थान)
- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी.)
- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी.)
- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी.)
- साहिल भारती प्रभारी लखनऊ (यू.पी.)
- राकेश शर्मा जिला प्रभारी चन्दौली (यू.पी.)
- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखण्ड)

## सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/- (डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak

A/c. No. : 13751652000024

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

# सच की दरताक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका



## इस बार

क्र.सं.	लेख	पेज नं.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔदै'	05
3.	नोट बंदी 2.0 - ब्रजेश कुमार प्रधान संपादक	06
4.	'भक्ति' - डॉ. इन्दु अग्रवाल देहरादून	08
5.	कलम इनकी जय बोल - कृष्ण कांत श्रीवास्तव	09
6.	कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस की जीत के मायने - आकांक्षा सक्सेना न्यूज एडिटर	13
7.	जलवायु परिवर्तन और सामान्य घटनाओं की आशंका - पवन तिवारी वरिष्ठ पत्रकार	15
8.	तीन बाल कविताएं - अशोक मिश्र	18
9.	बेटा: इस साल होली में घर जरूर आना - जनार्दन मिश्र वरिष्ठ पत्रकार	19
10.	गजल - डॉ प्रमोद शुकला	20
11.	भारतीय संस्कृति के विरुद्ध समलैंगिक विवाह की मांग - सोनम लववंशी	21
12.	बातें हिंदी की मोहब्बत अंग्रेजी से - डॉ सुशील उपाध्याय	23
13.	भारत में मजदूरी की दशा और मजदूर दिवस की सार्थकता - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	26
14.	पूर्वोत्तर भारत का सांस्कृतिक वैभव- वीरेंद्र परमार	28
15.	एकात्म मानव दर्शन और भारतीय मानसिकता का वी औपनिवेशिकरण - पंकज जगन्नाथ जायसवाल	31
16.	युवा व संगठन- प्रभाकर कुमार जमुई बिहार	34
17.	भारतीय सिनेमा का पहला गाना - बुजेश श्रीवास्तव मुन्ना	36
18.	हीट स्ट्रोक - एडिशनल सीएमओ आजमगढ़ की संपादक से सीधी बात - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	39
19.	श्रीखंड बनाना सीखें जायका - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	41
20.	लव जिहाद का काला चिट्ठा खोलती द केरल स्टोरी फिल्म - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	42
21.	गेम में हार के बावजूद कंबोडिया की धारिता ने जीता दिल - मनोज उपाध्याय खेल संपादक	44
22.	G7 की बैठक से चीन को दी गई चेतावनी - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	46
23.	सोनू किन्नर नगरपालिका परिषद अध्यक्ष निर्वाचित, रचा इतिहास - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	48
24.	देश को मिलने वाला है नया संसद भवन - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	50
25.	नए संसद भवन को बनाने में करीब 12 सौ करोड़ रुपए खर्च आया है - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	52
26.	12वीं के बाद फॉरेंसिक साइंस में बनाएं अपना कैरियर - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	54
27.	कैंसर रोग का इलाज हुआ आसान - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	56

# संपादकीय



प्रिय पाठकों! सबसे पहले आप सभी को मजदूर दिवस तथा मातृ दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएँ। इसी माह नर्स दिवस भी हम सभी मनाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस न केवल नर्सों की पिछली उपलब्धियों का जश्न मनाता है बल्कि दुनिया भर में स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में उनकी विशेषज्ञता और नेतृत्व की निरंतर आवश्यकता की याद दिलाता है। 'सच की दस्तक' की तरफ से नर्स बहनों को भी ढेर सारी बधाई व शुभकामनाएँ।

अब बात करें देश के मुद्दों पर। एक बार पुनः नोट बंदी का ऐलान कर दिया गया है। इसके तहत 2000 के बड़े नोट को प्रचलन से रोक दिया गया और 23 मई से सितंबर तक का समय दिया गया है कि बैंकों में 2000 के नोट हर हालत में जमा करा दें। वैसे इस बार नोटबंदी का विशेष असर भी पढ़ने वाला नहीं लगता क्योंकि बहुत पहले से ही 2हजार के नोट बाजार से लगभग गायब हो गए थे। ऐसे में पहली बार की तरह लाइन नहीं लगाने पड़ेंगे। सभी को याद होगा 16 नवम्बर रात्रि 8 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नोटबंदी के ऐलान को। प्रधानमंत्री ने जैसे ही 500 और 1000 रुपए के नोट बंद करने का ऐलान किया, सभी के चेहरे की हवाईयाँ उड़ गई थीं। हमने इस अंक में नोट बंदी पर विस्तार से चर्चा किया है।

कर्नाटक में इस बार कांग्रेस ने भाजपा को बुरी तरह से शिकस्त दी है। इस चुनाव में बजरंगबली पर खूब चर्चा हुई लेकिन बजरंगबली की कृपा केवल कांग्रेस पर ही हुई। कर्नाटक विधानसभा में कांग्रेस ने दो तिहाई बहुमत प्राप्त कर सरकार बनायी। यहाँ पर लोगों ने समझा दिया कि

मुद्दे केंद्रीय न होकर स्थानीय होने चाहिए। बेरोजगारी से बिलबिला रहे लोगों ने इस बार कांग्रेस का हाथ थामा और यह भी बता दिया कि धार्मिक मुद्दों पर बोटों का ध्वनीकरण नहीं हो पाएगा। इस अंक में कर्नाटक चुनाव का विश्लेषण पढ़ने को मिलेगा।

स्वतंत्रता सेनानी महावीर सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के एटा जिले के शाहपुर टहला में हुआ था। ये बाल्यकाल से ही क्रांतिकारी रहे। महावीर सिंह ने 1925 में डी. ए. वी. कालेज कानपुर में प्रवेश लिया। तभी चन्द्रशेखर आज्ञाद के संपर्क से हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य बन गए। महावीर सिंह भगतसिंह के भी प्रिय साथी बन गए। उसी दौरान महावीर सिंह के पिता जी ने उनकी शादी तय करने के सम्बन्ध में पत्र भेजा जिसे पाकर वो चिंतित हो गए। शिव वर्मा की सलाह से आपने पिताजी को पत्र लिख कर अपने क्रांतिकारी पथ चुनने से अवगत कराया। इस अंक में महावीर सिंह के अनछुए पहलुओं को स्पर्श किया गया है।

मई का महीना ऐसे तो मातृ दिवस एवं नर्सों के नाम रहता है लेकिन यह भी सत्य है कि मजदूरों के लिए भी यह महीना काफी महत्वपूर्ण होता है। मजदूरों के हक की लड़ाई मई में ही शुरू हुई थी और इसी माह मजदूरों को 8 घंटे काम करने के लिए निर्धारित किए गए थे। मजदूरों के लिए जो लड़ाइयाँ लड़ी गई थीं या वर्तमान में लड़ी जा रही हैं उसका विस्तार पूर्वक इस अंक में हमने वर्णन किया है। बदलते परिवेश में भारत जैसे देश में भी मजदूरों का शोषण(?) किस प्रकार से किया जा रहा है? काम के घंटे अधिक और पगार कम, साथ में जिल्लत की जिंदगी जी रहे हैं। केवल मजदूर दिवस के नाम पर

दिखावे में एक जुट्टा दिखाई जाती है। छोटी उम्र के बच्चे पैसे के लिए होटलों में चाय की दुकानों में नौकरी करते दिख जाते हैं। सब की नजर उन पर जाती है लेकिन सब चुप रह जाते हैं। गुड वर्क के समय इन्हे पकड़ा जाता है। इन सब के बारे में भी इस अंक में पढ़ने को मिलेगा।

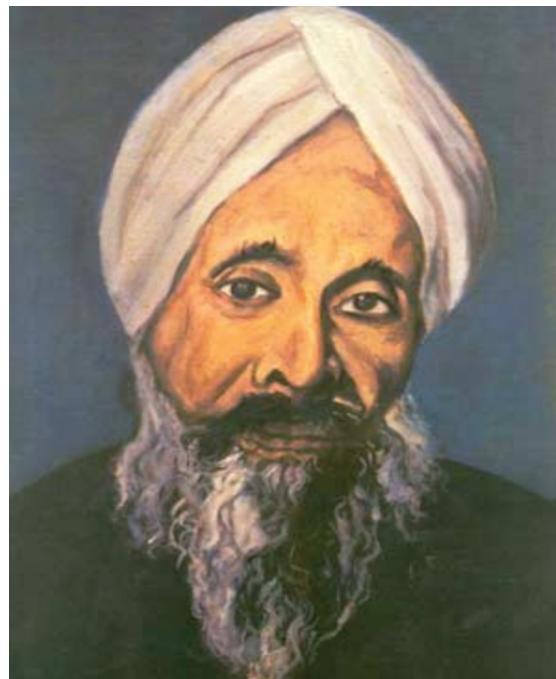
लव जिहाद पर बनी फिल्म 'द केरल स्टोरी' की चर्चा लाजिमी है। साथ ही सबसे पहले गए गाने की रोचक जानकारी भी हमारे इस अंक में मिलेगी। रूस यूक्रेन का युद्ध इस समय चल रहा है। इसी बीच जी-7

की बैठक जापान में हुई, जिसमें एक अतिथि के रूप में हमारे भारत को बुलाया गया। बुलावे पर देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जापान पहुंचे तो जी-7 के सदस्यों ने हमारे प्रधान मंत्री का जबरदस्त स्वागत किया। जी-7 की बैठक से चीन और पाकिस्तान को कड़े संदेश भेजे गए। इसकी भी जानकारी इस अंक में मिलेगी।

अंत में एक बार पुनः आप सब को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

ब्रजीश कुमार

# फूल और कांटे अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'



हैं जनम लेते जगत में एक ही  
एक ही पौधा उन्हें है पालता।  
रात में उन पर चमकता चांद भी  
एक ही-सी चांदनी है डालता।

मेह उन पर है बरसता एक-सा  
एक-सी उन पर हवाएं हैं वहीं।  
पर सदा ही यह दिखाता है समय  
ढंग उनके एक-से होते नहीं।

छेद कर कांटा किसी की उंगलियां  
फाढ़ देता है किसी का वर वसन।

और प्यारी तितलियों का पर कतर  
भौंर का है वेध देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में  
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।  
निज सुगंधी औं निराले रंग से  
है सदा देता कली दिल की खिला।

खटकता है एक सबकी आंख में  
दूसरा है सोहता सुर सीस पर।  
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे  
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।



# नोटबंदी 2.0 का ऐलान 2000 रुपए का नोट बंद

पीएम मोदी के ऐलान के बाद से ही एटीएम के बाहर लोगों की लाइनें लगनी शुरू हो गई थीं और अगले दिन से तो बैंकों के बाहर लाइनों के साथ-साथ लोगों के बीच मारपीट की घटनाएं होने लगी थीं। किसी के पास 500 और 1000 रुपए के नोटों की भरमार थी तो किसी का पैसा बैंक में था, लेकिन जिसका पैसा बैंक में था, उसे भी बैंक से पैसा निकालने में कई घंटों तक लाइनों में लगा रहना पड़ता था। ये सिलसिला अगले 50 दिन तक जारी रहा था। लोगों को नोट बदलने के लिए 50 दिन दिए गए थे, लेकिन इसका असर काफी महीनों तक देखने को मिला। हालांकि 31 मार्च 2017 तक आरबीआई में भी नोटों को बदलने का सिलसिला चला था।



ब्रजेश कुमार  
संपादक सच की दस्तक



रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 2000 रुपए के नोटों को पूरी तरह से वापस लेने का फैसला लेकर नवंबर 2016 में नोटबंदी के यादों को तारों ताजा कर दिया। नवंबर 2016 में ही नोटबंदी के समय बाजार में ये नोट उतारे गए थे। इन नोटों को आम जनता 23 मई से 30 सितंबर 2023 तक बैंकों की शाखाओं में जाकर या तो बदलवा सकती हैं या फिर अपने खाते में जमा कर सकती है। केंद्रीय बैंक ने कहा है कि उसने 'कलीन नोट पॉलिसी' के तहत 2000 रुपए के नोटों को प्रचलन से बाहर करने का फैसला किया है। हाला की वैधता बनी रहेगी इसका अर्थ यह है कि कोई भी इसके लेनदेन से इनकार नहीं कर सकेगा।

बैंक ग्राहक अपने बैंक खाते में 2000 रुपए के नोटों की कितनी भी राशि जमा कर सकते हैं लेकिन अगर खाता नहीं है तो एक बार में सिर्फ 2000 मूल्य के 20 हजार के नोट ही बदल सकेंगे।

ध्यान देने योग्य बातें हैं कि 8 नवंबर 2016 में रात्रि 8 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के बाद 500 और 1000 रुपए की नोटों को प्रतिबंधित कर दिया गया था।

हालांकि कुछ दिनों तक उन्हें बदलने की सुविधा दी गई थी। 2000 रुपए के नोटों को प्रचलन से बाहर करने की उम्मीद पहले ही थी क्योंकि बहुत ही नियोजित तरीके से इस बारे में आरबीआई कदम उठा रहा था। बैंकों को निर्देश था कि वह काउंटर पर आए दो हजार नोटों को दुबारा प्रचलन में देने से बचें। इसे आरबीआई को लौटा दे। पिछले दिनों भी बैंकों से कहा गया कि वह 2000 के नोट ग्राहकों को ना दें। आरबीआई ने दावा किया है कि प्रचलन में 2000 के नोट पर्याप्त संख्या में हैं।

केंद्रीय बैंक ने कदम ऊंचे मूल्य वाले नोट का इस्तेमाल काला धन जमा करने में किए जाने संबंधी चिंताओं के बीच



उठाया। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 2000 के नए नोट छापना वित्तवर्ष 2018-19 में ही बंद कर दिया था धीरे-धीरे उनका चलन काफी कम हो चुका है।

### क्षेत्रीय कार्यालयों में भी नोट बदलने की सुविधा

केंद्रीय बैंक ने लोगों से बैंक जाकर 2000 के नोट अपने खातों में जमा करने या दूसरे मूल्य के नोटों से बदलने को कहा है। लोग किसी भी बैंक शाखा में जाकर 23 मई से 30 सितंबर तक नोट बदल सकते हैं। आरबीआई ने 19 क्षेत्रीय कार्यालय में भी 2000 के नोट को बदलने की सुविधा दी है।

### 89 प्रतिशत नोट 2017 से पहले जारी किए गए थे

आरबीआई के मुताबिक 2000 रुपए के करीब 89 प्रतिशत नोट मार्च 2017 से पहले ही जारी किए गए थे और उनका 4-5 साल का अनुमानित जीवन काल खत्म होने वाला है।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के मुताबिक ऐसा देखा गया है कि 2000 रुपए के मूल्य के नोटों का इस्तेमाल अब लेन-देन में आमतौर पर इस्तेमाल नहीं हो

रहा है। इसी के साथ ही बैंकों के पास अन्य मूल्यों के नोट भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने से लोगों को नोट देने में कोई समस्या नहीं होगी। आरबीआई ने कहा इसे ध्यान में रखने के साथ आरबीआई की स्वच्छ नोट नीति के अनुरूप 2000 रुपए मूल्य के नोट को चलन से वापस लेने का फैसला किया गया है।

### 2018 में छह लाख करोड़ के 2000 रुपए के नोट मौजूद रहे

मार्च 2018 में 6.73 लाख करोड़ रुपए मूल्य के 2000रुपए के नोट चलन में मौजूद थे। लेकिन मार्च 2023 में इनकी संख्या घटकर 3.62 लाख करोड़ रुपए रह गई। इस तरह चलन में मौजूद कुल नोट का सिर्फ 10.8 प्रतिशत ही 2000 रुपए के नोट रह गए हैं जो मार्च 2018 में 37.8 प्रतिशत थे। लेकिन बीते कुछ समय से 2000 रुपए के नोट न तो बैंक दे रहे थे और नहीं ग्राहकों से बैंक को तक पहुंच रहे थे।

पहले नोटबंदी को लोग अभी भी भुला नहीं पाए हैं जो 8 नवंबर 2016 में हुई थी।

### नोटबंदी के बाद देश में मच गई थी

## अफरतफरी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस ऐलान के बाद पूरे देश में अफरातफरी का माहौल पैदा हो गया। किसी को भी कुछ समझ नहीं आया कि आखिर ये अचानक हुआ कैसे और अब नोटबंदी के बाद करना क्या-क्या है? पीएम मोदी के अलावा नोटबंदी की जानकारी बहुत ही चुनिंदा लोगों को थी, लेकिन जैसे ही इसके बारे में पूरे देश को पता चला तो वो किसी अफरातफरी से कम नहीं था।

2016 में 8 नवंबर रात 8 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे ही देश को संबोधित करने आए तो सभी के दिलों की धड़कनें बहुत तेज थीं, हर कोई अपने-अपने अनुमान के मुताबिक सोच रहा था, लेकिन प्रधानमंत्री ने जैसे 500 और 1000 रुपए के नोट बंद करने का ऐलान किया तो सभी के चेहरे की हवाईयां उड़ गई थीं।

पीएम मोदी ने कहा, 'आज मध्य रात्रि यानि कि 8 नवंबर 2016 की रात्रि 12 बजे से वर्तमान में जारी 500 और 1000 रुपए के करेंसी नोट लीगल टेंडर नहीं रहेंगे, ये मुद्राएं कानूनन अमान्य होंगी।' सबसे पहले तो लोगों को 'लीगल टेंडर' को समझने में ही काफी वक्त लग गया,

पीएम मोदी के ऐलान के बाद से ही एटीएम के बाहर लोगों की लाइनें लगनी शुरू हो गई थीं और अगले दिन से तो बैंकों के बाहर लाइनों के साथ-साथ लोगों के बीच मारपीट की घटनाएं होने लगी थीं। किसी के पास 500 और 1000 रुपए के नोटों की भरमार थी तो किसी का पैसा बैंक में था, लेकिन जिसका पैसा बैंक में था, उसे भी बैंक से पैसा निकालने में कई

घंटों तक लाइनों में लगा रहना पड़ता था। ये सिलसिला अगले 50 दिन तक जारी रहा था। लोगों को नोट बदलने के लिए 50 दिन दिए गए थे, लेकिन इसका असर काफी महीनों तक देखने को मिला। हालांकि 31 मार्च 2017 तक आरबीआई में भी नोटों को बदलने का सिलसिला चला था।

#### 8.9 करोड़ नोट यानी 1.3 प्रतिशत नोट बैंकिंग सिस्टम में नहीं लौटे

8 नवंबर, 2016 को जब नोटबंदी का ऐलान हुआ, उस वक्त 500 रुपये को 1,716.5 करोड़ नोट जबकि 1,000 रुपये के 685.8 करोड़ नोट लोगों के बीच चलन में थे। दोनों का कुल मूल्य 15.44 लाख करोड़ रुपये थी। आरबीआई के मुताबिक, 1,000 रुपये के 8.9 करोड़ नोट यानी 1.3 प्रतिशत नोट बैंकिंग सिस्टम में नहीं लौटे हैं। नोटबंदी को कई साल हो गए हैं, लेकिन इसके फायदे और नुकसान पर आज भी खूब चर्चाएं होती हैं, जहां एक तरफ सरकार इसके फायदे गिनाती हैं तो वहीं विपक्षी पार्टियां नोटबंदी के नुकसान।

तृणमूल कांग्रेस की नेता पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा है कि केंद्र की मोदी सरकार ने '2000 रुपये के नोटों को लेकर एक और सनकी और तुगलकी नोटबंदी का ड्रामा किया है। आम जनता को एक बार फिर भारी प्रताइना का शिकार बनाकर उन पर कड़ा प्रहार किया गया है। ये निरंकुश उपाय इस शासन के मूल रूप से जनविरोधी और क्रोनी पूंजीवादी स्वभाव को छिपाने के लिए हैं। एक निरंकुश सरकार के इस तरह के दुस्साहस को बड़े पैमाने पर लोग

भूलेंगे नहीं।'

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि कुछ लोगों को अपनी गलती देर से समझ आती है। 2000 रुपये के नोट के मामले में भी ऐसा ही हुआ है लेकिन इसकी सजा देश की जनता और अर्थव्यवस्था ने भुगती है। शासन मनमानी से नहीं, समझदारी और ईमानदारी से चलता है।

पूर्व वित्त मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम ने सरकार पर वार किया है। उन्होंने कहा कि नोटबंदी एक बार फिर पूरी तरह से आ गई है।

चिदंबरम ने कहा कि नोटबंदी के कुछ हफ्ते बाद आरबीआई पर दबाव बनाकर 500 का नोट वापस लाया गया। मुझे बिल्कुल आश्चर्य नहीं होगा कि आरबीआई 1000 रुपये का नोट भी वापस चलन में लेकर आ जाए।

## 'भक्ति'



डॉ. इन्दु अग्रवाल  
देहरादून

अब बिना भक्ति मिलता नहीं त्राण है।  
अर्चना के बिना भक्ति निष्ठाण है।।

ज्ञान का दीप उर में जलाते चलो,  
कमलिनी निज हृदय में खिलाते चलो,  
बिन लगन के असंभव परित्राण है।।  
अर्चना के बिना भक्ति निष्ठाण है।।

हँस रही हर कली खार के बीच में,  
फैलती है महक प्यार के बीच में,  
आज होना सखी विश्व कल्याण है।।  
अर्चना के बिना भक्ति निष्ठाण है।।

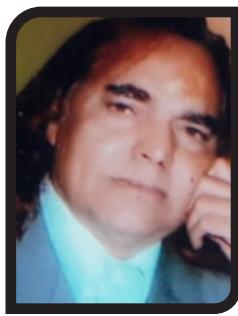
प्रेम-गंगा बहे झूब जाऊँ पिया,  
राम के संग चल दूँ बनूँ मैं सिया,  
'आचमन से हुआ शुद्ध मन प्राण है।।  
अर्चना के बिना भक्ति निष्ठाण है।।

साधना आप हो ,कर्म भी आप ही,  
आप ही ईश हो धर्म भी आप ही,  
आपकी चाह की राह निर्वाण है।।  
अर्चना के बिना भक्ति निष्ठाण है।।

# महावीर सिंह

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव ने एक आत्मीयअपील की है कि हम सबको संकल्पित होना होगा ताकि स्वर्णिम महोत्सव तक हमारा देश विश्वगुरु के साथ सर्वमुखी विकसित राष्ट्र भी बन सके। इस संकल्प में कलमकारों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है ताकि वे आजादी के वीर सपूतों की गाथा को जन-जन तक पहुंचा कर स्मृति पटल पर जागरूक करते रहे। उल्लेखनीय है कि पिछले कई महीनों से चंदौली जनपद (वाराणसी) के दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय) के निवासी वरिष्ठ नागरिक - स्तंभकार कृष्णकांत श्रीवास्तव जी की कलम इस विषय पर निरंतर चल रही है। प्रस्तुत है इस अंक में एसे क्रांतिकारी की वीरगाथा जिसे इतिहास ने भुला दिया.....

## संपादक



कृष्णकांत श्रीवास्तव  
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी



बैरक की तलाशी में महावीर सिंह के कपड़ों से उनके पिता का एक पत्र मिला जिसमें लिखा था.....

'उस टापू पर सरकार ने देशभर के जगमगाते हीरे चुन - चुनकर जमा किए हैं। मुझे खुशी है कि तुम्हें उन हीरों के बीच रहने का मौक़ा मिल रहा है। उनके बीच रहकर तुम और चमको, मेरा और देश का नाम अधिक रौशन करो, यही मेरा आशीर्वाद है।'

जन्म- 16 सितम्बर 1904 को उत्तर प्रदेश के एटा जिले के शाहपुर टहला नामक एक छोटे से गाँव में।

पिता- उस क्षेत्र के प्रसिद्ध वैद्य कुंवर देवी सिंह।

माता- श्रीमती शारदा देवी।

शिक्षा- गाँव के स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद महावीर सिंह ने हाईस्कूल की परीक्षा गवर्मेंट कालेज एटा से पास की। राष्ट्र-सम्मान के लिए मर-मिटने की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की। बचपन से ही महावीर के मन मे अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत की भावना मौजूद थी। इसका पता उनके बचपन में घटी एक घटना से भी मिलता है.....

जनवरी 1922 में एक दिन कासगंज

के सरकारी अधिकारियों ने अपनी राजभक्ति प्रदर्शित करने के उद्देश्य से एक सभा का आयोजन किया, जिसमें ज़िलाधीश, पुलिस अधिकारी, स्कूलों के इंस्पेक्टर, आस-पास के अमीर लोग आदि जमा हुए। छोटे-छोटे बच्चों को भी जबरदस्ती ले जाकर सभा में बिठाया गया, जिनमें से एक बच्चा महावीर भी थे।

सभा में मौजूद लोग अंग्रेजी हुक्मत की तारीफ में लम्बे-लम्बे भाषण दे रहे थे कि तभी बच्चों के बीच से किसी ने जोर से से नारा लगाया-महात्मा गांधी की जय। बाकी लड़कों ने भी ऊँचे स्वर से इसका समर्थन किया। पूरा वातावरण इस नारे की आवाज से गूँज उठा। देखते-देखते गांधी विरोधियों की वह सभा गांधी की जय-जयकार के नारों से गूँज उठी। वहाँ उपस्थित ब्रिटिश अधिकारी तिलमिला उठे और एक जांच समिति बैठा दी। जांच के फलस्वरूप महावीर को विद्रोही बालकों का नेता घोषित कर सजा दी गयी। इस घटना ने महावीर के मन में बगावत की भावना को और प्रबल कर दिया।

### क्रांतिकारियों से संपर्क-

महावीर सिंह वर्ष 1925 में उच्च शिक्षा के लिए डी.ए.वी. कालेज, कानपुर गए। वहाँ उनका संपर्क चन्द्रशेखर आज़ाद से हुआ और उनसे अत्यंत प्रभावित होकर महावीर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोशिएसन' के सक्रिय सदस्य बन गए। इसी से उनका परिचय भगतसिंह से हुआ और जल्द ही महावीर भगतसिंह के प्रिय साथी बन गए। महावीर ने अपने आप को मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए चल रहे यज्ञ में समिधा बना देने का दृढ़ संकल्प ले लिया।

उसी दौरान महावीर के पिता कुँवर देवी सिंह ने उनकी शादी तय करने के बारे में एक पत्र उनके पास भेजा जिसे पाकर वो चिंतित हो गए। उन्होंने अपने पिताजी को राष्ट्र की आजादी के लिए क्रांतिकारी संघर्ष पर चलने की सूचना दी और शादी-ब्याह के पारिवारिक रिश्तों से मुक्ति देने का आग्रह किया।

कुछ दिनों बाद पिता का उत्तर आया जिसमें लिखा था.....

'मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि तुमने अपना जीवन देश के काम में लगाने का निश्चय किया है। मैं तो समझता था कि हमारे वंश में पूर्वजों का रक्त अब रहा ही नहीं और हमने दिल से परतंत्रता स्वीकार कर ली है, पर आज तुम्हारा पत्र पाकर मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझ रहा हूँ। शादी की बात जहाँ चल रही है, उन्हें यथायोग्य उत्तर भेज दिया है। तुम पूर्णतः निश्चिन्त रहो, मैं कभी भी ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जो देशसेवा के तुम्हारे मार्ग में बाधक बने। देश की सेवा का जो मार्ग तुमने चुना है वह बड़ी तपस्या का और बड़ा कठिन मार्ग है लेकिन जब तुम उस पर चल ही पड़े हो तो कभी पीछे न मुँहना, साथियों को धोखा मत देना और अपने इस बूढ़े पिता के नाम का ख्याल रखना। तुम जहाँ भी रहोगे, मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है तुम्हारा पिता..... देवी सिंह।'

### क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय भूमिका-

महावीर सिंह ने स्वयं को क्रांतिकारी गतिविधियों में पूर्णतः समर्पित कर दिया और दल के मुख्य सदस्य के रूप में कई अभियानों में सक्रिय भूमिका

निभाई।

लाहौर में जब पंजाब बैंक पर छापा मारने की योजना बनी, तो महावीर सिंह को कार द्वारा साथियों को बैंक से सही - सलामत निकाल कर लाने की जिम्मेदारी मिली लेकिन भरोसे लायक कार न मिलने तक के लिए योजना स्थगित कर दी गयी।

लाहौर में जब साइमन कमीशन के विरुद्ध लाला लाजपतराय के नेतृत्व में तूफान उठा खड़ा हुआ। एक प्रदर्शन के दौरान अंग्रेजों ने लालाजी पर लाठियों के अंधाधुंध प्रहार कर उनका प्राणान्त कर दिया। यह घटना राष्ट्र के पौरुष के लिए चुनौती बन गई। क्रान्तिकारियों ने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार किया और लालाजी पर लाठियाँ बरसाने वाले पुलिस अधिकारी सांडर्स को मारने का निश्चय किया गया। इस योजना को कार्यान्वित करने में भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद तथा राजगुरु के साथ महावीर सिंह का भी काफी योगदान था। भगत सिंह और राजगुरु को घटनास्थल से कार द्वारा महावीर सिंह ही भगा ले गए थे।

### लाहौर का पानी महावीर

के स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं था, वे अस्वस्थ रहने लगे। इसलिए सुखदेव ने उन्हें संयुक्त प्रांत (आज के उत्तरप्रदेश) वापस जाने की सलाह दी। लाहौर से कानपुर आकर चार दिन बाद वे इलाज के लिए अपने गाँव पिता जी के पास चले गये। चूँकि पुलिस का डर था इसलिए महावीर रोज जगह बदलकर पिताजी से इलाज करवाने में लग गये ताकि जल्द से जल्द स्वस्थ होकर फिर से मोर्चे पर वापस जा सकें।

वर्ष 1929 में दिल्ली असेम्बली भवन

में भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त द्वारा बम फैंके जाने के बाद लोगों की गिरफतारियाँ शुरू हो गयीं। अधिकाँश क्रांतिकारियों को पकड़ कर मुकदमा चलाने के लिए उन्हें लाहौर पहुंचा दिया गया। महावीर सिंह भी पकड़े गये।

### जेल में आमरण अनशन-

लाहौर जेल में बंद क्रान्तिकारियों ने अपने ऊपर किये जाने वाले अन्याय के विरुद्ध 13 जुलाई 1929 से आमरण अनशन शुरू कर दिया। दस दिनों तक तो जेल अधिकारियों ने कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनका अनुमान था कि ये नयी उम्र के लड़के अधिक दिनों तक बिना खायेपिये नहीं रह सकेंगे। लेकिन जब दस दिन हो गये और एक-एक करके ये लोग बिस्तर पकड़ने लगे तो उन्हें चिंता हुई। सरकार ने। अनशनकारियों की देखभाल के लिए डाक्टरों का एक बोर्ड बना। अनशन के ग्यारहवे दिन से बोर्ड के डाक्टरों ने बलपूर्वक दूध पिलाना आरम्भ कर दिया। इससे बचने के लिए महावीर सिंह कुश्ती भी करते और गले से भी लड़ते। जेल अधिकारी को पहलवानों के साथ अपनी कोठरी की तरफ आते देख वे जंगला रोकर कर खड़े हो जाते। एक तरफ आठ दस पहलवान और दूसरी तरफ अनशन के कारण कमजौर पड़ चुके महावीर सिंह। पांच दस मिनट की धक्का-मुक्की के बाद दरवाजा खुलता तो काबू करने की कुश्ती आरम्भ हो जाती। 63 दिनों के अनशन में एक दिन भी ऐसा नहीं गया जिस दिन महावीर सिंह को काबू करने में आधे घंटे से कम समय लगा हो।

लाहौर षड्यंत्र केस के अभियुक्तों

की अदालती सुनवाई के दौरान महावीर सिंह तथा उनके चार अन्य साथियों कुंदन लाल, बटुकेश्वर दत्त, गयाप्रसाद और जितेन्द्रनाथ सान्याल ने एक बयान में कहा कि.....

'वे अंग्रेजों की इस अदालत से किसी प्रकार के न्याय की आशा नहीं करते।' यह कहकर उन्होंने इस अदालत को मान्यता देने और उसकी कार्यवाही में भाग लेने से इनकार कर दिया। महावीर सिंह तथा उनके साथियों का यह बयान लाहौर षड्यंत्र केस के अभियुक्तों की उस समय की राजनैतिक एवं सैद्धांतिक समझ पर अच्छा प्रकाश डालता है और इस बात को स्पष्ट करता है कि आजादी के ये मतवाले कोई भटके हुए नौजवान नहीं थे बल्कि एक विचारधारा से प्रेरित जागरूक युवा थे। महावीर सिंह के इस बयान में कहा गया कि.....

'हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि साम्राज्यवाद लूटने-खसोटने के उद्देश्य से संगठित किए गये एक विस्तृत षड्यंत्र को छोड़कर और कुछ नहीं है। साम्राज्यवादी अपने लूट-खसोट के मंसूबों को आगे बढ़ाने की गरज से केवल अपनी अदालतों द्वारा ही राजनीतिक हत्यायें नहीं करते बल्कि युद्ध के रूप में कल्लेआम, विनाश तथा अन्य क्रितने ही वीभत्स एवं भयानक कार्यों का संगठन करते हैं। हर मनुष्य को अपनी मेहनत का फल पाने का पूरा अधिकार है और हर राष्ट्र अपने साधनों का पूरा मालिक है। हम एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते हैं, जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण असम्भव हो जाए और हर व्यक्ति को हर क्षेत्र में पूरी आजादी हासिल हो जाए। क्रांतिकारी तो कुश्ती के बाद दस -बारह व्यक्तियों ने

शान्ति के उपासक हैं, सच्ची और टिकने वाली शान्ति के, जिसका आधार न्याय तथा समानता पर है, न की कायरता पर आधारित तथा संगीनों की नोक पर बचाकर रखी जाने वाली शान्ति के।'

### काला पानी की सजा- समुद्र में समाधि

लाहौर षड्यंत्र केस के फैसले में सप्राट के विरुद्ध युद्ध और सांडर्स की हत्या में सहायता करने के अभियोग में महावीर सिंह को उनके सात अन्य साथियों के साथ आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। सजा के बाद कुछ दिनों तक पंजाब की जेलों में रखकर बाकी लोगों को (भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव और किशोरी लाल के अतिरिक्त) मद्रासा प्रांत की विभिन्न जेलों में भेज दिया गया। महावीर सिंह और गयाप्रसाद को बेलोरी (कर्नाटक) सेंट्रल जेल ले जाया गया। बाद में उन्हें जनवरी 1933 में उनके कुछ साथियों के साथ अण्डमान (काला पानी) भेज दिया गया जहाँ इंसान को जानवर से भी बदतर हालत में रखा जाता था।

राजनैतिक कैदियों के साथ समानजनक व्यवहार, अच्छा खाना, पढ़ने-लिखने की सुविधायें, रात में रौशनी आदि मांगों को लेकर सभी राजनैतिक बंदियों ने 12 मई 1933 से जेल प्रशासन के विरुद्ध अनशन आरम्भ कर दिया। इससे पूर्व इतने अधिक बन्दियों ने एक साथ इतने दिनों तक कहीं भी अनशन नहीं किया था। अनशन के छठे दिन से ही अधिकारियों ने इसे कुचलने के लिए बलपूर्वक दूध पिलाने का कार्यक्रम आरम्भ कर दिया। वो 17 मई 1933 की शाम थी, जब आधे घण्टे की कुश्ती के बाद दस -बारह व्यक्तियों ने

मिलकर महावीर सिंह को जमीन पर पटक दिया और डॉक्टर ने एक घुटना उनके सीने पर रखकर नली नाक के अन्दर डाल दी। उसने यह देखने की परवाह भी नहीं की कि नली पेट में न जाकर महावीर सिंह के फेफड़ों में चली गयी है। अपना फर्ज पूरा करने की धुन में उस अंग्रेज डॉक्टर ने पूरा एक किलो दूध महावीर के फेफड़ों में भर दिया और उन्हें मछली की तरह छटपटाता हुआ छोड़कर अपने दल के साथ दूसरे बन्दी को दूध पिलाने चला गया। महावीर सिंह की तबियत तुरंत बिगड़ने लगी। कैदियों का शोर सुनकर डॉक्टर उन्हें देखने वापस आया लेकिन उस समय तक उनकी हालत बिगड़ चुकी थी। उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहाँ रात के लगभग बारह बजे आजीवन लड़ते रहने का व्रत लेकर चलने वाला ये अथक क्रांतिकारी देश की माटी में लिलीन हो गया। अधिकारियों ने चोरी-चोरी उनके शव को समुद्र के हवाले कर दिया।

बैरक की तलाशी में महावीर सिंह के कपड़ों से उनके पिता का एक पत्र मिला जिसमें लिखा था.....

‘उस टापू पर सरकार ने देशभर के जगमगाते हीरे चुन-चुनकर जमा किए हैं। मुझे खुशी है कि तुम्हें उन हीरों के बीच रहने का मौका मिल रहा है। उनके बीच रहकर तुम और चमको, मेरा और देश का नाम अधिक रौशन करो, यही मेरा आशीर्वाद है।’

आज आजादी की जिस हवा में हम सांस ले रहे हैं उस हवा की आजाद, सुगंधित, मीठी बयार बहाने में महावीर सिंह जैसे कितने क्रान्तिकारियों ने अपना

रक्त और माँस गला दिया।

महावीर सिंह के पैतृक गाँव शाहपुर ठहला में स्थित चिकित्सालय का नाम महावीर सिंह मेमोरियल गवर्नर्मेंट हास्पिटल है। गाँव में शहीद महावीर सिंह

स्मारक भी है। राजा का रामपुर में अमर शहीद महावीर सिंह स्मारक बालिका विद्यालय है। एटा मुख्यालय में महावीर पार्क की स्थापना की गयी है। ■ ■

## घर तो उसे कहते हैं



मैं उन्मुक्त आकाश में  
चिड़िया की तरह उड़ना चाहती हूँ  
माना कि उन्मुक्त आकाश भी भयमुक्त  
नहीं

वहाँ भी हिंसक पक्षी  
उड़ती चिड़िया पर प्रहार करते रहते हैं  
पर घर भी कहाँ सुरक्षित है  
वहाँ भी तो बिल्ली कुते  
घात लगाए रहते हैं  
पर न उड़ूँ तो  
उन पंखों की क्या सार्थकता  
जो कुदरत ने हमें दे रखे हैं  
सच पूछो तो  
घर तो उसे कहते हैं  
जो हर तरह से सुरक्षित हो  
अन्यथा क्या अंतर है  
घर और जेल में  
दोनों तो ईंट - पत्थर से ही बनाए जाते हैं

## जिस दिन उस घर में

यह जरूरी नहीं  
कि जिस घर को बनाने में  
हमने अपनी पूरी जिंदगी खपा दी हो  
हमें वहाँ अपनी चारपाई  
बिछाने भर की भी जगह मिले  
ऐसा भी होता है  
जिस घर को बनाने में  
हमारा किसी तरह का  
योगदान न रहा हो  
आइ वक्त में  
वहाँ सिर छिपाने की  
भरपूर जगह मिल जाए  
इसलिए कहता हूँ मित्रो!  
जिंदगी के लंबे सफर में  
जरूर कौशिश करें  
कहीं न कहीं घर बनाने की  
ऐसा संभव न हो तो  
बनते हुए किसी घर में  
अपने हाथ से दो - चार ईंट जरूर पकड़ाएँ  
भले आइ वक्त में  
कभी सिर छिपाने को वहाँ जगह न मिले  
पर जिस दिन उस घर में  
कोई हारा थका  
क्षण भर के लिए भी  
जगह पा जाए  
तो समझ लेना  
हमारा प्रयास निष्फल नहीं गया  
सच पूछें तो  
पूर्वजों की इसी सोच ने  
हमें यहाँ तक पहुँचाया है

# कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस की जीत के मायने

कर्नाटक की चुनाव परिणाम कांग्रेस के पक्ष में आने से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रयास को काफी बल मिलेगा। 2024 में यदि सभी विपक्षी पार्टियां एक मंच पर आ जाती हैं तो निश्चित तौर पर भारतीय जनता पार्टी को कड़ा मुकाबला मिल सकता है लेकिन इसकी संभावना कम ही दिखाई पड़ती है। क्योंकि सभी क्षेत्रीय पार्टियां कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करने के लिए अभी भी तैयार नहीं हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से ऐसे तो बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विपक्षी एकता के लिए मुलाकात की थी लेकिन दिल्ली में उनकी तकरार क्योंकि कांग्रेस से भी है ऐसे में आम आदमी पार्टी का कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करना न के बराबर ही है।



आकांक्षा सक्सेना  
न्यूज एडीटर सच की दस्तक



कर्नाटक के चुनाव के बाद जो चुनाव परिणाम आए उससे कांग्रेस को जहां लोकसभा चुनाव के पूर्व संजीवनी मिल गई वही भाजपा को सबक मिल गया की हर चुनाव केंद्र सरकार के नेताओं पर आश्रित होकर नहीं लड़े जा सकते। बजरंग बली तभी मदद करते हैं जब मंदिर के स्थानीय पुजारी के भक्ति में दम होता है। यहां स्थानीय पुजारी का मतलब स्थानीय नेता जिसके चेहरे पर जनता वोट करे जो भाजपा के पास था नहीं। जो मुख्यमंत्री थे उन्हे भी खुली छूट नहीं दिया गया था। ऐसे में केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर कैसे चुनाव जीतती। ये सही है की मोदी के आने से कांग्रेस का जो प्रभाव और पड़ता वह कम हुआ। पी एफ आई पर छूट और बजरंग दल पर प्रतिबंध के मुद्दे को भी भाजपा कैसे नहीं करा पाई।

पिछले दिनों आये कर्नाटक के चुनाव परिणाम में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला। वहीं सत्तारूढ़ भाजपा बुरी तरह से इस चुनाव में कांग्रेस के हाथों से पराजित हुई। लोकसभा चुनाव 2024 के फरवरी में

होने हैं ऐसे में कर्नाटक का चुनाव परिणाम निश्चित तौर पर कांग्रेस को बल देगा। साथ में विपक्षी एकता का नेतृत्व करने के लिए भी प्रेरित करेगा। विपक्षी पार्टियां भी कर्नाटक के चुनाव परिणाम के बाद कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करने में लग गई हैं। यहां तक की कांग्रेस की धूर विरोधी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी यह कहना शुरू कर दिया है कि उन्हें कांग्रेस के नेतृत्व से कोई गिला शिकवा नहीं है लेकिन कांग्रेस

क्षेत्रीय पार्टियों को कम न आंके। सुश्री ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि लगभग 200 सीटों पर कांग्रेस का प्रभुत्व काफी अधिक है। वहां वो अपने तरीके चुनाव लड़े। वहीं कांग्रेस को भी यह सोचना होगा कि जहां उनकी मजबूती नहीं है वह क्षेत्रीय सहयोगी को मदद करें। बिहार के नीतीश कुमार पहले ही विपक्षी एकता के लिए कई पार्टियों से के बड़े नेताओं से मिल चुके हैं। उन्होंने शिवसेना के नेता उथव ठाकरे, एनसीपी के नेता शरद पवार उड़ीसा के मुख्यमंत्री व बीजेपी

के नेता बीजू पटनायक, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्य मंत्री

अखिलेश यादव से मुलाकात कर विपक्ष को एक मंच पर लाने के प्रयास में लगे हुए हैं।

कर्नाटक की चुनाव परिणाम कांग्रेस के पक्ष में आने से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रयास को काफी बल मिलेगा। 2024 में यदि सभी विपक्षी पार्टियां एक मंच पर आ जाती हैं तो निश्चित तौर पर भारतीय जनता पार्टी को कड़ा मुकाबला मिल सकता है लेकिन इसकी संभावना कम ही दिखाई पड़ती है। क्योंकि सभी क्षेत्रीय पार्टियां कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करने के लिए अभी भी तैयार नहीं हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से ऐसे तो बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विपक्षी एकता के लिए मुलाकात की थी लेकिन दिल्ली में उनकी तकरार क्योंकि कांग्रेस से भी है ऐसे में आम आदमी पार्टी का कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करना न के बराबर ही है। चाहे जो भी हो लेकिन चुनाव परिणाम ने कांग्रेस को एक नई मजबूती दे ही दी है वहीं दूसरी तरफ भाजपा को भी सीधासीधा संदेश दिया है।

कर्नाटक के चुनाव से यह भाजपा को समझ में आ गया ही है अब धर्म के आधार पर ही वोट नहीं मिलते। आधुनिक भारत का मतदाता काम भी देखता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि कर्नाटका में विकास के मामले में सारी बीजेपी सरकारें फिसड़ी साबित हुईं। उनका कोई विजन नहीं रहा। वे केंद्र के अलावा विधानसभा चुनाव भी प्रधानमंत्री के नाम पर जीतने की इच्छा रखती रही। यह

सोच की विकलांगता है और लोकतंत्र की समझ नहीं होने का सुबूत है।

### बीजेपी सामाजिक समीकरण साधने की रणनीति भी फेल

बीजेपी सामाजिक समीकरण साधने की रणनीति भी फेल हुई।

बीजेपी ने सामाजिक समीकरण को साधने के लिए लिंगायत के साथ-साथ वोकालिंगा समुदाय और पिछड़ी जातियों के उम्मीदवारों को बड़ी संख्या में टिकट दिया। हालांकि उसका यह फार्मूला भी कारगर नहीं रहा।

चुनाव परिणामों के मुताबिक कांग्रेस ने कर्नाटक चुनाव में स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया है। कांग्रेस 224 सदस्यीय विधानसभा में 136 सीटों पर जीत हासिल कर चुकी है वर्ष 1989 के विधानसभा चुनाव के बाद यह कांग्रेस की सबसे बड़ी जीत होगी।

जबकि पिछले विधानसभा चुनाव में 104 सीटें जीतने वाली बीजेपी ने अभी तक 64 सीटों पर जीत दर्ज की। साल 2013 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी को 40, 2008 में 110, 2004 में 79, 1999 में 44 और 1994 में 40 सीटें मिली थीं।

### कांग्रेस की शानदार जीत की वजहें

दूसरी ओर कांग्रेस की शानदार जीत की वजहें भी एकदम साफ हैं। पहला सबसे बड़ा कारण राष्ट्रीय अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे का कर्नाटकवासी होना है। आज भी उनके नाम की राज्य में प्रतिष्ठा है। उनकी साख ने मतदाताओं के सामने कांग्रेस का कबड्डि संस्करण प्रस्तुत किया। वैसे तो जेडीएस के रूप में भी एक

स्थानीय कबड्डि संस्करण मतदाता के सामने था, लेकिन काम के मामले में उसकी वह साख नहीं थी। लोग उस क्षेत्रीय पार्टी से ऊबे हुए थे।

कबड्डि मतदाता के सामने स्थानीय और राष्ट्रीय मसले दोनों ही थे। स्थानीय मुद्दों पर वह जेडीएस पर भरोसा नहीं कर रहा था और राष्ट्रीय मसलों पर बीजेपी नाकाम रही थी। ले देकर कांग्रेस ही बचती थी। खड़गे के घेरे को डीके शिवकुमार तथा सिद्धारमैया की जोड़ी ने मजबूती प्रदान की। लेकिन ये बात भी बिल्कुल सत्य है। इसके आलावा

कर्नाटक में एक बार फिर मुफ्त की चीजों के बादे का असर दिखा है। कांग्रेस की जीत में 200 यूनिट बिजली मुफ्त, सस्ते सिलेंडर जैसे मुद्दे अहम दिखे। पुरानी पेंशन योजना को भी वापस लाने का गादा था। बीजेपी हाल के दिनों में इन मुद्दों को काउंटर नहीं कर सकी है। महंगाई, बेरोजगारी, करण्शन इस बार चुनाव के केंद्रीय मुद्दे रहे।

2024 आम चुनाव से पहले सभी दलों के लिए संदेश है कि अब मुद्दों की सियासी पिच बदल रही है। इसमें लोग बादों और डिलिवरी को नजदीक से परखेंगे। ऐसे में कांग्रेस पर भी बादे पूरे करने का दबाव बढ़ेगा।

ऐसे आने वाले दिनों में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान में चुनाव होने हैं। आने वाले दिनों में क्या कांग्रेस कर्नाटक की जीत की तरह इन राज्यों में जीत दिला पाएगी? यह तो आने वाला समय ही बताएगा।



# जलवायु परिवर्तन: असामान्य घटनाओं की आशंका

पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में यह परिवर्तन संख्या की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा असर हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के होने के कागर पर तापमान में वृद्धि होने से हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा, परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं और कुछ द्वीपों के झूबने का खतरा भी बढ़ गया है।



कई देशों की अर्थव्यवस्थाएं तबाह होने के कागर पर

अंटार्कटिका में पिछले 25 वर्षों में तीन हजार अरब बर्फ पिघली

कभी तेज धूप, तो कभी तेज चक्रवाती तूफान तो कभी बर्फली चादर तन जा रही है। मौसम का हाल पल में तोला, पल में माशा वाली हो रही है। यहीं हाल रहा तो वर्ष 2100 तक भारत समेत अमेरिका, कनाडा, जापान, न्यूजीलैंड, रूस और ब्रिटेन जैसे सभी देशों की अर्थव्यवस्थाएं जलवायु परिवर्तन के असर से अछूती नहीं रहेंगी। आने वाले वर्षों में पृथ्वी पर कुछ असामान्य घटित होने की आशंका बढ़ती जा रही है। कुछ समय पूर्व कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की एक शोध टीम ने 174 देशों के वर्ष 1960 के बाद जलवायु संबंधी ऑकड़ों का अध्ययन किया है। अध्ययन के अनुसार, पृथ्वी पर 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान की स्थिति में विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के

साथ-साथ मानव के अस्तित्व पर भी खतरा उत्पन्न हो जाएगा। इसके अतिरिक्त पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में भी लगभग आठ इंच की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वहीं संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय (UN Office for Disaster Risk Reduction-UNDRR) अनुसार, भारत को जलवायु परिवर्तन के कारण हुई प्राकृतिक आपदाओं से वर्ष 1998-2017 के बीच की समयावधि के दौरान लगभग आठ हजार करोड़ डॉलर की आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा है। यदि पूरी दुनिया की बात की जाए तो इसी समयावधि में तकरीबन तीन लाख करोड़ डॉलर की क्षति हुई है। हाल ही में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमर्क के तत्वावधान में आयोजित COP 25 समेलन में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिये विभिन्न दिशा-निर्देश जारी किये गए।



पवन तिवारी  
वरिष्ठ पत्रकार



जलवायु परिवर्तन होने के कारण पृथ्वी पर कई तरह की समस्याओं का जन्म होना लाजिमी है। ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्र में गंदे पेट्रोलियम पदार्थों का जमावड़ा, फैक्ट्रियों से निकले कचरे, ऊर्जा संयंत्रों से होने वाले प्रदूषण, मल जल प्रदूषण, पृथ्वी से वन्यजीवों का विलुप्तिकरण जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण हैं।

जलवायु परिवर्तन को समझने से पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि जलवायु क्या होता है? सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिये गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है।

अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन (Climate Change) कहते हैं।

जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं संपूर्ण विश्व में भी। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें तो यह इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व में देखने को

मिल रहा है।

पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में यह परिवर्तन संख्या की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा असर हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने से हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा, परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं और कुछ द्वीपों के झूबने का खतरा भी बढ़ गया है।

अंटार्कटिका में बर्फ चिंताजनक दर से पिघल रही है। पश्चिम अंटार्कटिका में पिछले 25 वर्षों में तेजी से करीब 3000 अरब टन से अधिक बर्फ पिघली है। पश्चिमी छोर में बर्फ की यह चादर

जलवायु परिवर्तन की मुख्य संकेतक है। एक अध्ययन के मुताबिक, वैज्ञानिकों ने तेजी से बदलते अंटार्कटिक क्षेत्र और पश्चिम अंटार्कटिका में स्थित अमुंडसेन सागर एंबेमेट से किसकी मात्रा का पता लगाया है। ब्रिटेन के शीर्ष विश्वविद्यालय के अध्ययन से पता चलता है कि पश्चिम अंटार्कटिका में 1996 और 2021 के बीच करीब 3331 अरब टन बर्फ पिघलने के कारण वैश्विक समुद्र में इसका स्तर नौ मिलीलीटर अधिक बढ़ गया है। प्रमुख शोधकर्ता बैंजामिन डेविसन ने कहा, हमें इस पर और अधिक शोध करने की आवश्यकता है मुझे लगता है कि हमें चिंतित होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें हताश होना चाहिए। हमारी उम्मीदों से अधिक तेजी से चीजें हो रही हैं। पश्चिम अंटार्कटिका का वह हिस्सा ढहने की स्थिति में है। इसी हिस्से में सबसे ज्यादा बर्फ पिघली है। आईपीसीसी रिपोर्ट के भारतीय सह लेखक, दीपक दास गुप्ता और अदिति ने कहा कि समुद्र का बढ़ता जलस्तर भारतीय उपमहाद्वीप के लिए चिंता का सबब है, क्योंकि यह तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लाखों लोगों की पारिस्थितिकी को प्रभावित करेगा।

**जैसा होगा जल प्रबंधन , वैसी होगी मानवता**

विश्व निकाय के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने बीते दिनों वैश्विक जल संसाधनों पर तीन दिवसीय संगोष्ठी के अंतिम दिन कहा था कि मानवता का अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि लोग जल का प्रबंध कैसे करते हैं। इस सम्मेलन में विकासशील देशों ने स्वच्छ

पेयजल और बेहतर स्वच्छता का आहान किया था। गुटेरेस ने कहा कि भविष्य के लिए मानवता की सभी उम्मीदें किसी न किसी रूप में जल के सतत प्रबंधन और संरक्षण के लिए एक नई रूपरेखा तैयार करने पर निर्भर करती है। इसमें कृषि के लिए जल के तर्कसंगत उपयोग और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ अधिक आक्रामक कार्रवाई करना शामिल है। उन्होंने जल के वैश्विक राजनीतिक एजेंडे के केंद्र में होने पर बल दिया। संयुक्त राष्ट्र विश्व जल विकास रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 26 फ़ीसदी आबादी (दोअरब लोग) के पास स्वच्छ पेयजल नहीं है और 46 फ़ीसदी आबादी (3.6 अरब लोग) मूलभूत स्वच्छता के अभाव में जी रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के अध्ययन से यह पता चला कि दुनिया की लगभग आधी आबादी 2020 तक गंभीर जलसंकट का सामना करेगी।

#### घट सकता है हिमालयी नदियों में जल प्रवाह

विश्व निकाय प्रमुख एंटोनियो गुटेरेस ने चेतावनी दी है कि भारत के लिए बेहद अहम समझी जाने वाली सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख हिमालयी नदियों के प्रवाह में कमी देखी जा सकती है। उन्होंने बताया है कि ग्लोबल वर्मिंग के कारण आने वाले दशकों में ग्लेशियर और बर्फ की चादरें कम हो जाएंगी। दुनिया के 10 फ़ीसदी हिस्से में हिमनद हैं जो विश्व के लिए एक बड़ा जल स्रोत भी हैं। 'इंटरनेशनल ईयर आफ ग्लेशियर रिजर्वेशन' पर आयोजित एक कार्यक्रम में गुटेरेस ने पृथ्वी पर जीवन के लिए हिमनदों को जरूरी बताते हुए चिंता



जताई कि मानव गतिविधियां ग्रह के दिखेगा और उनका जल प्रवाह कम होता तापमान को खतरनाक नए स्तरों तक ले जाएगा। उन्होंने पाकिस्तान का उदाहरण जा रही हैं और पिघलते हुए हिमनद बेहद देते हुए बताया कि कि दुनिया पहले देख खतरनाक हैं। बताया कि जैसे-जैसे आने चुकी हैं कि कैसे हिमालय पर बर्फ के गाले दशकों में हिमनद और बर्फ की चादरें पिघलने से पाकिस्तान में बाढ़ की स्थिति घटेंगी वैसे वैसे सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र बिगड़ गई थी। ■ ■  
जैसी प्रमुख नदियों में इसका प्रभाव

कुछ लोगों का घर अग्निकुंड होता है  
अपना हो या किराए का  
वे पौ फटने से पहले ही निकल जाते हैं घर से  
घर आने से पहले इंतजार करते हैं सुनसान गलियों का  
अपने ही घर में घुसते हैं चोर की तरह  
हल्की-सी आवाज उन्हें अंदर से हिला देती है  
अति संवेदना उन्हें जलाती है गीली लकड़ी की तरह  
क्रोध आने पर स्वयं सूखी लकड़ी की तरह जल जाते हैं  
सर्दी, गर्मी, बरसात से बचने के लिए वे आते हैं घर  
पर मन का अंतर्द्वंद्व पूरे शरीर को  
रात भर पक्षाघात में तब्दील कर देता है  
कुछ लोगों का मानना है कि घर  
एक चारदीवारी का नाम है  
चाहे उसकी छत  
फूस की हो या कंकरीट की  
पर ऐसा नहीं  
घर तो मन के रिश्तों से बनता है  
चाहे भीड़ भरा इलाका हो या बियाबान। ■ ■

# घर तो मन के रिश्तों से बनता है

# 'अशोक मिश्र की तीन बाल कविताएं'

(1)

ताला  
मेरे घर का ताला है।  
यह घर का रखवाला है ॥  
हम जब बाहर जाते हैं,  
मौजें खूब मनाते हैं।  
दिनभर लटका रहता है,  
रोज बहुत दुख सहता है।  
चोरों से टकराता है,  
उनको सबक सिखाता है।  
नहीं शिकायत करता है,  
मन में साहस भरता है।  
फिर भी भोला-भाला है।  
मेरे घर का ताला है ॥

(2)

टौमी रास न आता है ....  
दूध जलेबी खाता है,  
गैरों पर गुर्ता है।  
जब मैं उसे पुकारूँ तो ;  
पूछ हिलाता आता है ॥  
मुझे के संग खेले गो ,  
कितने झगड़े झेले गो।  
कोई आफत आये तो ;  
झट अपने सर ले ले गो ॥  
मुनिया का भी प्यारा है ,  
समझे खूब इशारा है।  
जरा आँख दिखलाए तो ;  
करता तुरत किनारा है ॥

करतब खूब दिखाता है ,  
सबका मन बहलाता है ।  
लेकिन प्यारी पूसी को ;  
टॉमी रास न आता है ॥

(3)

गर्मी  
बड़े सवेरे आते हैं ,  
शाम देर से जाते हैं ।  
सूरज दादा गर्मी में ;  
ताव बड़ा दिखलाते हैं ॥  
देर शाम को आती है ,  
सुबह जल्द भग जाती है।  
छुई- मुई सी गर्मी में ;  
रात बहुत शर्माती है ॥  
मन को वह ललचाता है ,  
जल्दी हाथ न आता है ।  
बरफ का गोला गर्मी में ;  
पिघल -पिघल बह जाता है ॥  
हमको बहुत रुलाती है ,  
मनमानी दिखलाती है ।  
बिजली रानी गर्मी में ;  
हरदम आती -जाती है ॥



अशोक कुमार मिश्र



# बेटा! इस साल होली में घर ज़रूर आना

बहुत दिनों के बाद  
गया था घर  
पहले तो साल में  
एक बार चला ही जाता था  
न जाने पर  
साल ऊपर होते ही  
घर से आ जाती थीं  
कई चिट्ठियाँ  
बेटा!  
अब तो आ जाओ  
देखने को बहुत मन करता है  
अब गाँव भी  
पहले जैसे कहाँ रहे  
चौड़ी छवरें  
कटते-कटते पगड़ंडियाँ हो गईं  
घर भी तो  
ढह-ढिलमिला गया  
आखिर कब तक खड़ा रहता  
दीवारें भी तो समय-समय पर  
अपनी लीपा-पोती चाहती हैं



जनार्दन मिश्र

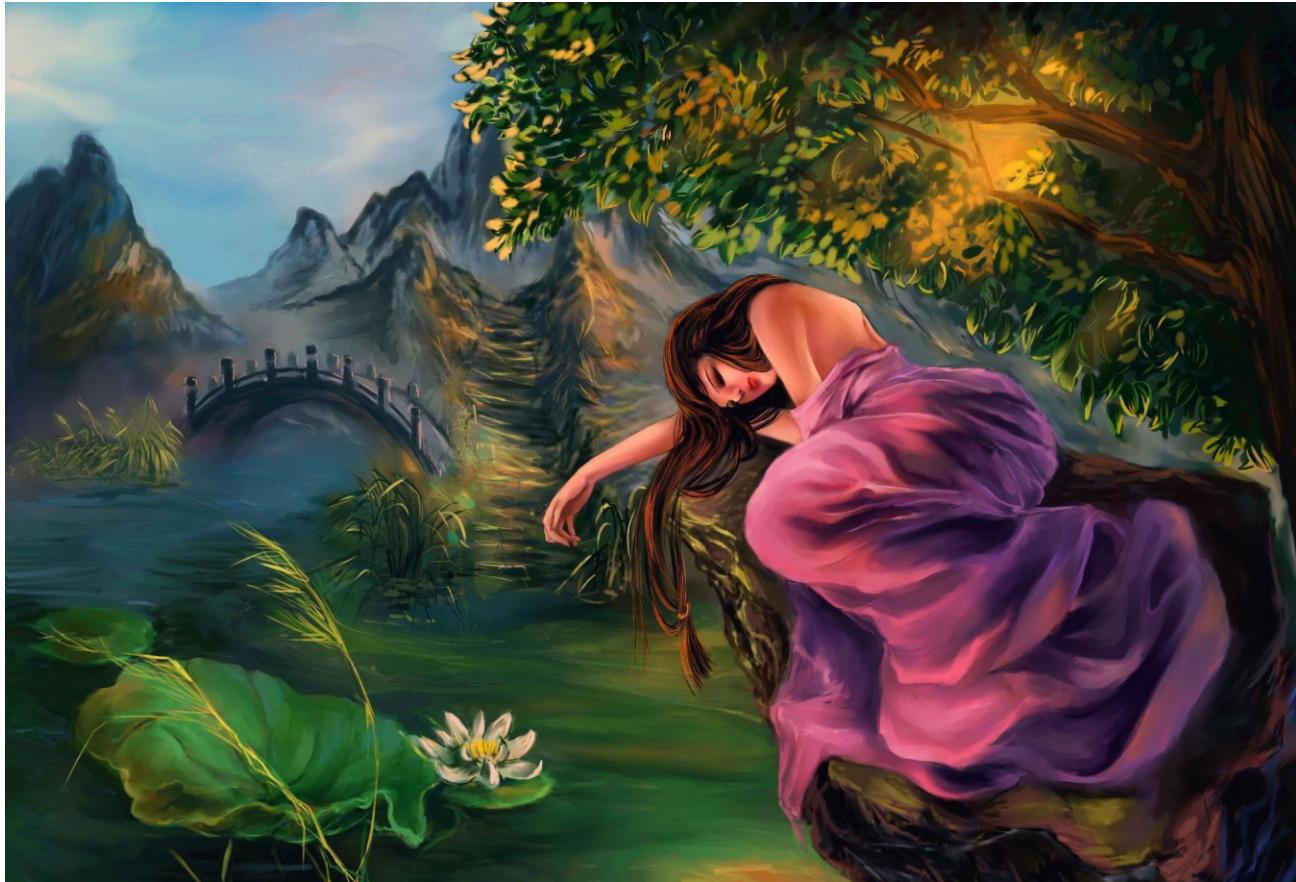
अब वहाँ घर नहीं  
कँटीली झाड़ियाँ उग आईं हैं  
पर जैसे ही वहाँ खड़ा हुआ  
मौन मुद्रा में  
मुकम्मल घर तैयार था  
जैसे पहले होता था  
आँगन में  
तुलसी चौरा के सामने  
वृद्धा माँ  
राम-राम कहते हुए  
रुई की पुनियाँ बना रही हैं  
आखिर सूर्यास्त होते ही  
तुलसी चौरा के पास  
दीया भी तो बारना है  
पिता ओसारे में बैठे हैं  
दूर-दराज नौकरी करने गाले  
पिता के चरण-स्पर्श कर  
आशीष पाकर चले गये हैं  
छोटे-छोटे बच्चे  
आस-पास  
आँख-मिचौली खेल रहे हैं  
हमउम्र  
आपस में बातें कर रहे हैं--  
इस साल बाढ़ ज़रूर आएगी  
चार साल पहले  
इतनी बड़ी बाढ़ आयी थी  
कि पाण्डे का चबूतरा  
पूरा ढूब गया था  
थोड़ी देर भी

वैसे ही पानी बढ़ता  
तो यहाँ तक आ जाता  
रामनगीना चाचा का ओसारा  
पिछली बरसात में गिर गया था  
देखें, इस साल बना पाते हैं कि नहीं  
सुना है उनका हाथ बड़ा तंग है  
सुखराम चाचा का लड़का  
इतना पढ़ने के बावजूद  
गोबर की हील बनकर रह गया  
रामभजन का लड़का  
पढ़ने में कितना कमज़ोर था  
पर बम्बई जाते ही  
दो साल में इतना पैसा भेजा  
कि दोमंजिला पिटा लिए  
सुनते हैं  
अब तो तीसरे की तैयारी चल रही है  
इतने में माँ की आवाज कान में गूँजी  
बेटा!

इस साल होली में घर ज़रूर आना  
ऐसा सुनते ही  
मौन भंग हुआ  
अब सामने  
मुकम्मल मकान नहीं  
कँटीली झाड़ियाँ थीं  
वाक़ई  
जब तक साथ देती हैं स्मृतियाँ  
आदमी  
एकाकी नहीं होता।



# 'ग़ुज़ाल'



ज़ेहन में मेरे कुछ तो कसम साया है,  
याद ने तेरी फिर नींद से जगाया है।

अँधेरे ही अब तो रास आने लगे हैं,  
उजालों ने बहुत अनचाहा दिखाया है।

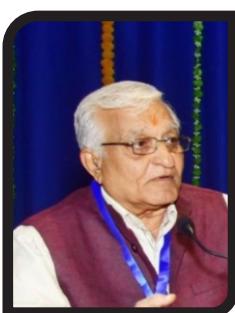
चलो भुला ही देते हैं तेरी याद को,  
इस भरम ने अक्सर भटकाया है।

हसरत थी तुममें आसमान ढूँढ़ने की,  
तुमनें तो हमीं को ज़मीं पर गिराया है।

चाहतें कम न हुईं, कोशिशों के बाद भी,  
चाहतों ने तो मौत को भी भरमाया है।

आगे को बढ़े थे हम, जीत की चाहत में,  
स्वाद खट्टे आमों का तुमने ही चखाया है।

जाने क्यों धुँधला गई है तस्वीर तेरी,  
शायद उस पर किसी और का साया है।



डॉ. प्रमोद शुक्ल  
'शिर्वाचन'



# भारतीय संस्कृति के विरुद्ध समलैंगिक विवाह की मांग

संविधान के अनुच्छेद-14 और 21 का हवाला देते हुए भले ही समलिंगी विवाह की मांग जोर पकड़ रही है, लेकिन समान-सेक्स विवाह पति, पत्नी और बच्चों की भारतीय परिवार इकाई अवधारणा के साथ तुलनीय कदापि नहीं हो सकती हैं। भारत में विवाह को एक परम्परा के तौर पर देखा जाता है। शादी एक ऐसा पवित्र बंधन है। जिसमें न केवल दो प्राणी बल्कि दो परिवार एक दूसरे के सुख दुःख के भागी बनते हैं। विवाह से समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार का आरम्भ होता है। लेकिन समलैंगिक विवाह जैसा कल्चर विवाह के रीति-नीति को ही सवालों के घेरे में लाकर खड़ा कर देगा। देखा जाए तो यह पश्चिमी संस्कृति की ही देन है।



साल 2018 में समलिंगी यौन संबंधों को अपराध के दायरे से बाहर करना एक क्रांतिकारी फैसला था, लेकिन समलैंगिक विवाह पर कानून बनाना इतना आसान नहीं रहने वाला। इस सम्बंध में सरकार और न्यायपालिका का अपना-अपना मत है। एक ओर याचिकाकर्ता इसे विशेष विवाह अधिनियम, विदेश विवाह और हिंदू विवाह अधिनियम के तहत मान्यता देने की मांग कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ सरकार इस मामले को शाहरी एलिट क्लास की मांग बता रहा है। गैलप के अध्ययन की मानें तो अमेरिका में 1 प्रतिशत से कम युवाओं ने साल 2021 में समलैंगिक विवाह किए। ऐसे में यह बात तो तय है कि पश्चिम के देशों में भी समलैंगिक विवाह की दर काफी कम है।

इसी बीच सर्वे के मुताबिक 45 प्रतिशत लोगों ने माना है कि समलैंगिक विवाह सिर्फ एक मनोरोग है। इस हालात

में विवाह जैसी परंपरा को बदलना और स्त्री-पुरुष की इसमें अनिवार्यता को खत्म करना कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति और संस्कार को धत्ता बताना है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होना हूमन नेचर है, लेकिन आधुनिक होने के दंभ में नीति और नियत में ही बदलाव आ जाना गलत है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में विवाह एक महत्वपूर्ण एवं प्राचीन संस्था है। जिसके अभाव में मानव सभ्यता का अस्तित्व संभव नहीं है। वहीं मानवीय इतिहास में विषम लैंगिक विवाह ही आदर्श रहा है। ऐसे में जिस विवाह को एक 'पवित्र बंधन', एक 'संस्कार' माना जाता है और यह रीति-रिवाजों, प्रथाओं, सांस्कृतिक लोकाचार और सामाजिक मूल्यों पर निर्भर हो। फिर उसके साथ छेड़छाड़ उचित नहीं।

भारत युगों-युगों से ऋषि मुनियों की परम्परा से चलने वाला देश रहा है।



सोनम लववंशी  
स्वतंत्र लेखिका एवं पत्रकार

सम्पूर्ण विश्व जहां आधुनिकता की आड़ में प्रकृति विहीन कार्य करने में मशगूल है। वहीं भारत अपनी सनातनी संस्कृति से विश्व को नई राह दिखा रहा है। हमारे वेद पुराण, योग आयुर्वेद, अद्यात्म हमें मर्यादा में रहने के पाठ पढ़ा रहे हैं। हमारी ऋषि संस्था में विवाह परम्परा की व्यवस्था का विधान है। जिसके अंतर्गत विवाह स्त्री-पुरुष के मध्य होता है। उनका धैय्य संतान उत्पत्ति करना, अपनी संस्कृति अपनी प्राचीन परम्पराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करना है।

ऐसे में महज़ चंद लोगों की सोच को कानून में ढालना उचित नहीं है। ये परम्परा हमारी कुटुम्ब परम्परा के आधार को कमज़ोर करेगी। संविधान के अनुच्छेद-14 और 21 का हवाला देते हुए भले ही समलैंगी विवाह की मांग जोर पकड़ रही है, लेकिन समन्-सेक्स विवाह पति, पत्नी और बच्चों की भारतीय परिवार इकाई अवधारणा के साथ तुलनीय कदापि नहीं हो सकती हैं। भारत में विवाह को एक परम्परा के तौर पर देखा



जाता है। शादी एक ऐसा पवित्र बंधन है। जिसमें न केवल दो प्राणी बल्कि दो परिवार एक दूसरे के सुख दुःख के भागी बनते हैं। विवाह से समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार का आरम्भ होता है। लेकिन समलैंगिक विवाह जैसा कल्वर विवाह के रीति-नीति को ही सवालों के घेरे में लाकर खड़ा कर देगा। देखा जाए तो यह पश्चिमी संस्कृति की ही देन है। ताइवान से लेकर अमेरिका तक, न्यायपालिका और विधायिका की तरफ से मिलकर समलैंगिक विवाह को बढ़ावा दे

रही है। यही वजह है कि भारत में भी सेम सेक्स मैरिज की अनुमति को लेकर शोर सुनाई दे रहा है। अबतक दुनिया के 33 देशों में समलैंगिक विवाह को मंजूरी मिल चुकी है। नीदरलैंड दुनिया का पहला देश है जिसने साल 2001 में समलैंगिक विवाह को मान्यता दी। वहीं साल 2022 में चिली, स्विट्जरलैंड और मेक्सिको ने भी इस विवाह की मान्यता दी। एक अनुमान के मुताबिक करीब 70 प्रतिशत अमेरिकन सेम सेक्स मैरिज के सपोर्ट में हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि समलैंगिक विवाह में, पति-पत्नी की अवधारणा को कैसे न्याय की कसौटी पर परखा जाएगा? इस विषय पर भी बात होनी लाजिमी है। हमारे देश में सामाजिक व्यवस्था धर्म आधारित है, जहां शादी के बाद बच्चे को जन्म देने की प्रथा का चलन है। शादी के बाद संपत्ति के अधिकार का मामला भी आता है। ऐसे में समलैंगिक विवाह कई जटिल समस्याओं के साथ भारतीय संस्कृति और संस्कार को प्रभावित करने वाला है। इसीलिए इस मामले में जल्दबाजी ठीक नहीं कही जा सकती। ■ ■



# बातें हिंदी की, मुहब्बत अंग्रेजी से!

भाषाओं का विकास, विस्तार और उनके साथ जुड़ी राजनीति काफी जटिल है। इससे जुड़े पहलुओं को किसी आसान पद्धति से नहीं समझा जा सकता। भारत के भाषा संबंधी आंकड़ों और भाषिक भूगोल की सबसे उल्लेखयनीय बात ये है कि देश में सर्वाधिक तेजी से (दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में) विस्तार पाने वाली भाषाओं में हिंदी और अंग्रेजी ही हैं। इसमें भी अंग्रेजी के आंकड़े काफी प्रभावपूर्ण हैं। दूसरी और तीसरी भाषा के तौर पर अंग्रेजी का फैलाव अखिल भारतीय है, यह भौगोलिक तौर पर हिंदी से भी ज्यादा विस्तृत है।



डॉ. सुशील उपाध्याय  
हरिद्वार, उत्तराखण्ड



सवाल अंग्रेजी या किसी भाषा के विरोध का नहीं है, बल्कि सरकारों की विरोधाभासी नीतियों का है। हाल के दिनों में अंग्रेजी के संदर्भ में दो मामलों ने सरकारों और नीति निर्धारकों के विरोधाभास को उजागर किया। पहला मामला, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अंग्रेजी को शंघाई सहयोग संगठन तीसरी भाषा बनाने पर जोर दिया है। इस संगठन में चीन, उज्बेकिस्तान, गुजारिंस्तान, गिरिंस्तान, तजाकिस्तान, रूस, भारत और पाकिस्तान शामिल हैं। इस संगठन में मंडारिन और रूसी भाषा को आधिकारिक भाषा के तौर पर शामिल किया है। इसमें दिक्कत यह है कि भारत और पाकिस्तान में सामान्य तौर पर मंडारिन और रूसी भाषा के जानने वाले बहुत कम मिलते हैं। भारत इस मुश्किल को खत्म करना चाहता है। इसी को देखते हुए अंग्रेजी को इस संगठन की तीसरी भाषा बनाने का प्रस्ताव रखा गया है।

अब सवाल यह है कि क्या अंग्रेजी की बजाय हिंदी का प्रस्ताव रखा जा सकता था? भारत सरकार हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने की बात करती है। नई शिक्षा नीति में भी हिंदी और भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता देने की बात कही गई है, लेकिन जब शंघाई सहयोग संगठन जैसे वैश्विक मंचों की बात आती है, जहां भारत, पाकिस्तान के अलावा किसी की अंग्रेजी में रुचि नहीं है, वहां भी भारत अंग्रेजी का प्रस्ताव देता है। यहां रोचक बात यह है कि इस प्रस्ताव का समर्थन करने वाला पाकिस्तान खुद हिंदी (उर्दू लिपि में) को समझने में समर्थ है, लेकिन असली बात उस मानसिकता की है जो यह मानती है कि भारत-पाकिस्तान का संवाद एवं संप्रेषण अंग्रेजी के माध्यम से ही हो सकता है।

यह प्रस्ताव भारत के उन विदेश मंत्री ने रखा है जो बहुत प्रभावपूर्ण हिंदी बोलते हैं। (और विदेश मंत्री एस. जयशंकर ही क्यों दक्षिण भारत के प्रायः

सभी प्रमुख नेता अच्छी हिंदी बोलते हैं। हाल ही में कर्नाटक चुनाव में डीके शिवकुमार और मल्लिकार्जुन खड़गे की हिंदी सभी ने सुनी। इससे पहले जयललिता और एचडी देवगौड़ा की हिंदी भी एक उदाहरण के तौर पर सामने रही है। इस मौके पर पूर्वोत्तर के किरण रिजिजू और पीए संगमा की हिंदी को भी याद कर सकते हैं। इनके अलावा हेमंत बिस्वसरमा, ममता बनर्जी, उद्धव ठाकरे या खुद प्रधानमंत्री मोदी की हिंदी भी भारत के राजनीतिक पटल पर हिंदी की स्थिति को उजागर करती है। ये सब उदाहरण यह बताने के लिए काफी हैं कि हिंदी भारत के हर कोने का प्रतिनिधित्व कर रही है। कम से कम राजनीतिक पटल पर तो ही कर रही है।) वस्तुतः भारत ने शंघाई सहयोग संगठन में हिंदी की बजाय अंग्रेजी का प्रस्ताव देकर हिंदी के लिए एक बड़ा अवसर खोया है।

दूसरा मामला उत्तराखण्ड से जुड़ा है। सरकार ने पहली से 12वीं तक की सभी पाठ्यपुस्तकें हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। प्रदेश में नए सत्र से अंग्रेजी माध्यम की किताबें उपलब्ध हो जाएंगी। बताया गया है कि इसके पीछे सरकार की मंशा अंग्रेजी भाषा पर छात्रों की मजबूत पकड़ बनाना है। यह दावा भी किया गया है कि इससे गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई का स्तर बढ़ेगा और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता की दर में भी बढ़ोत्तरी होगी। शिक्षा विभाग के अधिकारी इस निर्णय को सरकार की उपलब्धि के तौर पर प्रचारित कर रहे हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कि बीते कुछ वर्षों में अंग्रेजी माध्यम के

सरकारी स्कूलों को प्रचारित किया गया था। यानि सरकार सैद्धांतिक और नीतिगत तौर पर यह मानती है कि अंग्रेजी को बढ़ावा देकर ही शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

इस क्रम में यह बात स्पष्ट किया जाना बेहद जरूरी है कि हिंदी को प्रतिष्ठापित करने के लिए अंग्रेजी का विरोध गैरजरूरी है, बल्कि ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें नई पीढ़ी केवल हिंदी ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं को भी सीखे, उनका प्रयोग करे। वैसे भी देश में कई दशक से तीन-भाषा फार्मूला लागू है। लेकिन, हिंदी की कीमत पर अंग्रेजी को बढ़ाना नीतिगत और सैद्धांतिक तौर पर गलत प्रतीत होता है। ये प्रयोग उत्तराखण्ड जैसे हिंदी भाषी राज्य में होना तो और भी चिंता की बात है। इस पर यह सवाल उठाया जा सकता है कि निजी स्कूलों में हर तरफ अंग्रेजी का बोलबाला है। ऐसे में सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम होने में क्या बुराई है? यकीनन, कोई बुराई नहीं है, लेकिन फिर उन दावों का क्या होगा जो हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने की बात कह रहे हैं।

भाषाओं का विकास, विस्तार और उनके साथ जुड़ी राजनीति काफी जटिल है। इससे जुड़े पहलुओं को किसी आसान पद्धति से नहीं समझा जा सकता। भारत के भाषा संबंधी आंकड़ों और भाषिक भूगोल की सबसे उल्लेख्यनीय बात ये हैं कि देश में सर्वाधिक तेजी से (दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में) विस्तार पाने वाली भाषाओं में हिंदी और अंग्रेजी ही हैं। इसमें भी अंग्रेजी के आंकड़े काफी प्रभावपूर्ण हैं। दूसरी और तीसरी भाषा के तौर पर

अंग्रेजी का फैलाव अखिल भारतीय है, यह भौगोलिक तौर पर हिंदी से भी ज्यादा विस्तृत है। वर्ष 2011 की जनगणना में केवल दशमलव दो (0.2) प्रतिशत लोगों ने अंग्रेजी को अपनी पहली भाषा बताया, लेकिन दूसरी और तीसरी भाषा के तौर पर यह आंकड़ा 10 फीसद से भी अधिक है। इसमें संदेह नहीं है कि बीते 12 साल में यह और तेजी से बढ़ा है और अनुमान है कि वर्तमान में मातृभाषा, दूसरी भाषा और तीसरी भाषा के तौर पर अंग्रेजी बोलने, जानने और समझने वालों की संख्या देश की कुल आबादी का 15 फीसद तक हो चुकी होगी। यानि भारत में 25-26 करोड़ लोग अंग्रेजी में संवाद करने में सक्षम हैं। परिणामतः हिंदी के बाद भारत में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा अंग्रेजी है। यह आंकड़ा भारत को दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा अंग्रेजी बोलने वाला देश बनाता है। प्रश्न यह है कि इस आंकड़े पर प्रसन्न हुआ जाए या चिंतित? इसका जवाब यह है कि यदि अंग्रेजी का विस्तार हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की कीमत पर हो रहा है तो इस पर चिंता ही की जानी चाहिए।

चूंकि, अंग्रेजी के साथ आर्थिक उच्चति, सामाजिक हैसियत में बढ़ोत्तरी और सत्ता में हिस्सेदारी की संभावना जुड़ी हुई है इसलिए अब अंग्रेजी शिक्षण एवं अंग्रेजी माध्यम की मुखर मांग भारत के ग्रामीण वर्ग और वंचित समुदायों से आती दिखती है। भले ही बोलने वालों संख्या की दृष्टि से हिंदी और अंग्रेजी में बड़ा अंतर हो, लेकिन यह सत्य है कि अंग्रेजी भारत की किसी भी अन्य भाषा की तुलना में अधिक ताकतवर है और इसकी ताकत

में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। भारत सरकार कहती है कि सेतु भाषा के रूप में हिंदी का विकास होगा, लेकिन आंकड़े बताते हैं कि सेतु भाषा के तौर पर अंग्रेजी के सामने अन्य कोई भाषा मुकाबले में नहीं है। सेतु भाषा के तौर पर अंग्रेजी के विकास में दक्षिण और पूर्वोत्तर राज्यों का विशेष योगदान है। दूसरी बात नगरीकरण की तेज गति ने भी अंग्रेजी के विकास की संभावनाओं को बेहतर किया है। लोक भाषा फाउंडेशन के सर्वे में यह पाया गया कि भारत में द्विभाषी लोगों की संख्या करीब 38 प्रतिशत और तीन भाषा बोलने वालों की संख्या 11 फीसद है। इन दोनों आंकड़ों में अंग्रेजी का हिस्सा उल्लेखनीय है।

जहां तक किसी भाषा को सांस्थनिक तौर पर विस्तार देने की बात है तो उसे प्रशासन, न्यायालय, मीडिया, शिक्षा आदि की भाषा बनाना ही होगा। ये ही तमाम बातें अंग्रेजी के पक्ष में जाती हैं। अंग्रेजी के इस पक्ष को सरकारों के निर्णय भी मजबूती देते हैं। इन निर्णयों के दो उदाहरण शुरू में ही गिनाए गए हैं। यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि हमारा जोर सीखने पर नहीं, बल्कि भाषा पर है। माध्यम भाषा को ही ज्ञान का पर्याय मान लिया गया है। इसका परिणाम यह है कि जब कमजोर वर्ग के युवा देश के नामी संस्थानों में पढ़ने जाते हैं तो भाषागत बैरियर उन्हें आत्मघात की राह पर लेकर जाता है। यूजीसी के पूर्व सदस्य प्रो. योगेंद्र यादव ने इसी को शिक्षाघात कहा है। चूंकि, देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भौतिक परिदृश्य पर अंग्रेजी का बोलबाला है

इसलिए हर कोई उसी की ओर आकर्षित है। जो इस दौड़ में पिछड़ता है, उसमें से अनेक आत्मघात का रास्ता चुन लेते हैं।

भले ही सरकार के आदेशों-निर्देशों में और सत्ता में मौजूद लोगों के भाषणों में हिंदी और भारतीय भाषाओं की विशेषता के गुण गाए जाते हों, लेकिन श्रेष्ठ अंग्रेजी ही बनी हुई है और अंग्रेजी के समान ही अन्य भाषाओं को श्रेष्ठता के स्तर पर लाने का काम आसान बिल्कुल नहीं है। इसमें दशकों लग जाएंगे और यह तभी संभव है जब तकनीकी-प्रोफेशनल और सामाजिक-आर्थिक स्तरों पर हिंदी को समान महत्व मिले। लेकिन, जब भारत के विदेश मंत्री अंग्रेजी को शंघाई सहयोग संगठन की तीसरी भाषा बनाने का प्रस्ताव रखते हैं या उत्तराखण्ड सरकार छात्रों के गणित एवं विज्ञान को बेहतर करने के लिए अंग्रेजी को बढ़ावा देती है तो फिर हिंदी की उपस्थिति का विस्तार केवल आदर्शों की बात ही लगता है।

इस विमर्श के क्रम में यह याद जरूर रखिये कि अंग्रेजी का विरोध निरर्थक है। आज के समय में अंग्रेजी ज्ञान की भाषा है, उसे सीखना और प्रयोग करना चाहिए। साथ ही, यह भी याद रखिये कि चाहे बीतते समय के साथ अंग्रेजी भारतीय भाषा बन गई हो, लेकिन यह भारत के समाज और संस्कृति की भाषा नहीं है। भले ही अतीत में अंग्रेजी औपनिवेशक दासता का एक बड़ा टूल थी, लेकिन अब उसका दखल बहुत अलग तरह से है। वैसे भी, भारत में जो भाषा करीब 190 साल से अकादमिक तौर पर पढ़ाई जा रही हो, उसे बाहर करना मुश्किल ही नहीं, बल्कि असंभव है।

इसका बेहतर समाधान यह है कि भारत भी यूरोपीय समाज की तरह बहुभाषी समाज में परिवर्तित हो। हरेक व्यक्ति अपनी मातृभाषा के साथ अंग्रेजी को जाने-सीखे, इसमें कोई बुराई नहीं है। और केवल मातृभाषा ही नहीं, बल्कि पड़ोस के राज्य की कोई भाषा या अपनी पसंद की कोई अन्य देशी-विदेशी भाषा सीखे, उसका व्यवहार करे। भारत बहुभाषावादी होगा तो अंग्रेजी के सर्वत्र फैल जाने के खतरे से भी बाहर आ सकेगा। तब शायद एस. जयशंकर और उत्तराखण्ड सरकार अंग्रेजी को नहीं, बल्कि हिंदी (या अन्य भारतीय भाषाओं) को प्राथमिकता देते दिखेंगे। ■ ■

**"निंदा"**  
से घबराकर अपने  
**"लक्ष्य"**  
को ना छोड़े क्योंकि..

**"लक्ष्य"**  
मिलते ही निंदा करने वालों की  
**"राय"**  
बदल जाती है।

# भारत में मजदूरों की दशा और मजदूरी दिवस की सार्थकता

किसी भी राष्ट्र की प्रगति करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के कंधों पर ही होता है। मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत के बल पर ही राष्ट्र तरकी करता है। लेकिन भारत का श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। हमारे देश में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। समय बीतने के साथ मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों के उत्साह का कम कर दिया है। अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ कागजी रस्म बनकर रह गया है। आज भी मजदूरों से मालिक 12 घंटे से ज्यादा काम ले रहे हैं और मजदूरी के नाम पर कुछ रूपली पकड़ा दे रहे हैं।



1 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 1886 में अमेरिका से हुई। लेकिन धीरे-धीरे यह दुनिया के कई देशों में मनाया जाने लगा। यहां मजदूर दिवस का मतलब सिर्फ मजदूरों से नहीं बल्कि हम उस शब्द से हैं, जो नौकरी करता है। मजदूर दिवस का महत्व पूरी दुनिया के लिए खास है। क्योंकि इस दिन से ही कुछ ऐसे बदलाव हुए जिन्होंने पूरी दुनिया के नौकरीपेशा लोगों के जीवन को आसान बनाया। आइए इस दिन के महत्व और इतिहास को विस्तार से जानते हैं।

घटना साल 1886 की है। 1 मई के दिन ही अमेरिका में मजूदर आंदोलन की शुरुआत हुई। अमेरिका के मजदूर और कामगार सङ्कट पर उत्तर आए और अपने हक के लिए आवाज बुलंद करने लगे।

दरअसल, उस समय मजदूरों से 15-15 घंटे काम लिया जाता था और हालात बहुत बुरे थे। इसी से परेशान

होकर मजदूरों ने अपनी लड़ाई लड़ने का फैसला लिया और सङ्कट पर उत्तर गए। इस आंदोलन में एक समय ऐसा समय आया जब पुलिस और मजदूर आमने सामने आ गए।

प्रदर्शनकारी मजदूरों पर पुलिस ने गोलीबारी कर दी। इस गोलीबारी में कई मजदूरों की जान चली गई और सैकड़ों लोग घायल हो गए। इस घटना के तीन साल बाद 1889 में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन हुआ। इसी में फैसला लिया गया कि हर मजदूर एक दिन में केवल 8 घंटे ही काम लिया जाएगा। इसी सम्मेलन में यह फैसला भी लिया गया कि 1 मई को हर साल मजदूर दिवस मनाया जाएगा। इसके अलावा, 1 मई को छुट्टी देने का फैसला भी लिया गया। सबसे पहले अमेरिका में 8 घंटे काम करने के नियम के बाद कई देशों में इस नियम को लागू किया गया।

तभी से भारत सहित दुनिया के



सभी देशों में एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाने लगा। इसका मुख्य उद्देश्य उस दिन मजदूरों की भलाई के लिए काम करने व मजदूरों में उनके अधिकारों के प्रति जागृति लाना होता है। मगर आज तक तो कहीं ऐसा हो नहीं पाया है। कोरोना महामारी की मार सबसे ज्यादा मजदूर वर्ग पर पड़ी है। इस कारण देश का मजदूर सबसे ज्यादा बदहाल है। मजदूर दिवस दुनिया के सभी कामगारों, श्रमिकों को समर्पित होता है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के कंधों पर ही होता है। मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत के बल पर ही राष्ट्र तरकी करता है। लेकिन भारत का श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। हमारे देश में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। समय बीतने के साथ मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों के उत्साह का कम कर दिया है। अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ कागजी रस्म बनकर रह गया है। आज भी मजदूरों से मालिक 12 घंटे से ज्यादा काम ले रहे हैं और मजदूरी के नाम पर कुछ रूपली पकड़ा दे रहे हैं। उपर से नीचे तक जिसे जहां मिल रहा है वही पर अधिकारी द्वारा उनका शोषण किया जा रहा है।

भारत देश में मजदूरों की मजदूरी के बारे में बात की जाए तो यह भी एक बहुत बड़ी समस्या है, आज भी देश में कम मजदूरी पर मजदूरों से काम कराया जाता है। यह भी मजदूरों का एक प्रकार

से शोषण है। आज भी मजदूरों से फैक्टरियों या प्राइवेट कंपनियों द्वारा पूरा काम लिया जाता है लेकिन उन्हें मजदूरी के नाम पर बहुत कम मजदूरी पकड़ा दी जाती है, जिससे मजदूरों को अपने परिवार का खर्चा चलाना मुश्किल हो जाता है।

पैसों के अभाव से मजदूर के बच्चों को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। भारत में अशिक्षा का एक कारण मजदूरों को कम मजदूरी दिया जाना भी है।

वर्तमान दौर में भी देश में ऐसे मजदूर हैं जो 1500-2000 मासिक मजदूरी पर काम कर रहे हैं। यह एक प्रकार से मानवता का उपहास है। बेशक, इसको लेकर देश में विभिन्न राज्य सरकारों ने न्यूनतम मजदूरी के नियम लागू किए हैं, लेकिन इन नियमों का खुलेआम उल्लंघन होता है और इस दिशा में सरकारों द्वारा भी कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता और न ही कोई कार्यवाही की जाती है।

वर्तमान में जरूरत है कि इस महंगाई के समय में सरकारों को प्राइवेट कंपनियों, फैक्टरियों और अन्य रोजगार देने वाले माध्यमों के लिए एक कानून बनाना चाहिए जिसमें मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी तय की जानी चाहिए। मजदूरी इतनी होनी चाहिए कि जिससे मजदूर के परिवार को भूखा न रहना पड़े और न ही मजदूरों के बच्चों को शिक्षा से वंचित रहना पड़े।

मजदूरी की बात हो और बाल मजदूरी की बात हो ऐसा हो नहीं सकता।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में बच्चे अवैतनिक पारिवारिक श्रमिकों के रूप में

या मालिकों के घरों में परिवारों द्वारा किये जाने वाले ठेके पर काम करने तथा अपने ही परिवार के छोटे खेतों या उद्यमों में काम करते हैं।

आम तौर पर घरों में किया जाने वाला काम कम शोषणकारी माना जाता है, मगर अक्सर परिवार के भीतर इन बच्चों के साथ सबसे बुरा सलूक किया जाता है। तथा बेहद कठिन हालातों के बिच उन्हें 15 से 20 घंटे तक काम करना पड़ता है। अक्सर बाल श्रमिकों को कम ही वेतन दिया जाता है। कई स्थानों पर उन्हें अमानवीय स्थिति व जीवन की न्यूनतम सुरक्षा के अभाव में भी काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।

नगरों तथा बड़े शहरों में एक बड़ा तबका निराश्रित बच्चों का होता है। इस प्रकार के बच्चों के आगे पीछे कोई नहीं होता है, न ही इनका अपना कोई घर होता है। रेल की पटरियों या फुटपाथों पर ही ये रहने को मजबूर हैं। गाँव में इनके परिवार की नाजुक परिस्थियाँ और लड़ाई झगड़ा इन्हें भागने के लिए मजबूर कर देते हैं, तथा ऐसे शहरों में आकर एक असुरक्षित समुदाय का हिस्सा बन जाते हैं।

ऐसे में भारत में मजदूरों के लिए जो नियम बनाए गए हैं अधिकारियों को सबसे पालन करवाना चाहिए बाल शोषण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। आने वाला भविष्य बच्चों का ही है। बच्चे मजदूरी द्वारा अपना पेट पालते हैं। इनकी मजदूरी को जिले के श्रम अधिकारी द्वारा समझ कर उन्हें दूर करना चाहिए। जिस देश में मजदूर खुश होंगे देश उतना ही मजबूत होगा इसको संकल्पित होकर करना होगा।



# पूर्वोत्तर भारत का सांस्कृतिक वैभव

सदियों के अनुभव लोकगीतों की कुछ पंक्तियों में सिमटे होते हैं। इन गीतों में प्राकृतिक जीवन का राग-रंग, भावनाओं का उत्कर्ष और अलौकिक शक्तियों के प्रति श्रद्धा निवेदित है। यह उनके अविकृत मन को शीतलता प्रदान करनेवाला ऐसा मधुरमय संगीत है जिससे आक्रांत-क्लांत मन को शांति मिलती है। अरुणाचलवासियों के जीवन में धर्म को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यहां की अधिकांश जनजातियां दोन्ही-पोलो के प्रति अदृट आस्था रखती है। दोन्ही-पोलो अरुणाचल का सर्वमान्य ईश्वरीय प्रतीक है जिसे अंतर्यामी, स्वयं प्रकाशमान, सर्वशक्तिमान व सर्वहितकारी माना जाता है। मणिपुर की संस्कृति पर वैष्णव धर्म का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। वैष्णव धर्म का मणिपुर के कला रूपों, साहित्य और जीवन पर गहरा प्रभाव है।



वीरेन्द्र परमार  
फरीदाबाद, हरियाणा



पूर्वोत्तर भारत अनेक धर्मों, जातियों, सभ्यताओं और संस्कृतियों का संगम है एवं पूर्वोत्तर की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो शेष भारत से इसे अलग करती हैं। एसे सम्बन्धकारी भावना इस क्षेत्र की अद्भुत विशेषता है। इस क्षेत्र में भारत और विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से अलग-अलग मत और संस्कृति के लोग आए और इस सम्बन्धकारी संस्कृति में घुलमिलकर एकरूप हो गए। इस पुण्य भूमि में अनेक संस्कृति, सभ्यता, विचारधारा और परम्पराएं घुलमिलकर दूध में पानी की तरह एकाकार हो गई। विभिन्न कालखंडों में यहाँ आर्य, द्रविड़, तिब्बती, बर्मन आदि आए और यहाँ के लोकजीवन के अंग बन गए। इसलिए यदि भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को देश की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस क्षेत्र में लगभग 400 समुदायों के लोग रहते हैं और वे 220 से अधिक भाषाएँ बोलते हैं। पूर्वोत्तर की अधिकांश भाषाओं के पास अपनी कोई लिपि नहीं है, लेकिन लोककंठों में विद्यमान लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। एसे संस्कृति, भाषा, परंपरा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, वेश-भूषा आदि की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत वैविध्यपूर्ण, रंगीन, उत्सवधर्मी और जटिल है। सैकड़ों आदिवासी समुदायों और उनकी अनेक उपजातियाँ, असंख्य भाषाएँ, भिन्न-भिन्न प्रकार के रहन-सहन, खान-पान और परिधान, अपने-अपने ईश्वरीय प्रतीक, धर्म और अध्यात्म की अलग-अलग संकल्पनाओं के कारण इस क्षेत्र का सांस्कृतिक महत्व है। पूर्वोत्तर की बहुत बड़ी आबादी प्रकृतिपूजक अथवा जड़ात्मवादी है। प्रकृतिपूजा अथवा जड़ात्मवाद इस क्षेत्र का मौलिक धर्म है। विशेषकर आदिवासी समुदाय सूर्य,

चन्द्रमा, नदी, पर्वत, पृथ्वी, झील, जलप्रपात, तारे, बन इत्यादि की पारंपरिक विधि से पूजा करते हैं। बंगलादेशी घुसपैठ पूर्वोत्तर भारत की बहुत बड़ी समस्या है जिसके कारण कुछ राज्यों की जनसांख्यिकी असंतुलित हो गई है और कुछ जिलों में बंगलादेशी मुसलमानों की जनसंख्या मूल निवासियों से अधिक हो चुकी है एवं धर्म की तीनों शाखाओं शैव, वैष्णव और शाक्त के उपासक हैं एवं वैष्णव धर्म के निष्पार्क सम्प्रदाय (निमान्दी), रामानंद सम्प्रदाय और चैतन्य सम्प्रदाय (गौडिया) तीनों के उपासक भी इस क्षेत्र में विद्यमान हैं एवं पूर्वोत्तर में बौद्ध धर्म की जड़ें भी गहरी हैं एवं यहाँ बौद्ध धर्म के हीनयान, महायान और वज्ञायान तीनों के अनुयायी हैं एवं अनेक उच्छुंखल नदियों, जल प्रपातों, तालाबों से अभिसिंचित पूर्वोत्तर की शास्य श्यामला धरती पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया जिनमें श्रीमंत शंकरदेव का अग्रणी स्थान है एवं असम के युगांतरकारी महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव की पुण्यभूमि के रूप में ख्यात माजुली द्वीप विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है एवं इस द्वीप पर श्रीमंत शंकरदेव का स्पष्ट प्रभाव महसूस किया जा सकता है एवं कार्तिक पूर्णिमा के समय आयोजित होनेवाली रासलीला के अवसर पर यहाँ असमिया संस्कृति जीवंत हो उठती है एवं पंद्रहवीं शताब्दी में इसी द्वीप पर वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव एवं उनके शिष्य माधवदेव का पहली बार मिलन हुआ था एवं त्रिपुरा के पास उन्नत सांस्कृतिक विरासत, समृद्ध परंपरा, लोक उत्सव और लोकरंगों का अद्वितीय भंडार है। उत्तरी त्रिपुरा में अवस्थित ऊनाकोटि पर्वतमाला देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का एक



प्रमुख केंद्र है एवं यहाँ शिला पर उकेरे गए आधुनिकता और परम्परा का संगम देखने विभिन्न देवी-देवताओं के चित्र एवं भगवान को मिलता है एवं इतिहास में रुचि शिव, गणेश, माँ दुर्गा, नंदी बैल की पत्थर रखनेवाले पर्यटक यहाँ पर 10 वीं शताब्दी की मूर्तियाँ देखने लायक हैं एवं यहाँ पर के कछारी वंश के धूंसावशेष का शिव और विशालकाय गणेश की मूर्ति अवलोकन कर सकते हैं एवं मेघालय का विशेष रूप से उल्लेखनीय है एवं शिव के सिर को उच्चकोटिश्वर काल भैरव कहा जाता है एवं पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि ये मूर्तियाँ 11-12 वीं शताब्दी की बनी हैं एवं यहाँ पर वसंत ऋतु में अशोक अष्टमी मेला लगता है एवं इसी प्रकार त्रिपुरा के उदयपुर में स्थित त्रिपुरेश्वरी मंदिर देश की 51 शक्तिपीठों में से एक है। इसे कूर्म पीठ कहा जाता है क्योंकि मंदिर का आकार कछुए के समान है। इस मंदिर का निर्माण 1501 में महाराजा धन्यमाणिक्य ने करवाया था एवं मोकोकचुंग नागालैंड की सांस्कृतिक और बौद्धिक राजधानी है एवं यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य और पारंपरिक नृत्य पर्यटकों का मन मोह लेते हैं एवं धीरे धीरे मोकोकचुंग नागालैंड के एक प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित होता जा रहा है एवं मोकोकचुंग को नागालैंड का सबसे सुंदर और जीवंत जिला माना जाता है एवं दिमापुर नागालैंड का प्रवेशद्वार है एवं इसे नागालैंड की व्यावसायिक राजधानी भी कहा जा सकता है एवं इस शहर में प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित होता जा रहा है एवं यहाँ की व्यावसायिक राजधानी होता है एवं यहाँ की मृत्यु के बाद माता की संपत्ति पर उसकी सबसे छोटी बेटी का अधिकार होता है एवं मिजोरम के अधिकांश



लोगों ने ईसाई धर्म को अंगीकार कर लिया है एवं 1894 में आइजोल में दो ईसाई मिशनरी का आगमन हुआ एवं उस समय तक सभी मिज़ो प्रकृतिपूजक अथवा जड़ात्मवादी थे एवं हितकारी देवी-देवताओं के अस्तित्व में विश्वास करते थे, जिसे 'पथियन' कहते कहा जाता है एवं 'पथियन' को सृष्टिकर्ता माना जाता है एवं इनका विश्वास था कि पहाड़ों, पेड़ों, चट्टानों और नदियों में अनिष्टकारी आत्माओं और राक्षसों का निवास होता है एवं इसलिए उन्हें पशु-पक्षियों की बलि देकर प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता था एवं सभी धार्मिक कार्य पुजारी द्वारा संपन्न कराए जाते थे, लेकिन अब मिजोरम के अधिकांश निवासियों ने ईसाई धर्म को अंगीकार कर लिया है और वे गिरजाघरों द्वारा निर्देशित और नियंत्रित होते हैं एवं ईसाई धर्म के अतिरिक्त मिजोरम में लगभग 8.19 प्रतिशत लोग बौद्ध धर्म में आस्था रखते हैं एवं चकमा और मघ दोनों समुदाय बौद्ध धर्मावलंबी हैं एवं अरुणाचल प्रदेश में आदी, न्यिशी, आपातानी, तागिन, सुलुंग, मोम्पा, खाम्ती, शेरदुकपेन, सिंहफो, मेम्बा, खम्बा, नोक्ते, वांचो, तांगसा, मिश्मी, बुगुन (खोवा), आका, मिजी इत्यादि आदिवासी समूह सद्दाव एवं भाईचारे के साथ रहते हैं एवं सद्दाव की सभी जनजातियों की अलग-अलग भाषाएँ हैं- अरुणाचलवासी

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं एवं लोकसाहित्य की दृष्टि से यह प्रदेश बहुत समृद्ध है एवं इस प्रदेश का अधिकांश लोकसाहित्य गीतात्मक है। मौखिक परंपरा में उपलब्ध इन गीतों में प्रदेशवासियों की आशा-आकांक्षा, विजय-पराजय, हर्ष-वेदना तथा विधि-निषेध सब कुछ समाहित है। सदियों के अनुभव लोकगीतों की कुछ पंक्तियों में सिमटे होते हैं। इन गीतों में प्राकृतिक जीवन का राग-रंग, भावनाओं का उत्कर्ष और अलौकिक शक्तियों के प्रति श्रद्धा निवेदित है। यह उनके अविकृत मन को शीतलता प्रदान करनेवाला ऐसा मधुरमय संगीत है जिससे आक्रांत-क्लांत मन को शांति मिलती है। अरुणाचलवासियों के जीवन में धर्म को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यहां की अधिकांश जनजातियां दोन्यी-पोलो के प्रति अदूट आस्था रखती हैं। दोन्यी-पोलो अरुणाचल का सर्वमान्य ईश्वरीय प्रतीक है जिसे अंतर्यामी, स्वयं प्रकाशमान, सर्वशक्तिमान व सर्वहितकारी माना जाता है। मणिपुर की संस्कृति पर वैष्णव धर्म का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है एवं वैष्णव धर्म का मणिपुर के कला रूपों, साहित्य और जीवन पर गहरा प्रभाव है एवं मणिपुर अठारहवीं शताब्दी में वैष्णव धर्म के तीनों रूपों के आगमन का साक्षी बना एवं इस काल में ही मणिपुर में

वैष्णव धर्म के निम्बार्क सम्प्रदाय (निमान्दी), रामानंद सम्प्रदाय और चैतन्य सम्प्रदाय (गौडिया) का प्रवेश हुआ एवं पड़ोसी जिले सिलहट से एक वैष्णव उपदेशक शातिदास आए और उन्होंने महान मणिपुरी राजा गरीबनवाज को रामानंदी सम्प्रदाय में परिवर्तित कर दिया एवं आरंभिक विरोध के बाद वैष्णव धर्म मणिपुर का राज्य धर्म बन गया एवं राजर्षि भाग्यचंद्र (1763-98 ई.) के शासनकाल में वैष्णव धर्म के चैतन्य सम्प्रदाय का खूब पल्लवन-पुष्टन हुआ एवं अठारहवीं शताब्दी और उसके बाद की प्रदर्शन कलाओं पर वैष्णव धर्म का उल्लेखनीय प्रभाव देखा जा सकता है एवं राजा गरीबनवाज के शासनकाल में मणिपुरी विद्वान अंगोम गोपी ने कृतिवास रामायण पर आधारित सात खंडों में मणिपुरी रामायण की रचना की एवं संस्कृति, भाषा, परंपरा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, वेश-भूषा आदि की दृष्टि से सिक्किम विविधर्णी, रंगीन और जीवंत प्रदेश है एवं तिब्बत, नेपाल, भूटान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर अवस्थित सिक्किम एक लघु पर्वतीय प्रदेश है। यह समाटों, वीर योद्धाओं और कथा-कहानियों की भूमि के रूप में विख्यात है। सिक्किम को रहस्यमयी सौंदर्य की भूमि व फूलों का प्रदेश जैसी उपमाएं दी जाती हैं। नदियां, झीलें, बौद्धमठ और स्तूप बाहें फैलाकर पर्यटकों को आमंत्रित करते हैं। विश्व की तीसरी सबसे ऊंची पर्वत चोटी कंचनजंगा राज्य की सुंदरता में चार चांद लगाती है।



## 'एकात्म मानवदर्शन' और भारतीय मानसिकता का विऔपनिवेशीकरण

दीनदयाल उपाध्याय ने अपने 'संगम के सिद्धांत' में, 'किसी भी परिवर्तन को स्वीकार और कार्यान्वित करते समय, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह हमारे राष्ट्र के लोकाचार के अनुरूप हो और समकालीन समय में व्यवहार्य हो।' दीनदयाल उपाध्याय ने हमें वह आवश्यक दिशा प्रदान की है जिसमें इस राष्ट्र को चलना है। हमारी राय में बहुलता बनाए रखते हुए, यह सिद्धांत अनिवार्य रूप से हमें एक दिशा में चलने की नींव देता है। हमारे साझा उद्देश्यों के लिए एक दिशात्मक दृष्टिकोण खोजने के अलावा, भारतीय मूल्यों को सभी नीतिगत निर्णयों के लिए एक 'प्रतिदान' बनना चाहिए।



पंडित उपाध्याय भारत के उन विचारकों में से एक हैं जिन्होंने 'विचारों के स्वराज' पर जोर दिया - जिसका अर्थ है विचारों का विऔपनिवेशीकरण, यानी भारतीय मानविकास का विऔपनिवेशीकरण। भारत राजनीतिक रूप से आजाद है लेकिन वैचारिक तौर पर औपनिवेशिक खुमारी अभी भी है।

संस्कृति, धर्म और इतिहास का तिरस्कार करने लगे, यह भूल गए कि उनके पूर्वजों की सामाजिक आर्थिक सफलता पूरी तरह से धर्म के पालन के कारण थी।

हम इजरायल और जापान से सीख सकते हैं क्योंकि कई प्राकृतिक बाधाओं और एक कठिन पड़ोस के बावजूद वे सभी मोर्चों पर आगे बढ़ रहे हैं। सरल कारण यह है कि जब देश के सामने किसी भी चुनौती का सामना करने की बात आती है तो राजनीतिक और सामाजिक मतभेदों को अनदेखा करते हुए वे एक राष्ट्र के रूप में एकजुट होते हैं। हमारे मामले में, ब्रेनवॉश की गई मानसिकता कभी भी एक राष्ट्रीय कारण के लिए एकजुट नहीं होती है, यही कारण है कि वंशवादी राजनीतिक दल, भ्रष्ट नेता, वोट बैंक की राजनीति, कई विदेशी-वित्तपोषित कार्यकर्ता और एनजीओ ने विभाजन,



पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

विशेष रूप से हिंदुओं को जाति के आधार पर बाटकर, महान भारत बनने के लिए हमेशा मुश्किलें पैदा करते हैं। यदि हिंदू एक हो जाते हैं, तो हमारा राष्ट्र हर तरह से उत्कृष्ट होगा, बिना किसी धर्म को नुकसान पहुंचाए और इसके बजाय बेहतर सामाजिक आर्थिक स्थितियों के लिए मदद करेगा। यदि हिंदू एकजुट नहीं हुए तो आपदा के लिए तैयार रहें, जैसा कि हमने अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांगलादेश में देखा है। एक बेहतर दुनिया के लिए हिंदुओं को एकजुट होने दें; यही 'हिन्दुत्व' का प्रतीक है। और इसके लिए 'एकात्म मानवदर्शन' को सभी भारतीयों, विशेषकर हिंदुओं के विचारों को उपनिवेशवाद से मुक्त करने की नींव के रूप में काम करना चाहिए।

**दीनदयालजी उपाध्याय ने रेखांकित किया कि भारतीय मानसिकता का विऔपनिवेशीकरण क्यों आवश्यक है।**

उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आख्यानों में भारतीय दर्शन की मूल अवधारणा का परिचय दिया। जरूरी नहीं कि पश्चिम की हर चीज हानिकारक हो और आधुनिकता का हर गुण हमारे हित में हो यह भी जरूरी नहीं है। दीनदयाल उपाध्याय ने अपने 'संगम के सिद्धांत' में, 'किसी भी परिवर्तन को स्वीकार और कार्यान्वित करते समय, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह हमारे राष्ट्र के लोकाचार के अनुरूप हो और समकालीन समय में व्यवहार्य हो।' दीनदयाल उपाध्याय ने हमें वह आवश्यक दिशा प्रदान की है जिसमें इस राष्ट्र को चलना है। हमारी राय में बहुलता बनाए

रखते हुए, यह सिद्धांत अनिवार्य रूप से हमें एक दिशा में चलने की नींव देता है। हमारे साझा उद्देश्यों के लिए एक दिशात्मक दृष्टिकोण खोजने के अलागा, भारतीय मूल्यों को सभी नीतिगत निर्णयों के लिए एक 'प्रतिदान' बनना चाहिए। पंडित उपाध्याय ने एक अद्वितीय आर्थिक मॉडल पर आधारित भारत की कल्पना की थी जिसमें एक इंसान या मानवता सभी चीजों के केंद्र में थी। वह नहीं चाहते थे कि भारत एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए केवल पश्चिमी आर्थिक सिद्धांतों की नकल करे। दीनदयाल उपाध्याय भारतीय संस्कृति की नींव पर राष्ट्रीय मुक्ति की स्थापना करना चाहते थे। परिणामस्वरूप, दीनदयाल उपाध्याय उन पश्चिमी धारणाओं को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, जिन्हें कई लोग स्वयंसिद्ध मानते हैं। उन्होंने राज्य के पश्चिमी विचारों, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और पश्चिम के कई 'वादों' (गेस) जैसे विषयों पर एक भारतीय दृष्टिकोण से टिप्पणी की।

इसके बाद, कुछ बृहद क्षेत्र जहां विऔपनिवेशीकरण पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. ज्ञान का माध्यम।
2. शिक्षा प्रणाली।
3. न्यायपालिका।
4. प्रशासन।
5. अनुसंधान पद्धति, और;
6. शासन।

उत्तर-औपनिवेशिक युग में, शिक्षा के मैकाले मॉडल की निरंतरता ने व्यवस्थित रूप से भारतीय भाषाओं के

महत्व को कम किया और प्रचलित शिक्षा प्रथाओं पर अंग्रेजी शिक्षा का आधिपत्य स्थापित किया। अंग्रेजी हमारी विचार प्रक्रिया को एकेश्वरवादी रूप से प्रस्तुत करने के प्रभावों से भरी हुई थी, और समावेशिता वर्गों एवेश्वरवादी अभिजात्यवाद की विशिष्टता से बदल दिया गया था। इस अभिजात्यवाद ने शासन, न्यायपालिका और अधिकांश नौकरशाही की सहायक संस्थाओं को जल्दी से संक्रमित कर दिया और आम लोगों और इन नीति निर्माताओं के बीच एक बड़ी खाई पैदा कर दी। जबकि शासन और न्यायपालिका की सहायक संस्थाओं को इस राष्ट्र की निकाय राजनीति का पूरक माना जाता था, इसके विपरीत, यह एक बाहरी इकाई बन गई और बड़े पैमाने पर समाज से अलग हो गई। भारतीय विचार प्रक्रिया को फिर से मजबूत और जीवंत करने की इच्छाशक्ति की कमी ने समस्या को और बढ़ा दिया।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीयों को सशक्त नहीं बनाती है जो आर्थिक उपलब्धियों में इतना स्पष्ट हो जाता है। आयात और निर्यात के आंकड़े इस बात को पूरी तरह से स्पष्ट करते हैं। विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का हिस्सा 23 प्रतिशत था, जितना कि पूरे यूरोप को मिलाकर जब ब्रिटेन हमारी सीमाओं पर उत्तरा था, लेकिन जब तक ब्रिटिश भारत से हटे, तब तक यह घटकर 3 प्रतिशत से थोड़ा अधिक रह गया था। नतीजतन, नई शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो हमारे देश को फिर से महान बनाने के लिए हर बच्चे का व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चारित्र्य निर्माण कर सके। इस



विषय पर पुस्तक में विस्तृत व्याख्या होगी।

**औपनिवेशिक अवधारणा ने दुनिया को कैसे नुकसान पहुँचाया है, और मानसिक विऔपनिवेशीकरण क्यों आवश्यक है?**

कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान पश्चिमी प्रतिमान के परिणामों को समझते हैं और पूँजीवाद और उपभोक्तावाद के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं जो न केवल भौतिकवादी है बल्कि संदिग्ध उपभोक्तावाद को भी प्रोत्साहित करता है। पश्चिमी लोगों का मानना है कि भारी उद्योग और पूँजीवादी रवैया सभी समस्याओं का समाधान करेगा, जो बेकार साबित हुई हैं और इसके बजाय तीव्र प्रदूषण, खाद्य विषाक्तता, जैव-विविधता हानि और गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों जैसे प्रमुख पर्यावरणीय गिरावट का परिणाम है। प्रत्येक व्यक्ति मूल रूप से शरीर-मन के संयोजन से संपन्न आत्मा है जो एक जहरीली स्थिति से ग्रस्त है। हालांकि, तथाकथित भौतिकवादी मनुष्य इस तरह से कार्य करता है कि वह कई प्रजातियों के विलुप्त होने और खतरे में

पड़ने और हमारी आने वाली पीढ़ी को खतरे में डालकर समाज को खतरे में डालता है। वैश्वीकरण के इस दिन और युग में, न तो कारण और न ही सामाजिक-राजनीतिक विचार मानवता को सही दिशा में निर्देशित करते हुए प्रतीत होते हैं। वित्तीय धन सर्वोच्च शासन करता है, मानवता से रहित अधिकांश भौतिकवाद को सुविधाजनक बनाता है। नतीजतन, मनुष्य, जिसकी वृद्धि का अगला उच्च चरण देवत्व है, पशुता के स्तर तक उतरता है।

बड़े पैमाने पर औद्योगिकरण का पश्चिमी प्रतिमान जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिक गिरावट, धन की खाई, बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, आतंकवाद और कई अन्य समस्याओं का कारण बनता है। तेजी से वनों की कटाई अनिवार्य वन आवरण के अस्तित्व को कम कर रही है और हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर कहर बरपा रही है। नदियाँ और पानी की आपूर्ति तेजी से कम हो रही है और प्रदूषण फैला रही है। ग्लोबल वर्मिंग चरम सीमा पर पहुंच गई है और विकसित देशों से कार्बन उत्सर्जन नियंत्रण से बाहर हो गया है। कुछ देशों के आर्थिक विकास

को कम विकसित देशों की स्वस्थ प्रगति को खतरे में डालने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। इसी तरह, वर्तमान पीढ़ी के लालची और शोषक वर्गों द्वारा भविष्य की पीढ़ियों को उनकी वैध सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा से वंचित करना मानवता के खिलाफ अपराध माना जाएगा।

**इस समय 'एकात्म मानवदर्शन'**  
**इतना महत्वपूर्ण क्यों है?**

पश्चिमी मानवतावाद का खंडित संस्करण मानव एकीकरण और विश्व शांति के लिए एक बाधा है क्योंकि इसमें आध्यात्मिकता का अभाव है। स्वामी विकेन्द्रनाथ, श्री अरबिंदो, रवींद्रनाथ टैगोर और पं दीन दयाल उपाध्यायद्वारा मानवतावाद के साथ आध्यात्मिकता को शामिल किया गया है। यह आध्यात्मिक लोकाचार है जो ईश्वरीय सिद्धांत के माध्यम से सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न घटनाओं को एकीकृत करता है, अर्थात् सर्वोच्च आत्मा (परमात्मन) जो सभी प्राकृतिक घटनाओं में आत्मान (आत्मा) के रूप में मौजूद है। दीन दयाल उपाध्याय का मानना है कि कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग का अनुठान मिश्रण आध्यात्मिक और भौतिक उत्थान के उद्देश्य को पूरा करेगा। इस तरह भारतीय मानवतावाद व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व और सृष्टि को सर्पिल रूप से विलीन कर देता है। हालांकि, इन घटनाओं के लिए पश्चिमी दृष्टिकोण केवल यांत्रिक है, प्रत्येक घटना को दूसरों से अलग किया जाता है।

# युवा व संघठन

इन तथाकथित सामाजिक नेता, स्वर्घौषित राष्ट्रीय अध्यक्षों, सेनापतियों पर समाज का नियंत्रण होना चाहिए और मुख्य तौर पर इन लोगों को समाज के छात्रावासों से दूर रखा जाना चाहिए। होना तो यह भी चाहिए कि कॉलेज व कॉम्पीटिशन की तैयारी की उम्र के युवाओं को भी इनसे दुरी बनानी चाहिए। समाज के नाम पर तमाम तरह की दुकानें जिसमें हिंदुत्व की रक्षा का पाठ पढ़ाया जाता हो या राजनेताओं के लिए दरी बिछाने या सिर गिनवाने का काम किया जाता हो युवाओं को दूर रहना चाहिए। आज के दौर में सामाजिक संघठनों में वही लोग बैठे हैं जिनकी समझ युवाओं की समझ से से बहुत कम है, जिन्हें ना समसामयिक मुद्दों की समझ है, ना देश दुनिया के बदलाव की समझ है।



प्रभाकर कुमार  
जमुई बिहार

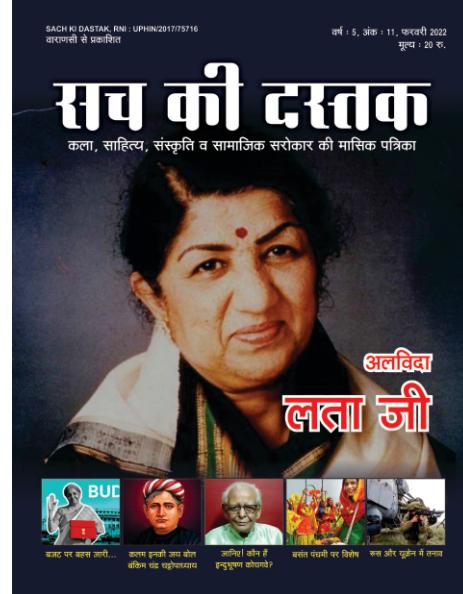
जिस समय युवावस्था चरम पर होती है तब भविष्य को सुनहरा बनाने का समय होता है, आप स्कूलों से निकल कॉलेज या कॉम्पीटिशन की तैयारी की तरफ रुख करते हैं, अपने गांवों घरों या लोकल सिटी से निकल बड़ी सिटी में शिफ्ट होते हैं जहां से देश दुनिया के घटनाक्रम व राजनीतिक दाव पेच नजदीक से देखने समझने को मिलते हैं। इस दौर में बहुत बड़ी संख्या में युवा समाज के छात्रावासों में प्रवेश लेते हैं और वहाँ उनको रास्ता भटकाने के लिए तथाकथित सामाजिक नेता, सामाजिक संघठन, स्वयंभु सेनापति उनके सम्पर्क में आते हैं, यहाँ इन युवाओं का भावनात्मक शोषण किया जाता है, युवाओं के इस समूह को भीड़ के रूप में ले किया जाता है। बहुत बार समसामयिक मुद्दों पर इन युवा समूहों की भावनाओं को भड़का उन्हें उग्र मूवमेंट्स की तरफ धकेला जाता है, जहां उन्हें पढ़ने लिखने कि उम्र में मुकदमे झेलने पड़ते हैं। छात्रावासों में रहने वाले राजपूत युवा पढ़ने के लिए इन संस्थानों में आते हैं ना कि रैलियों का हिस्सा बनने व नेताओं के यहाँ भीड़ बनने। माता पिता अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए तमाम परेशानीया उठाकर उन्हें अच्छे शिक्षण संस्थानों में प्रवेश दिलवाते हैं, लेकिन एक ही झटके में ये तथाकथित सामाजिक नेता, सामाजिक संघठन, स्वयंभु सेनापति किसी भी युवा के भविष्य से खिलवाड़ कर देते हैं। ऐसे बहुत से मूवमेंट्स पर पूर्व में इन छात्रावासों के युवाओं ने मुकदमे झेले हैं उदाहरण के

रूप में वीर फिल्म के समय समाज की एक सेना के उस समय के नेताजी छात्रावास के युवाओं को लेकर घ्जीमूळगए और उस प्रदर्शन में छात्रावास के कुछ युवाओं को पुलिस मुकदमे लगे।

ऐसे ही 2008-09 के सत्र में सीकर राजपूत छात्रावास में रहने वाले के विकलांग बज्ञा को पुलिस मुकदमे का शिकार इसलिए होना पड़ा क्यों कि जब छात्रावास के बाहर राष्ट्रीय राजमार्ग के जाम होने के बाद पुलिस ने छात्रावास में दबिस की तो वो अपनी विकलांगता के कारण भाग नहीं पाए (जबकि घटना के समय वो अपने कमरे में पढ़ रहे थे)। ऐसे ही 2010-11 के सत्र में समाज की एक सेना के सेनापतिजी ने वाहन रैली निकाली और उसमें जयपुर राजपूत छात्रावास के युवाओं को भावनाओं में लेकर साथ लिया गया उस रैली में गोखले छात्रावास के सामने एक झड़प हुई और घटना में लिप्त लोगों की बजाय पुलिस की चपेट में आए पढ़ने लिखने वाले 3-4 बज्ञा लोग जिनके उस समय 12प्पमें 75-80क्ष्टथे। ये केवल दो-तीन उदाहरण नहीं यह लिस्ट बहुत लम्बी है। इन स्वर्घौषित राष्ट्रीय अध्यक्षों ने समाज के सैकड़ों युवाओं का भविष्य बर्बाद किया है और अब ये चले हैं समाज के ऊपर भगवा थोंपने। नाट्यशास्त्र(र्स) में गोल्डमेडलिस्ट लोगों ने समाज के छात्रावासों को एक रंगमंच बनाकर छोड़ दिया है जहां ये जब चाहे तब अपने नाटक दिखाने आ जाते हैं। इन तथाकथित सामाजिक नेता,

स्वघौषित राष्ट्रीय अध्यक्षों, सेनापतियों पर समाज का नियंत्रण होना चाहिए और मुख्य तौर पर इन लोगों को समाज के छात्रावासों से दूर रखा जाना चाहिए। होना तो यह भी चाहिए कि कॉलेज व कॉम्पीटिशन की तैयारी की उम्र के युवाओं को भी इनसे दुरी बनानी चाहिए। समाज के नाम पर तमाम तरह की दुकानें जिसमें हिंदुत्व की रक्षा का पाठ पढ़ाया जाता हो या राजनेताओं के लिए दरी बिछाने या सिर गिनवाने का काम किया जाता हो युवाओं को दूर रहना चाहिए। आज के दौर में सामाजिक संघठनों में वही लोग बैठे हैं जिनकी समझ युवाओं की समझ से से बहुत कम है, जिन्हें ना समसामयिक मुद्दों की समझ है, ना देश दुनिया के बदलाव की समझ है, ना ही ऐसे लोग राजनैतिक तौर पर परिपक्व होते हैं और ना ही समाज को दिशा देने में सक्षम हैं। ये समाज इनके भगवा और इनके हिंदुत्व को स्वीकार नहीं करेगा। समाज को समझना होगा कि समाज के नाम पर बने संगठन यदि समाज पर भगवा थोपने का कुत्सित प्रयास करते हैं तो वो अपने निजी स्वार्थों के लिए हिंदुत्व के आकाओं के इशारों पर कार्य करने वाले एजेंट मात्र हैं। ऐसे लोगों से समाज के युवाओं को दूर रखना समाज का नैतिक दायित्व है। हम हमारा दायित्व निभा रहे हैं आप भी अपना निभाएं।

ध्यान रहे संगठन समाज से हैं समाज संगठनों से नहीं सामंत टीम इस लेख के एक एक शब्द से सहमत है।



विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से हैं

- कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र
- हाफ पेज ₹10000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र
- हाफ पेज ₹6000 मात्र
- रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**  
A/c. No. : **13751652000024**  
IFSC Code : **PUNB0137510**  
Bank: **Punjab National Bank**

Gpay-

(1) 9045610000  
(2) 9621503924

# भारतीय सिनेमा का पहला गाना

आर्द्धशिर ईरानी को अपनी इस फिल्म आलम आरा में एक बूढ़े फकीर का किरदार निभाने के लिए एक आदमी की जरूरत थी जो अच्छा गाता भी हो। इसलिए ज्योति स्टूडियो में शूटिंग के साथ-साथ फकीर के रोल के लिए ऑडिशन भी चल रहा था। कई गायक आए थे। इसी समय कई साइलेंट फिल्मों में काम कर चुके स्टेज एक्टर वजीर मोहम्मद खान किसी काम के सिलसिले में वहां आए। ईरानी ने वजीर खान को भी माइक पकड़ा दिया और गाने को कहा। वजीर ने पश्तो भाषा में एक गीत गाया। ईरानी को उनकी आवाज पसंद आ गई और बूढ़े फकीर के रोल के लिए उनका सिलेक्शन हो गया।



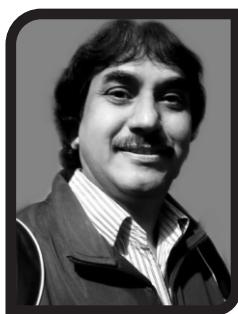
आज के जमाने में किसी भी फिल्म के हिट होने में, बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई करने में उस फिल्म के गाने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। कई बार तो केवल गानों की वजह से ही फिल्म हिट हो जाती है। कई फिल्में तो ऐसी भी हैं जिन्हें उनके गानों की वजह से याद रखा जाता है। आज तो आलम यह है कि किसी फिल्म के रिलीज के काफी पहले ही फिल्म का गाना सोशल मीडिया पर रिलीज कर दिया जा रहा है और गाना हिट होकर फिल्म को भी हिट बनाने में अपना अहम किरदार अदा कर रहा है।

गानों की भीड़ में क्या आपने कभी सोचा है कि भारतीय सिनेमा का सबसे पहला गाना कौन सा है? किस फिल्म का

है? उस गाने को गाने वाला भारतीय सिनेमा का सबसे पहला गायक कौन है?

यह तो आप सभी जानते ही हैं कि आज से 100 साल पहले साल 1913 में भारतीय सिनेमा के पितामह 'दादा साहब फालक' ने भारत की पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का निर्माण किया था, जो फिल्म मूक फिल्म थी यानी साइलेंट फिल्म थी। इस फिल्म में कोई भी आवाज नहीं थी। 1913 से लेकर 1930 तक भारत में जितनी भी फिल्में बनी वह सभी साइलेंट फिल्में थीं।

लेकिन आज से 92 साल पहले 1931 के जनवरी माह में मुंबई के 'इंपीरियल मूवीटोन' नाम की फिल्म कंपनी के संस्थापक, फिल्म निर्माता और



बृजेश श्रीवास्तव मुज्जा

निर्देशक खान बहादुर आर्देशिर ईरानी ने भारत की पहली बोलती फिल्म बनाने का फैसला किया। ईरानी ने यह फैसला बोलती अंग्रेजी फिल्म 'शो बोट' को देखकर किया था।

ईरानी ने जोसेफ डेविड द्वारा लिखित एक पारसी नाटक की कहानी केआधार पर अपनी फिल्म की कहानी जोसेफ डेविड और मुंशी जहीर से लिखवाई। यह कहानी एक राजकुमार और एक बंजारन लड़की की प्रेम कहानी थी। कहानी फाइनल होने पर ईरानी ने फिल्म का नाम रखा 'आलम आरा'। फिल्म की पटकथा एवं संवाद ईरानी ने खुद लिखा।

इस फिल्म में मुख्य किरदारों के रूप में मास्टर विठ्ठल, जुबैदा, पृथ्वीराज कपूर, जिल्लोबाई, सुशीला, एलिजर, जगदीश सेठी आदि को लिया गया। फिल्म के डायरेक्टर आर्देशिर ईरानी ने अपनी फिल्म आलम आरा की कहानी को गानों के जरिए आगे बढ़ाने की सोची और इस फिल्म के लिए कुल सात गाने लिखे गए। ईरानी ने फिल्म में डायलॉग से ज्यादा गीतों को महत्व दिया। ईरानी चाहते थे कि किसी को भी इस बात का पता ना चले कि वे भारत की पहली बोलती फिल्म बना रहे हैं। इसलिए उन्होंने चुपचाप तरीके से फिल्म आलम आरा की शूटिंग मुंबई के ग्रांड रोड पर रेलवे लाइन के पास बने ज्योति स्टूडियो में शुरू की। दिन के समय रेलवे लाइन पर कुछ- कुछ देर के बाद लोकल ट्रेन गुजरती थी जिससे स्टूडियो के कुछ हिस्से हिलने लगते थे। उन दिनों साउंडप्रूफ स्टूडियो भी नहीं थे। इसलिए शोर-शराबा भी काफी होता

रहता था। इन सब से बचने के लिए फिल्म आलम आरा की ज्यादातर शूटिंग रात को एक बजे से सुबह चार बजे के बीच की जाने लगी।

शूटिंग के समय तस्वीरों के साथ-साथ अभिनेताओं की आवाज होगी रिकॉर्ड करने के लिए कैमरामैन आदि एम ईरानी ने कैमरे के साथ टानर साउंड सिस्टम को जोड़ दिया। इस उपकरण के कारण कैमरा, साउंड को सीधे फिल्म की रील में रिकॉर्ड कर सकता था। इस उपकरण के ऑपरेटर का प्रतिदिन मेहनताना 100 रुपये था, इसलिए साउंड को रिकॉर्ड करने का जिम्मा खुद फिल्म के डायरेक्टर आर्देशिर ईरानी ने लिया और इस काम में उनकी सहायता रुस्तम भरुचा ने की।

शूटिंग के समय अभिनेताओं की आवाज को रिकॉर्ड करने के लिए उनके आसपास ही माइक्रोफोन को छुपा कर रख दिया जाता था।

आर्देशिर ईरानी को अपनी इस फिल्म आलम आरा में एक बूढ़े फकीर का किरदार निभाने के लिए एक आदमी की जरूरत थी जो अच्छा गाता भी हो। इसलिए ज्योति स्टूडियो में शूटिंग के साथ-साथ फकीर के रोल के लिए ऑडिशन भी चल रहा था। कई गायक आए थे। इसी समय कई साइलेंट फिल्मों में काम कर चुके स्टेज एक्टर वजीर मोहम्मद खान किसी काम के सिलसिले में वहां आए। ईरानी ने वजीर खान को भी माइक पकड़ा दिया और गाने को कहा। वजीर ने पश्तो भाषा में एक गीत गाया। ईरानी को उनकी आवाज पसंद आ गई और बूढ़े फकीर के रोल के लिए उनका

सिलेक्शन हो गया।

29 साल के जगान वजीर मोहम्मद खान ने बूढ़े फकीर का गेटअप लिया और कैमरे के सामने फिल्म आलम आरा का पहला गीत डांडे दे खुदा के नाम पर प्यारेड गाया। यह गीत एक प्रार्थना गीत था।

उस समय पार्श्व गायन यानि प्लेबैक सिंगिंग की सुविधा नहीं थी। इसलिए वजीर मोहम्मद खान ने शूटिंग के समय गाने को खुद अपनी आवाज में लाइव ही गाया। उनकी आवाज को रिकॉर्ड करने के लिए माइक्रोफोन को उनके पास ही छुपा कर रख दिया गया था। इस गीत में संगीत देने का जिम्मा फिरोजशाह मिस्त्री और बहराम ईरानी ने उठाया। उन्होंने कैमरे की नजर से बचाकर हारमोनियम और तबला बजाने वालों को बैठा दिया। टानर सिंगल सिस्टम कैमरे में वजीर मोहम्मद खान की तस्वीरों के साथ ही उनके द्वारा लाइव गाया गया गीत 'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे' सफलतापूर्वक रिकॉर्ड हो गया।

इस तरह फिल्म आलम आरा का पहला गीत 'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे' भारतीय सिनेमा का पहला गीत बना और इस गीत को अपनी आवाज में लाइव गाने वाले अभिनेता वजीर मोहम्मद खान भारतीय सिनेमा के पहले गायक बने। आपको बताते चलें कि वजीर मोहम्मद खान भारतीय सिनेमा के पहले गायक थे, लेकिन वे भारतीय सिनेमा के पहले पार्श्वगायक यानी प्लेबैक सिंगर नहीं थे। फिल्म आलम आरा के बाकी छह गाने अभिनेत्री जुबैदा ने अपनी आवाज में गाए थे।

उस जमाने में चालीस हजार रुपये

में तीन महीने में बनकर तैयार हुई भारतीय सिनेमा के इतिहास की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' का पहला शो शनिवार, 14 मार्च 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा हॉल में दोपहर तीन बजे शुरू हुआ। इस फिल्म के पोस्टर पर लिखा था...

'ऑल टॉकिंग, सिंगिंग एंड डांसिंग फिल्म।' अपने रिलीज के पहले ही यह फिल्म इतनी लोकप्रिय हो गई थी कि शो के छह घंटे पहले सुबह नौ बजे से ही लोग सिनेमा हॉल पहुंचने लगे थे। सिनेमा हॉल के बाहर भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बुलानी पड़ी थी। टिकट ब्लैक में बिके। भारत की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' को लेकर दीवानगी इतनी थी कि यह फिल्म छह सप्ताह तक लगातार हाउसफुल रही।

यह दुर्भाग्य की बात है फिल्म 'आलम आरा' का प्रिंट नष्ट हो गया है। इस फिल्म का कोई भी प्रिंट आज मौजूद नहीं है। इस फिल्म के दृश्यों के कुछ स्टील फोटोज आज उपलब्ध हैं, जिन्हें देखकर इस फिल्म की भव्यता का अनुमान लगाया जा सकता है।

पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' की कहानी में थोड़ा बहुत बदलाव करके 1956 और 1973 में 'आलम आरा' के नाम से दो फिल्में और बनी। मजे की बात यह है कि इन दोनों फिल्मों में वजीर मोहम्मद खान ने ही फकीर की भूमिका अदा की और अपनी आवाज में ही अपना पहला गीत 'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे' गाया था।



# सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुंचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....

पता.....

.पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....

ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

**Sach Ki Dastak**

**ब्रजेश कुमार**

A/c. No. : 13751652000024

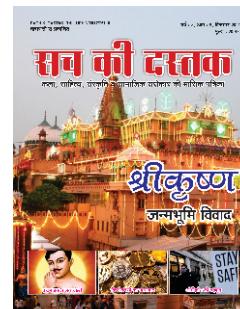
**सम्पादक, सच की दस्तक**

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924



# गर्मियों में हीट स्ट्रोक से जान भी जा सकती है

एडिशनल सीएमओ डॉक्टर उमा शरण पांडे ने कहा कि सरकार की योजना के तहत हम लोग प्रत्येक घरों में गर्मी के दिनों में ओआरएस का पैकेट बटवाते हैं। इसके अलावा नींबू पानी चीनी को देने के लिए लोगों को जागरूक करते हैं। घर का बना हुआ दही मट्ठा का प्रयोग करने की शाराबी हम लोग देते हैं। सरकारी अस्पतालों में हम लोगों ने गर्मी को देखते हुए बेड भी सुरक्षित रखे हैं। साथ ही हमारे पास वातानुकूलित कमरे भी होते हैं जिससे टैंपरेचर बढ़ ना सके और रोगी को राहत मिल सके। उसकी उचित चिकित्सा की भी व्यवस्था हम लोग ने उपलब्ध करा रखी है सरकार की मंशा है की प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित रहें जिससे प्रदेश खुशहाल रहे।



डॉ उमा शरण पांडेय एडिशनल सीएमओ आजमगढ़ की सच की दस्तक के संपादक से सीधी बात

देश के कई राज्यों में भीषण गर्मी अपना पुराना रिकॉर्ड तोड़ रही है। गर्मी के कारण लोगों का घर से निकलना भी काफी मुश्किल हो गया है। देश के कई इलाकों में पारा 45 डिग्री तक पहुंच गया है और लोग हीट-स्ट्रोक से बचे रहने के कई तरीके अपना रहे हैं। कई लोग सही मायने में हीट-स्ट्रोक के बारे में सही तरह से नहीं जानते।

हीट स्ट्रोक या सन स्ट्रोक को आम भाषा में 'लू लगना' बोलते हैं। ये तब होता है, जब आपका शरीर अपने तापमान को कंट्रोल नहीं कर पाता।

हीट-स्ट्रोक होने पर शरीर का तापमान तेजी से बढ़ता है और कम नहीं

हो पाता। जब किसी को लू लगती है तो शरीर का स्वेटिंग मैकेनिज्म यानी पसीना तंत्र भी फेल हो जाता है और इंसान को बिल्कुल पसीना नहीं आता। हीट-स्ट्रोक की चपेट में आने पर 10 से 15 मिनट के अंदर शरीर का तापमान  $106^{\circ}\text{F}$  या इससे अधिक हो सकता है। समय रहते इसका इलाज नहीं किया गया तो इंसान की मौत या ऑर्गान फेल भी हो सकता है।

आइए हीट स्ट्रोक के बारे में आमने सामने सीधी बात करते हैं आजमगढ़ के एडिशनल सीएमओ डॉ उमा शरण पांडेय से

**हीट स्ट्रोक क्या होता है?**

इस प्रश्न के जवाब में डॉक्टर उमा शरण पांडे ने कहा कि अचानक से शरीर में टैंपरेचर का बढ़ जाना अंदर तरल पदार्थ की कमी, धूप की वजह से,



इलेक्ट्रोलाइट में बदलाव होने लगता है, ब्रेन में दिक्कत एक साथ सारी परेशानी हो जाती है तो इसे ही हीट स्ट्रोक हिंदी में लू लगना कहते हैं।

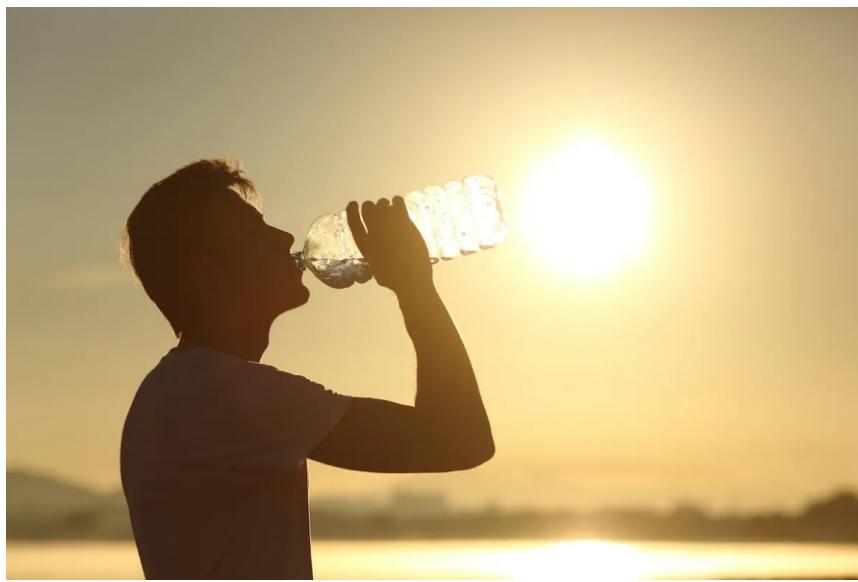
गर्मी की कड़ी धूप में गर्म हवा के कारण अचानक हीट स्ट्रोक हो जाए तो व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

इस प्रश्न के जवाब में डॉ उमा शरण पांडेय ने कहा कि सबसे पहले उसे हवादार वाली स्थान पर ले जाना चाहिए तुरंत ही उसे ORS पाउडर वाला घोल या उपलब्ध ना होने पर नींबू चीनी पानी घोल देना चाहिए इसके बाद उसके शरीर के तापमान की जांच होनी चाहिए यदि उल्टी हो रही है बदन दूट रहा है ऐसी परिस्थिति में चिकित्सक से तुरंत सलाह लेनी चाहिए जब तक चिकित्सक के पास ले जाते हैं उस समय तक उसके शरीर का इस स्पंजीकरण करें।

**हीट स्ट्रोक जैसी बीमारी से बचने के लिए गर्मी के दिनों में व्यक्ति को कितना पानी पीना चाहिए**

इसके प्रत्युत्तर में एडिशनल सीएमओ ने कहा कि गर्मी के दिनों में 4 से 5 लीटर व्यक्ति को पानी जरूर पीना चाहिए। क्योंकि गर्मी के दिनों में पसीने से या अन्य प्रक्रियों से पानी शरीर से बाहर निकल जाता है व्यक्ति को धूप में निकलने से पहले पानी ले ले या फल के रूप खीरा ले ले या दही, मट्ठा ले ले, हर 4 घंटे पर यूरिन का पास होना भी जरूरी होता है। खाली पेट कभी ना निकलें।

**गर्मी के दिनों में अचानक बॉडी का टैंपरेचर बढ़ने से ब्रेन हेमरेज का भी खतरा बना रहता है ऐसी कंडीशन में क्या करना चाहिए?**



इस प्रश्न के जवाब में डॉ शरण ने का लेवल गिरता है।

कहा कि ब्रेन हेमरेज की संभावना होने पर तत्काल चिकित्सक के पास जाना चाहिए अचानक तापमान बढ़ने से इसकी संभावना हो सकती है उल्टी दस्त के साथ ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति बेहोश भी हो

जाता है तत्काल ऐसी परिस्थिति में उसे ठंडे स्थान पर ले जाकर शरीर को ठंडे पानी से स्पंज करना चाहिए। डॉक्टर की सलाह से तुरंत दवा लेनी चाहिए जिससे डिहाइड्रेशन और बी पी को मेंटेन किया जा सके, लड़ प्रेशर की निरंतर जांच करनी चाहिए।

**गर्मी की छुट्टियां हो रही हैं बच्चों को हीट स्ट्रोक से कैसे बचाना चाहिए?**

इस प्रश्न के जवाब में डॉ उमा शरण ने कहा कि बच्चों को ऐसे तो धूप में ना ले जाए लेकिन जरूरत पड़े तो टोपी व फुल शर्ट लड़कियों को भी पूरे शरीर ढक के हो ऐसे कपड़े पहना चाहिए साथ में पानी ले जाना चाहिए, समय-समय पर उसे पानी देना चाहिए, बाजार की चीजें बच्चों को नहीं देनी चाहिए, तली हुई चीजें नहीं देनी चाहिए क्योंकि इससे भी शरीर में पानी

गर्मी को ध्यान में देखते हुए हीट स्ट्रोक की घटना ज्यादा घटित होती है ऐसे में सरकार की योजनाएं क्या हैं जो आप जैसे सरकारी चिकित्सक के माध्यम से चलाई जा रहे हैं?

इस प्रश्न के जवाब में एडिशनल सीएमओ डॉक्टर उमा शरण पांडे ने कहा कि सरकार की योजना के तहत हम लोग प्रत्येक घरों में गर्मी के दिनों में ओआरएस का पैकेट बटवाते हैं। इसके अलावा नींबू पानी चीनी को देने के लिए लोगों को जागरूक करते हैं। घर का बना हुआ दही मट्ठा का प्रयोग करने की सलाह हम लोग देते हैं। सरकारी अस्पतालों में हम लोगों ने गर्मी को देखते हुए बेड भी सुरक्षित रखे हैं। साथ ही हमारे पास वातानुकूलित कमरे भी होते हैं जिससे टैंपरेचर बढ़ ना सके और रोगी को राहत मिल सके। उसकी उचित चिकित्सा की भी व्यवस्था हम लोग ने उपलब्ध करा रखी है सरकार की मंशा है की प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित रहें जिससे प्रदेश खुशहाल रहें। ■ ■

# श्रीखंड बनाना सीखें



श्रीखंड एक भारतीय मिठाई है जिसे ठंगी हुई दही और चीनी से बनाया जाता है। यह मुख्यतः गुजरात और महाराष्ट्र में लोकप्रिय है और इन दोनों राज्यों के प्रमुख मिष्ठानों में से एक है।

श्रीखंड शब्द सांस्कृत शब्द 'शिखारिणी' यानि दही जिसमें दही और अन्य स्वादवर्धक पदार्थ जैसे केसर, फल, मेरे और कपूर मिलाये गये हों, से आया है। इसकी उत्पत्ति क्षीर (दूध) और खांड (चीनी) से भी मानी जाती है।

## श्रीखंड बनाने की सामग्री

- 1 किलो दही
- 3 चम्मच मलाई
- काजू और बादाम की कतरन
- 5 चम्मच पिसी हुई चीनी
- केसर के धागे

## श्रीखंड बनाने की विधि

श्रीखंड बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण दही होता है।

आप दही जमाने के लिए गाढ़ा या मलाईदार दूध का ही उपयोग करें क्योंकि दही बिल्कुल गाढ़ा जमना चाहिए इससे ही श्रीखंड का स्वाद बढ़ता है।

सबसे पहले हम एक बर्तन लेंगे और उसके ऊपर एक सूती कपड़ा रख देंगे। फिर सूती कपड़े के ऊपर दही निकाल लेंगे। दही निकालने के बाद हम दही गाले कपड़े को अच्छे से निचोड़ कर दही का पानी बर्तन में निकाल देंगे।

फिर बर्तन का पानी एक बर्तन में निकाल कर साइड में रख देंगे और बर्तन के ऊपर एक छलनी रख देंगे। छलनी के अंदर हम दही गाला कपड़ा बांध कर रख देंगे।

दही को 10-12 घंटे के लिए प्रिज में रखना है। इससे दही का सारा पानी निकल जाएगा। 10-12 घंटे बाद हम दही को एक बर्तन में निकालेंगे और उसे अपने हाथों से अच्छे तरीके से फेंट लेंगे।

दही को फेंटकर बिल्कुल मलाईदार व चिकना करना है।

फिर हम दही में मलाई, पिसी हुई चीनी, केसर के धागे, काजू और बादाम की कतरन डाल इसे अच्छे से मिक्स कर लेंगे।

अब हम श्रीखंड को एक बर्तन में निकाल कर बादाम और काजू की कतरन के साथ सर्व करें।



# लव जिहाद का काला चिट्ठा खोलती फिल्म - द केरल स्टोरी

फिल्म के निर्देशक सुदीप्तो सेन के अनुसार हमने ऐसे सत्य को उद्घाटित किया हैं जिसने दशकों से हमारी मां- बेटियों की जिंदगी नरक बना दिया है।

जिन तीन लड़कियों की जिंदगी पर यह फिल्म है उनमें से एक के माता-पिता ने कैमरे पर बात की है। दूसरी लड़की ने स्वयं अपनी व्यथा बयां की है। मुख्य किरदार की मां कैमरे पर नहीं आती लेकिन यह जानकारी देती है। तीनों लड़कियों के माता-पिता आज भी न्याय की आस में हैं। यह फिल्म प्रेम के नाम पर छल करने वालों का भंडाफोड़ करती है और लव जिहाद करने वालों के खिलाफ सख्त कानून की मांग करती है।



मुख्य कलाकार- अदा शर्मा, योगिता बिहानी, सोनिया बलानी, सिद्धि इदनानी।

निर्देशक - सुदीप्तो सेन।

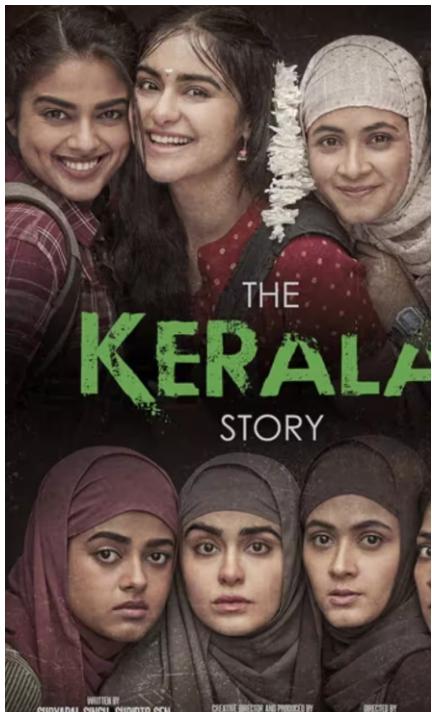
क्रिएटिव डायरेक्टर और प्रोड्यूसर- विपुल शाह।

धर्म परिवर्तन की आड़ में लड़कियों को आतंकी बनाने पर बनी यह फिल्म आज चर्चा में है। लव जिहाद के जरिए हिंदू लड़कियों को आतंकी संगठन में भेजने का षड्यंत्र कितना भयावह होता है यह फिल्म उसकी तस्वीर दिखाती है। फिल्म के प्रदर्शन को रुकवाने के लिए सुप्रीम कोर्ट तक मामला पहुंच गया। कुछ राज्यों ने इस फिल्म पर बैन लगा दिया तो कुछ राज्यों ने इस फिल्म को टैक्स फ्री कर दिया है। सात सालों की कड़ी मेहनत, तीन सौ घंटे के वीडियो रिसर्च और पांच सौ केस स्टडीज के आधार पर बनी फिल्म डद केरल स्टोरीड केरल के उन हिंदू लड़कियों की कहानी है जिनका लव जिहाद की आड़ में धर्मांतरण

हारवाग़र आतंकी संगठन आईएसआईएस के गिरोह में शामिल करवा दिया जाता है। पहले हिंदू लड़कियों को प्रेम के जाल में फँसाया जाता है प्रलोभन देखकर सुनहरे भविष्य का सपना दिखाया जाता है फिर आतंकी संगठन आईएसआईएस में शामिल करके लड़की को नर्क जीवन जीने को मजबूर कर दिया जाता है। डइस फिल्म को देखकर इस बात की आशा की जा सकती है कि इससे देश की बेटियों की जिंदगी पर सकारात्मक असर पड़ेगाड़।

फिल्म द केरल स्टोरी में कोई बड़ा फिल्मी स्टार नहीं है ना ही ग्लैमरस अभिनेत्रियां हैं। इसके बावजूद यह फिल्म सफलता की ओर बढ़ती जा रही है। इसके पीछे कारण है इस फिल्म की कहानी। फिल्म की कहानी शुरू होती है जेल में बन्द और ईरानी-अफगानिस्तानी जांच अधिकारियों से घिरी फातिमा उर्फ शालिनी उच्चकृष्णन (अदा शर्मा) की पूछताछ से। शालिनी अपने भयावह और





दर्दनाक अतीत की दास्तान बयां करते हुए कहती है....' मैंने आईएसआईएस कब ज्वाइन किया यह जानने के लिए यह जानना जरूरी है कि कैसे और क्यों हो ज्वाइन किया। फिर शुरू होती है बैकस्टोरी और उसकी बीती जिंदगी की फाइल खुलने लगती है। केरल के एक नर्सिंग कॉलेज में अलग-अलग जगहों से नर्सिंग की पढ़ाई करने आई चार लड़कियां शालिनी (अदा शर्मा), गीतांजलि (सिद्धि इदनानी), नीमाह (योगिता बिहानी) और आसिफा (सोनिया बलानी) रुममेट हैं और गहरी दोस्त हैं। इन दोस्तों में से आसिफा का मकसद पढ़ाई की आड़ में अपने खौफनाक मंसूबों को अंजाम देना है। आसिफा के पास अपने रुममेट्स को अपने परिवार और धर्म से दूर ले जाकर और इस्लाम में परिवर्तित करने का एक गुप्त एजेंडा है। इसके लिए वह अपने दो नकली भाइयों रमीज (प्रणय पचौरी) और अब्दुल (प्रणव मिश्रा) का सहारा लेती है

और ऐसा जाल बिछाती है कि लड़कियां कट्टरपंथी बन जाए। वह अपने नकली भाइयों की मुलाकात इन लड़कियों से कराती है। एक दिन अचानक मॉल में एक घटना घटती है जिसमें तीनों लड़कियों के कपड़े फाड़ दिए जाते हैं और वहां मौजूद लोग मूकदर्शक बने रहते हैं। इस घटना के बाद शालिनी की रमीज और गीतांजलि की अब्दुल से नजदीकियां बढ़ती हैं। उन्हें प्यार हो जाता है। उनका ब्रेनवाश करने के लिए उन्हें नशे की दवाइयां दी जाती हैं। परिवार के प्रति नफरत और धर्म को लेकर अविश्वास पैदा किया जाता है। शालिनी को प्यार की जाल में फँसाने वाला रमीज उसे गर्भवती कर देता है। आसिफा की चाल में फँस कर शालिनी अपने समाज के डर से इस्लाम कबूल कर लेती है। किसी अनजान मर्द से निकाह कर भारत छोड़ पाकिस्तान और अफगानिस्तान के रास्ते सीरिया भाग जाती है। आगे का सफर शालिनी के लिए और भी भयानक साबित होता है। यहां भारत में उसकी दोनों सहेलियों गीतांजलि और नीमाह को भी नर्क से गुजरना पड़ता है। अदा शर्मा ने शालिनी से फातिमा बनने के सफर को बहुत शिद्दत के साथ रुपहले पर्दे पर जीवंत किया है। अदा शर्मा ने शालिनी के रूप में जहां एक और अपनी मासूमियत बिखेरी तो दूसरी तरफ फातिमा के रूप में डर, बेबसी, आक्रोश और पीड़ा को बखूबी चित्रित किया है। फिल्म में अदा का काम सराहनीय है। बाकी तीनों अभिनेत्रियों योगिता बिहानी, सोनिया बलानी और सिद्धि इदनानी ने भी अपने किरदार के साथ पूरा न्याय किया है। फिल्म में ऐसे कई संगाद हैं जो प्रभाव छोड़ते हैं और याद रह जाते हैं.... इएक

गरीब को लाओ खानदान से जुदा करो जिसमानी रिश्ते बनाओ जरूरत पड़ने पर उसको प्रेग्नेंट करो और जल्द से जल्द उसको अगले मिशन के लिए हैंड ओवर करोड़। हिंदू लड़कियों का ब्रेनवाश करने के लिए हिजाब पहने एक लड़की उनसे पूछती है.....तुम लोग किस गॉड को मानता है। उत्तर मिलता है शिव। तब कहा जाता है कि जो गॉड पत्नी के मरने पर आम इंसानों की तरह रोता हो वह कैसा भगवान। फिल्म के सिनेमैटोग्राफर प्रशांतनु मोहपात्रा ने केरल से लेकर पाकिस्तान - अफगानिस्तान के बॉर्डर तक को उम्दा तरीके से दर्शाया है।

फिल्म के क्रिएटिव डायरेक्टर और प्रोड्यूसर विपुल शाह के अनुसार....' उन्होंने इस फिल्म का निर्माण इसलिए किया क्योंकि इसकी कहानी बेहद शॉकिंग है। अगर देश के किसी हिस्से में ऐसी घटना घट रही है तो यह सबके सामने आना चाहिए।

फिल्म के निर्देशक सुदीप्तो सेन के अनुसार हमने ऐसे सत्य को उद्घाटित किया हैं जिसने दशकों से हमारी मां-बेटियों की जिंदगी नरक बना दिया है।

जिन तीन लड़कियों की जिंदगी पर यह फिल्म है उनमें से एक के माता-पिता ने कैमरे पर बात की है। दूसरी लड़की ने स्वयं अपनी व्यथा बयां की है। मुख्य किरदार की मां कैमरे पर नहीं आती लेकिन यह जानकारी देती है। तीनों लड़कियों के माता-पिता आज भी न्याय की आस में हैं। यह फिल्म प्रेम के नाम पर छल करने वालों का भंडाफोड़ करती है और लव जिहाद करने वालों के खिलाफ सख्त कानून की मांग करती है। ■ ■

# गेम में हार के बावजूद कंबोडिया की धाविका ने जीता दिल

प्रथम स्थान पर रहने वाली एथलीट ने 6 मिनट पहले ही दौड़ पूरा कर लिया था। बोउ समनांग ने एक साक्षात्कार में कहा कि मैं एनीमिया से पीड़ित हूं।

इवेंट के दिन उनकी तबीयत खराब थी। ऐसे में मैं धीरे-धीरे दौड़ रही थी। मैं दौड़ को पूरा करना चाहती थी। इवेंट शुरू होने से पहले मुझे अंदाज था कि शायद और पूरा करने से पहले बारिश शुरू हो जाएगी। पर मैंने तय किया था कि दौड़ को पूरा करूंगी और मैंने ऐसा किया भी।

दिल में मैं सोच रही थी कि मैं कंबोडिया का प्रतिनिधित्व कर रही हूं। स्टेडियम में लोगों का पूरा साथ मिला था। इसलिए बारिश होने के बावजूद मैंने दौड़ पूरा किया ऐसे मेरे पास दौड़ को बीच में छोड़ने की स्वतंत्रता थी।



मनोज उपाध्याय  
खेल सम्पादक



साउथ ईस्ट एशियन गेम में एनीमिया से पीड़ित कंबोडिया की महिला धावक बोउ समनांग

ने बारिश में भीग कर 5000 मीटर की दौड़ पूरा किया। बारिश होने के बावजूद वर्ल्ड ट्रेड पार्क 90 सेकंड तक अकेले दौड़ती रही और अपनी दौड़ पूरा किया।

सभी लोगों ने कंबोडिया किस महिला धावक के जब्बे की तारीफ की है। इंटरनेशनल ओलंपिक कमेटी की ऑफिशियल वेबसाइट पर सैमसंग का इंटरव्यू 16 मई को जारी होने के बाद एक वीडियो भी बहुत तेजी से वायरल हुआ था।

साउथ ईस्ट एशियन गेम 5 मई से 17 मई तक कंबोडिया में हुए। 15 मई को विमेंस की 5000 मीटर की दौड़ का आखिरी इवेंट था। सभी एथलीटों के दौड़ पूरा करने से पहले ही बारिश शुरू हो गई। जब ट्रैक पर कंबोडिया की बोउ समनांग

अकेले थी और वे दौड़ अभी पूरा नहीं कर पाई थी। तभी बारिश तेज हो गई लेकिन बारिश में भीगते हुए बोउ समनांग ने दौड़ पूरा किया। इस दौरान वहां पर मौजूद लोग ताली बजाकर उनकी हौसला अफजाई करते हुए दिखाई पड़े।

प्रथम स्थान पर रहने वाली एथलीट ने 6 मिनट पहले ही दौड़ पूरा कर लिया था। बोउ समनांग ने एक साक्षात्कार में कहा कि मैं एनीमिया से पीड़ित हूं।

इवेंट के दिन उनकी तबीयत खराब थी। ऐसे में मैं धीरे-धीरे दौड़ रही थी। मैं दौड़ को पूरा करना चाहती थी। इवेंट शुरू होने से पहले मुझे अंदाज था कि शायद और पूरा करने से पहले बारिश शुरू हो जाएगी। पर मैंने तय किया था कि दौड़ को पूरा करूंगी और मैंने ऐसा किया भी।

दिल में मैं सोच रही थी कि मैं कंबोडिया का प्रतिनिधित्व कर रही हूं। स्टेडियम में लोगों का पूरा साथ मिला था। इसलिए बारिश होने के बावजूद मैंने दौड़



पूरा किया ऐसे मेरे पास दौड़ को बीच में छोड़ने की स्वतंत्रता थी। पर मैंने ऐसा नहीं किया मैं नहीं चाहती थी कि जो उसे देखने आए हैं उससे भी निराशा न हो। जब तक उपस्थित जनसमूह का साथ मिला मैंने दौर पूरा कर लिया।

कंबोडिया के प्रधानमंत्री हुन सेन ने बोउ समनांग धावक को सलाम करते हुए 10 हजार डालर का इनाम दिया। उन्होंने कहा कि मेरी पत्नी वॉइस बोउ समनांग से काफी प्रभावित हुई हैं और यह इनाम उनकी तरफ से दिया गया है।

सोशल मीडिया पर लोगों ने बोउ समनांग को असली चैंपियन माना। लोग कहते हुए दिखे की दौड़ जिसने भी जीता हो लेकिन असली चैंपियन तो समनांग ही है।



# गीत



प्रोफेसर राजेश तिवारी विरल  
हिन्दी विभाग  
डी.ए-वी.कालेज, कानपुर,

शब्दों के वह बोल समझना,  
ही मेरा विश्वास है।  
पथर में वह लिखे गए हैं,  
यह मुझको आभास है।

जाने कितनी दूर पथिक है,  
पथ भी उसका है अनजाना।  
फिर भी अन्तर्मन कह देता,  
कुछ तो है जाना पहचाना।  
उन साँसों की मोहक खुशबू,  
इतनी दूर चली आती है।  
उस सुगंध की मादकता ही,  
मन को बहुत भली भाती है।  
मन तो मन है मान सके क्या,  
मन जब उसके पास है।

एक परिन्दा उड़ जाने को,  
अपने पंख पसार चुका है।  
नभ भी उस ऊँची उड़ान हित,

अपनी राह बुहार चुका है।  
उस पंछी के अरमानों में,  
मिलने का अदम्य साहस है।  
नेह - कलश में भरे प्रणय का,  
पावन सा कुछ अमृत रस है।  
उड़ जाने को उस पक्षी को,  
खुला हुआ आकाश है।

उसने कहा सुना जो मैंने,  
यह मन की मनमीत कहन है।  
उस अनजान भरोसे पर ही,  
मेरे मन की लगी लगन है।  
इधर कहा था तुमने जो कुछ,  
उधर अमिट अक्षर बन जाते।  
जो देखे थे सपने मन ने,  
वह सपने भी स्वर बन जाते।  
सपनों का सच हो जाना ही,  
मन का नव मधुमास है।



# G7 की बैठक से चीन को दी गई कड़ी चेतावनी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों के साथ द्विपक्षीय बैठक की। नेताओं ने बैस्टिल दिवस के लिए प्रधानमंत्री की आगामी फ्रांस यात्रा पर चर्चा की और भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी में प्रगति का जायजा लिया। बैठक के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से ट्रीट कर बताया गया कि दोनों नेताओं ने मुलाकात के दौरान द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं का जायजा लिया। विदेश मंत्रालय ने इससे पहले कहा था कि मोदी 14 जुलाई को पेरिस में होने वाली बैस्टिल डे परेड में विशिष्ट अविधि के रूप में शामिल होंगे। भारतीय सशस्त्र बलों की एक दुकड़ी भी अपने फ्रांसीसी समकक्षों के साथ परेड में भाग लेगी।



दुनिया की सात विकसत इकोनॉमी के संगठन G7 ने साझा स्टेटमेंट में चीन को कड़ी चेतावनी दी है। संगठन ने चीन का नाम लिए बिना दुनिया से एक देश का आर्थिक दबदबा खत्म करने की शपथ ली।

जापान के हिरोशिमा शहर में संगठन की मीटिंग की के बाद ज्वाइंट स्टेटमेंट जारी किया गया था। इस स्टेटमेंट में कहा गया था कि G7 और उसके साथ उनके सहयोगी देशों के आर्थिक हालातों को हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया गया तो परिणाम भुगतना होगा।

किसी एक देश के आर्थिक दबदबे को रोकने के लिए जरूरी कदम उठाए जाएंगे। G7 देशों ने चीन से अपील की कि वह यूक्रेन से जंग खत्म करने के लिए रूस पर दबाव बनाए। हिरोशिमा में G7 देशों ने

मिलकर यूक्रेन की मदद करते रहने का वादा किया है। इधर अमेरिका ने दूसरे देशों से अपने F16 फाइटर जेट्स यूक्रेन को देने के लिए लगाई गई पाबंदी हटा ली है। इससे यूक्रेन को अपना एयर डिफेंस मजबूत करने में मदद मिलेगी। G7 में भारत को इस बार बतौर गेस्ट न्योता दिया गया था। इसमें शामिल होने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जापान पहुंचे थे। उन्हें वर्ल्ड लीडर के तौर पर इस समिट में शामिल होने के लिए बुलाया गया था।

जेलेंस्की से मिल बोले पीएम- युद्ध के समाधान के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं करेंगे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जापान के हिरोशिमा में G7 शिखर सम्मेलन से इतर यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से मुलाकात की। पिछले साल शुरू हुए



रूस-यूक्रेन संघर्ष के बाद दोनों नेताओं के बीच यह पहली बैठक है। यूक्रेन के राष्ट्रपति से मुलाकात के दौरान पीएम मोदी ने कहा, 'यूक्रेन युद्ध दुनिया का एक बड़ा मुद्दा है। मैं इसे सिर्फ अर्थव्यवस्था और राजनीति का मुद्दा नहीं मानता, मेरे लिए यह मानवता का मुद्दा है। भारत और मैं युद्ध के समाधान के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं वह करेंगे।'

### फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों से मिले पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों के साथ द्विपक्षीय बैठक की। नेताओं ने बैसिस्ट दिवस के लिए प्रधानमंत्री की आगामी फ्रांस यात्रा पर चर्चा की और भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी में प्रगति का जायजा लिया। बैठक के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से ट्रीट कर बताया गया कि दोनों नेताओं ने मुलाकात के दौरान द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं का जायजा लिया। विदेश मंत्रालय ने इससे पहले कहा था कि मोदी 14 जुलाई को पेरिस में होने वाली बैसिस्ट डे परेड में विशिष्ट अतिथि



के रूप में शामिल होंगे। भारतीय सशस्त्र बलों की एक टुकड़ी भी अपने फ्रांसीसी समकक्षों के साथ परेड में भाग लेगी। इसमें कहा गया है कि भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया है।

### जर्मनी के चांसलर से मिले पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ बैठक की, जिसमें दोनों नेताओं ने

द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की और क्षेत्रीय घटनाक्रम एवं वैश्विक चुनौतियों पर विचारों का आदान प्रदान किया। दोनों नेताओं ने हिरोशिमा में विकसित देशों के समूह जी-7 शिखर बैठक से इतर मुलाकात की। विदेश मंत्रालय ने ट्रीट किया, "दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति का सकारात्मक मूल्यांकन एवं समीक्षा की तथा क्षेत्रीय घटनाक्रमों एवं वैश्विक चुनौतियों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।" मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने भारत-यूरोपीय संघ कारोबार एवं निवेश समझौते एवं भारत की जी-20 समूह की अध्यक्षता को समर्थन देने के लिए जर्मनी का स्वागत किया।

जापान के हिरोशिमा में हुए जी-7 सम्मेलन में भारत को बतौर मेहमान देश के रूप में आमंत्रित किया गया था। भारत के अलावा इस सम्मेलन में इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, वियतनाम और ऑस्ट्रेलिया भी बतौर मेहमान देश शामिल हुए।



# सोनू किन्नर नगरपालिका परिषद अध्यक्ष निर्वाचित, रचा इतिहास

दुर्गाबाड़ी चौराहे से सड़क तिवारीपुर की तरफ जाती है। इस पर सवा किमी चलने के बाद सूरजकुंड ओवरब्रिज पर जाने वाला मोड़ है। इसी मोड़ से सटे मधु कुंज हैं, जहां शहर की पूर्व मेयर किन्नर आशा देवी उर्फ अमरनाथ यादव रहती थीं। मकान के बाहर गेट पर मधु कुंज रमेश यादव, उपनिरीक्षक, केंद्र पुलिस गृह मंत्रालय का बोर्ड लगा हुआ है। अब इस मकान की पहचान उनकी गोद ली हुई बेटी मधु के नाम से है। उनके दामाद रमेश यादव बालापार, टिकरिया गांव के रहने वाले हैं। वर्तमान वह लखनऊ में परिवार संग रहते हैं। उनका एक मकान मोहरीपुर में भी बना हुआ है।



निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर पालिका परिषद पद पर कब्जा किया और इतिहास रच डाला। इसके पूर्व गोरखपुर से मेयर पद पर 2001 में किन्नर आशा देवी जीती थी और इतिहास रचा था।

नगर पालिका परिषद पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर के लिए 13 मई की प्रातः केंद्रीय विद्यालय में मतगणना प्रारंभ हुई 5 राउंड की गिनती के बाद सोनू किन्नर निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपने निकटतम भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी मालती सोनकर को 397 मतों से शिक्षित दी। भाजपा

शिक्षित दिया था। वहीं तीसरे स्थान पर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी रहे।

जानकारी हो कि मतगणना के दौरान प्रत्येक राउंड की समाप्ति के बाद सोनू किन्नर व भाजपा प्रत्याशी के बीच कांटे की टक्कर होती रही कभी सोनू आगे तो कभी मालती सोनकर आगे। लेकिन अंततः सोनू किन्नर ने 18475 मत पाकर अपने निकटतम प्रत्याशी प्रतिद्वंदी भारतीय जनता पार्टी की मालती सोनकर को 397 मतों से शिक्षित दी। भाजपा प्रत्याशी को 18078 मत प्राप्त हुए। अभी घोषणा होने वाली थी कि भाजपा की



समर्थक लोग और किन्नर के समर्थक लोग मतगणना स्थल के आरो रूम में ही आमने सामने आ गए और जमकर उत्पात मचाया भाजपा समर्थकों के प्रार्थना पत्र को संज्ञान में लेते हुए निर्वाचन अधिकारी ने पुनः निरस्त हुए मतपत्रों की मतगणना कराई। उसमें भी सोनू किन्नर भाजपा प्रत्याशी से आगे रहे अंततः मतगणना अधिकारी द्वारा सोनू किन्नर को विजय प्रमाण पत्र दे दिया गया मुगलसराय नगर पालिका परिषद के इतिहास में पहली बार किसी किन्नर ने नगरपालिका का अध्यक्ष पद पाया है। लोगों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी के पिछले चेयरमैन से काफी नाराज जनता थी। जनता ने आरोप लगाया था कि पिछले भाजपा चेयरमैन में कोई काम किया ही नहीं जो लोगों के हित में हो और जनता को दिखे इसके खुन्नस में भाजपा के विरुद्ध सोनू किन्नर को अपना मत देकर जिता दिया। बातचीत के दौरान सोनू किन्नर ने कहा कि नगर पालिका परिषद का विकास होगा जो जनता देखेगी हम लोग तो गली-गली से वाकिफ हैं ऐसे



में आने वाला समय ही यह बता देगा कि मोहरीपुर में भी बना हुआ है।

हम लोग क्या कर सकते हैं मेरा मूल रिक्षा पर लाल बत्ती लगाकर उद्देश्य सभी के साथ में न्याय और विकास चलती थीं मेयर आशा देवी के कार्य है।

एक जानकारी के मुताबिक वर्ष 2001 के निकाय चुनाव में मेयर की सीट महिला के आरक्षित थी। उस समय प्रदेश सरकार में गोरखपुर में कई मंत्री होने के बावजूद शहर का विकास अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हुआ था। इससे जनता नाराज थी। ऐसे में लोगों ने किन्नर आशा देवी उर्फ अमरनाथ यादव में आशा की किरण नजर आई।

दुर्गाबाई चौराहे से सड़क तिवारीपुर की तरफ जाती है। इस पर सवा किमी चलने के बाद सूरजकुंड ओवरब्रिज पर जाने वाला मोड़ है। इसी मोड़ से सटे मधु कुंज हैं, जहां शहर की पूर्व मेयर किन्नर आशा देवी उर्फ अमरनाथ यादव रहती थीं। मकान के बाहर गेट पर मधु कुंज रमेश यादव, उपनिरीक्षक, केंद्र पुलिस गृह मंत्रालय का बोर्ड लगा हुआ है। अब इस मकान की पहचान उनकी गोद ली हुई बेटी मधु के नाम से है। उनके दामाद रमेश यादव बालापार, टिकिरिया गांव के रहने वाले हैं। वर्तमान वह लखनऊ में परिवार संग रहते हैं। उनका एक मकान

मेयर बनने के बाद भी आशा देवी कार की जगह रिक्षा से चलती थीं। रिक्षे पर लाल बत्ती लगाकर उनके नगर निगम पहुंचने की सूबे में खूब चर्चा रही। दिवंगत आशा देवी के मोहल्ले की रहने वाली सुभावती मल्ल ने बताया कि उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। वह हम लोगों के लिए शुभ थीं। मेयर बनने के बाद भी उनका व्यवहार बिल्कुल नहीं बदला।

**बोली-** बाबू हमको याद है कि उनके मेयर चुने जाने पर खूब हल्ला हुआ। हम लोगों को लगा कि वह बदल जाएंगी, लेकिन वह पहले की तरह से अपने समाज के लोगों के साथ जुड़कर अपना काम भी करतीं रहीं। मोहल्ले में किसी से भी पूछेंगे तो वह उनको अच्छा ही कहेगा। बाद में किडनी की बीमारी से पीड़ित होने की वजह से जून 2013 में आशा देवी का निधन हो गया।



# देश को मिलने वाला है नया संसद भवन

मौजूदा संसद भवन को ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर ने डिजाइन किया था। उस वर्त्त संसद भवन बनकर तैयार होने में 83 लाख रुपये खर्च हुए थे। संसद भवन 566 मीटर व्यास में बना था, लेकिन बाद में ज्यादा जगह की जरूरत पड़ी तो वर्ष 1956 में संसद भवन में दो और मंजिलें जोड़ी गईं। उस समय इस भवन को संसद भवन नहीं बल्कि 'हाउस ऑफ पाल्यामेंट' कहा जाता था। इस हाउस ऑफ पाल्यामेंट में ब्रिटिश सरकार की विधान परिषद काम करती थी और आजादी के बाद से यहां हमारे देश के सांसद बैठने लगे और इसे संसद कहा जाने लगा।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 28 मई को संसद का नवनिर्मित भवन राष्ट्र को समर्पित करेंगे। गुजरात की डिजाइन कंपनी एचसीपी ने इसे तैयार किया है। नया संसद भवन पुराने संसद भवन से कई मामलों में अलग है। आइए जानते हैं नए और पुराने संसद भवन में क्या-क्या अंतर हैं।

पुराने संसद भवन का निर्माण साल 1921 में शुरू हुआ था। ड्यूक ऑफ कनॉट ने 12 फरवरी 1921 को इसकी आधारशिला रखी थी। 18 जनवरी 1927 को तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन ने इसका उद्घाटन किया था। उस समय इसे हाउस ऑफ पाल्यामेंट कहा जाता था।

पीएम नरेंद्र मोदी ने 10 दिसंबर, 2020 को नए संसद भवन की आधारशिला रखी। 28 मई, 2023 को पीएम नरेंद्र मोदी इसका उद्घाटन करेंगे।

पुराने संसद भवन के निर्माण में छह वर्ष का समय लगा था, जबकि नए संसद

भवन को बनाने में तीन साल का समय लगा है।

पुराने संसद भवन में लोकसभा के लिए 543 सीटें, जबकि राज्यसभा के लिए 250 सीटें हैं। वहीं, अगर नए संसद भवन की बात करें तो लोकसभा की 888 सीटें हैं, जबकि राज्यसभा की 300 सीटें हैं।

पुराने संसद भवन का डिजाइन उस दौर के मशहूर ब्रिटिश वास्तुकार एडविन के लुटियन और हर्बर्ट बेकर ने तैयार किया था।

नए संसद भवन की डिजाइनिंग गुजरात की आर्किटेक्चर फर्म एचसीपी डिजाइंस ने की है। एचसीपी डिजाइन इससे पहले गुजरात के गांधीनगर में सेंट्रल विस्टा, राज्य सचिवालय, अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट डिवेलपमेंट जैसे कई प्रोजेक्ट्स डिजाइन कर चुका है।

पुराना संसद भवन 566 मीटर व्यास में बना था। जरूरत के हिसाब से बाद में साल 1956 में संसद भवन में दो



और मंजिलें जोड़ी गई। 2006 में संसद संग्रहालय बनाया गया। इस संग्रहालय में भारत की समृद्ध लोकतांत्रिक विरासत के ढाई हजार वर्षों को प्रदर्शित किया गया है।

नए संसद का क्षेत्रफल 64,500 स्कैपैयर मीटर है। नए संसद भवन का आकार त्रिकोण रूप में है। कहा जा रहा है कि ऐसा इसलिए बनाया गया है, क्योंकि हर एक धर्म में त्रिकोण ज्यामिति का बहुत महत्व है।

पुराने संसद भवन को बनाने में उस दौर में 83 लाख रुपए का खर्च आया था।

एक जानकारी के मुताबिक, नए संसद भवन को बनाने में करीब 1200 करोड़ रुपए का खर्च आया है।

पुराने संसद भवन का निर्माण की गाथा

पुराना संसद भवन लगभग 97 वर्ष पुराना है। इसका निर्माण अंग्रेजों के द्वारा कराया गया था। वहीं 28 मई को पीछे मोदी संसद के नए भवन का उद्घाटन करेंगे, लेकिन इस देश में जबरदस्त विगाद छिड़ा हुआ है।

जानिए पुराने संसद भवन का कब हुआ था निर्माण और किसने किया था उद्घाटन? मात्र इतने रुपयों में तैयार हुई



### थी भव्य इमारत

6 वर्षों में बनकर तैयार हुई थी पुरानी संसद

लेकिन इसी बीच आज हम आपको मौजूदा संसद भवन या यूं कहें कि पुराने संसद भवन के बारे में बताएंगे। इसका निर्माण कब हुआ? इसके निर्माण में कितनी लागत आई? किसने इसका उद्घाटन किया और इस भव्य ईमारत का डिजाइनर कौन था? बता दें कि मौजूदा संसद भवन का शिलान्यास 12 फरवरी साल 1921 में हुए था और इसका निर्माण 6 वर्षों तक चला। इस तरह यह 1927 में बनकर तैयार हुआ।

जब यह संसद भवन बनकर तैयार हुई तब देश में अंग्रेजों की हुक्मत थी और इसका निर्माण भी अंग्रेजी सरकार द्वारा कराया गया था। पुराने संसद भवन का



उद्घाटन 18 जनवरी, 1927 को हुआ था। उस समय देश में सर्वोच्च वायसराय हुआ करते थे और उन्हीं से इस सांसद भवन का

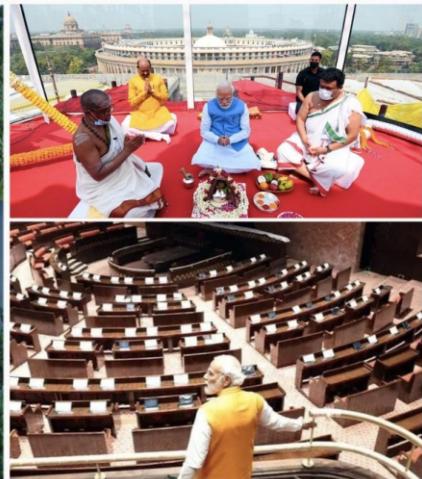
उद्घाटन भी करवाया गया। 1926 से 1931 तक लॉर्ड इरविन भारत के वायसराय थे। इस कारण भारत में संसद भवन के उद्घाटन का सौभाग्य उन्हें ही हाथ लगा। 18 जनवरी, 1927 को लॉर्ड इरविन ने मौजूदा संसद भवन का उद्घाटन किया था।

मौजूदा संसद भवन को ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर ने डिजाइन किया था। उस वक्त संसद भवन बनकर तैयार होने में 83 लाख रुपये खर्च हुए थे। संसद भवन 566 मीटर व्यास में बना था, लेकिन बाद में ज्यादा जगह की ज़रूरत पड़ी तो वर्ष 1956 में संसद भवन में दो और मंजिलें जोड़ी गई। उस समय इस भवन को संसद भवन नहीं बल्कि 'हाउस ऑफ पार्लियमेंट' कहा जाता था। इस हाउस ऑफ पार्लियमेंट में ब्रिटिश सरकार की विधान परिषद काम करती थी और आजादी के बाद से यहां हमारे देश के सांसद बैठने लगे और इसे संसद कहा जाने लगा।



# नए संसद भवन को बनाने में करीब 12सौ करोड़ रुपए खर्च आया है।

राजगोपालचारी जी को दी गयी. जो तमिलियन थे और जिनको राजा जी कहा जाता था, वे ग्रन्थों से जानकारी इकट्ठा किए एक प्रारूप बनाए और सेंगोल एक राजदंड के रूप में तमिलनाडु से बनकर दिल्ली लाया गया. 14 अगस्त 1947 को रात 10 बजकर 45 मिनट पर लार्ड माउंटेन बेटन ने इसको नेहरू जी को सौंपा जो भारत के पहले प्रधान मंत्री बने थे। तदुपरांत सेंगोल को इलाहाबाद संग्रहालय में रख दिया गया था। अब आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तैयार हुए नए संसद भवन में सेंगोल को तमिलनाडु से आए विद्वान लोगों के अधिनम द्वारा प्रधानमंत्री स्वीकार करेंगे. 5 फिट ऊंचाई के चांदी से बने खम्भ पर सोने की परत चढ़े सेंगोल के शीर्ष पर 'नंदी' विराजमान हैं।



नए भवन में भी लोकसभा के मुकाबले राज्यसभा का आकार छोटा है। राज्यसभा में 384 सांसद बैठ सकेंगे। दोनों सदनों के संयुक्त मीटिंग में कुल 1280 सांसद एक साथ बैठ सकेंगे। नए संसद भवन का क्षेत्रफल 64,500 स्कैयैर मीटर है। खूबसूरत इमारत के आसपास हरियाली देखने को मिलेगी। नया संसद भवन टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड ने बनाया। इसकी डिजाइनिंग गुजरात स्थित एक आर्किटेक्चर फर्म एचसीपी डिजाइंस ने तैयार किया है। नए संसद भवन का निर्मित क्षेत्र लगभग 65,000 वर्ग मीटर होगा। इसका त्रिकोणीय आकार इष्टतम स्थान उपयोग सुनिश्चित करता है।

इस संसद भवन सामान्य आगंतुकों के लिए खुला नहीं है जो इसमें ठहलना चाहते हैं। आपको एक विशेष आगंतुक पास प्राप्त करने की आवश्यकता है जिसे संसद सुरक्षा प्रतिष्ठान से प्राप्त किया जा सकता है।

आखिर क्यों आवश्यक था नए

सांसद भवन का निर्माण

वर्तमान संसद भवन वर्ष शिलान्यास 12 फरवरी 1921 को किया गया था। उस समय इस इमारत के निर्माण में करीब 6 साल का समय लगा था और इसके निर्माण में 83 लाख रुपये खर्च हुए थे। तब इस इमारत का उद्घाटन भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड इरविन द्वारा 18 जनवरी 1927 को किया गया था।

भारत में पहली बार संसदीय चुनाव 1951 में हुए थे, उस वक्त लोकसभा की 489 सीटें थीं।

फिलहाल लोकसभा में 543 सदस्य हैं। यह भी सत्य है कि 2026 में परिसीमन होना है, उसके बाद सदस्यों की संख्या और बढ़ जाएगी। नया परिसीमन इसलिए भी जरूरी बताया जा रहा है क्योंकि इस वक्त एक सांसद करीब 25 लाख की आबादी का प्रतिनिधित्व कर रहा है। संविधान के आर्टिकल 81 में कहा गया है कि सदन में 550 से अधिक निर्वाचित



# सबसे 'आधुनिक' भारत की 'नई संसद'



सदस्य नहीं होंगे, जिनमें से 530 राज्यों से और 20 केंद्र शासित प्रदेशों से होंगे।

वर्तमान समय में लोकसभा में सदस्यों की संख्या 543 और राज्यसभा सदस्यों की संख्या 245 है। 2021 में प्रस्तावित जनगणना के साथ ये संख्या बदलेगी और बढ़ेगी। 84वें संविधान संशोधन, 2001 में कहा गया है कि 2026 तक यथास्थिति बरकरार रहेगी। 2026 में परिसीमन के बाद बढ़ने वाले संसद सदस्यों का भार उठाने में वर्तमान संसद भवन की इमारत सक्षम नहीं है। पुरानी बिल्डिंग को बने 100 साल पूरे होने वाले हैं, उसमें इन सबको कैसे फिट किया जाएगा। ये भी बड़ा सवाल है।

नई इमारत बनाने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि मंत्रालयों के ऑफिस अलग-अलग जगहों पर हैं। इस वजह से कॉर्पोरेशन में दिक्कतें आती हैं। नए प्रोजेक्ट में सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी ऑफिस एक ही जगह पर हों।

मौजूदा संसद भवन को बने करीब

सौ साल का समय पूरा होने जा रहा है। इसमें कई जगहों पर मरम्मत की जरूरत है।

वेंटीलेशन सिस्टम, इलेक्ट्रिसिटी सिस्टम, ऑफियो-वीडियो सिस्टम जैसी कई चीजों में सुधार की दरूरत है। इसके अलावा मौजूदा संसद भवन भूकंप रोधी भी नहीं है। इसके पहले कांग्रेस के सरकार के समय में ने संसद भवन के निर्माण की बात हुई थी और 2026 के पूर्व नए संसद भवन निर्माण की वे भी सोच रहे थे लेकिन कार्य में परिणित नहीं हो सका था। उस कांग्रेस सरकार में मंत्री रहे गुलाम नबी आजाद ने खुद इस बात को स्वीकार भी किया है की योजना कांग्रेस की थी लेकिन वह नहीं कर सकी। ऐसे में मोदी सरकार ने नया संसद भवन बनाने का फैसला लिया।

## नए संसद भवन आकर्षण का केंद्र बनेगा सेंगोल

नव निर्मित भारत के नए बने संसद भवन में सेंगोल एक खास आकर्षण के रूप में प्रस्थापित हो रहा है। सेंगोल एक तमिल शब्द है जिसका मतलब है नियम

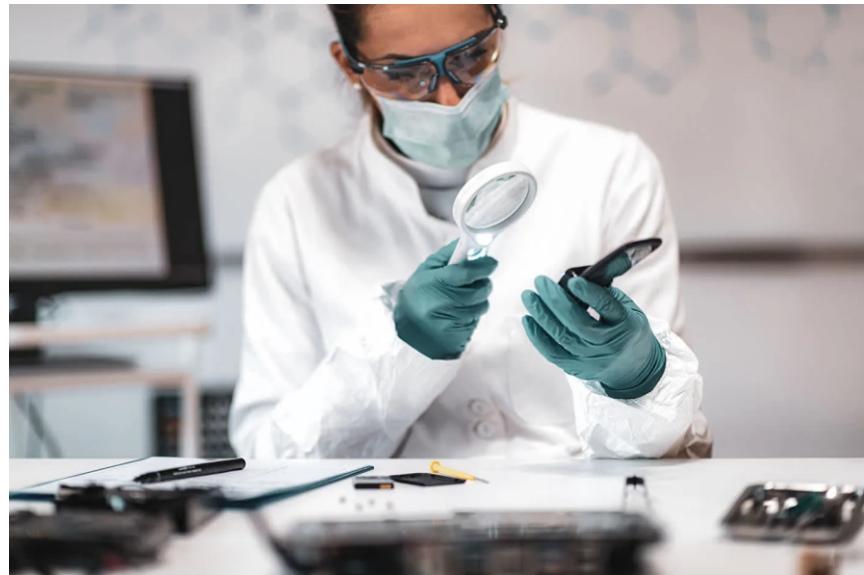
परिपालन। इसे संपदा सम्पन्न राष्ट्र के प्रतीक राज दंड के रूप में सत्ता हस्तांतरण के वक्त स्वीकार किया जाता है। जिसके शीर्ष पर नंदी विराजमान हैं। ऐसा माना जाता है कि सत्ता का हस्तांतरण आध्यात्मिक परंपरा से होना चाहिए। आठवीं सदी में चोला साम्राज्य के समय से यह परंपरा चल रही है। जब अंग्रेज देश को आज़ादी देकर वापस जा रहे थे, अंग्रेजी सत्ता के आखिरी वायसराय लार्ड माउंटबेटन ने पंडित जवाहर लाल नेहरू से पूछा था कि शाशन-हस्तांतरण का तरीका क्या रहे? नेहरू जी भी अनभिज्ञ थे, इसपर मंत्रणा किया गया और जिम्मेदारी सी।

राजगोपालचारी जी को दी गयी जो तमिलियन थे और जिनको राजा जी कहा जाता था, वे ग्रंथों से जानकारी इकट्ठा किए एक प्रारूप बनाए और सेंगोल एक राजदंड के रूप में तमिलनाडु से बनकर दिल्ली लाया गया। 14 अगस्त 1947 को रात 10 बजकर 45 मिनट पर लार्ड माउंटेन बेटन ने इसको नेहरू जी को सौंपा जो भारत के पहले प्रधान मंत्री बने थे। तदुपरांत सेंगोल को इलाहाबाद संग्रहालय में रख दिया गया था। अब आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तैयार हुए नए संसद भवन में सेंगोल को तमिलनाडु से आए विद्वान लोगों के अधिनम द्वारा प्रधानमंत्री स्वीकार करेंगे। 5 फिट ऊंचाई के चांदी से बने खम्भ पर सोने की परत चढ़े सेंगोल के शीर्ष पर 'नंदी' विराजमान हैं।



# 12वीं के बाद फॉरेंसिक साइंस में बनाएं अपना कैरियर

फॉरेंसिक साइंस का स्कोप काफी विस्तृत है। आपको कई सरकारी और प्राइवेट सेक्टर में जॉब मिल सकती है। इससे आपकी स्किल और जानकारी में बढ़ोतरी होगी। डिग्री पूरी होने के बाद आप खुद का बिजनस भी कर सकते हैं। फॉरेंसिक सर्विस ऑफिस खोल सकते हैं। आपको फॉरेंसिक लैब, जासूसों के कार्यालयों, बैंकों और अन्य सरकारी एवं निजी एजेंसियों में नौकरी मिल सकती है। दुनिया भर में अपराध असीमित होते हैं इसलिए इस फील्ड में काफी मौके हैं।



12वीं के बाद फॉरेंसिक साइंस कैरियर का उज्ज्वल भविष्य तलाश का है। फॉरेंसिक साइंस में करियर का अच्छा विकल्प हो सकता है। यह मुख्य रूप से साइंस और क्रिमिनल जस्टिस की स्टडी है। फॉरेंसिक साइंस क्राइम लैब आधारित पेशा है।

फॉरेंसिक साइंस का इस्तेमाल आपराधिक मामलों की जांच और कानूनी प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है। फॉरेंसिक साइंस में क्रिमिस्ट्री, बायोलॉजी, फिजिक्स, जियोलॉजी, साइकोलॉजी, सोशल साइंस, इंजीनियरिंग आदि फील्ड्स शामिल होती हैं। इस फील्ड में काम करने वाले प्रोफेशनल फॉरेंसिक साइंस साइंटिस्ट या फॉरेंसिक साइंस एक्सपर्ट्स कहलाते हैं। फॉरेंसिक साइंस साइंटिस्ट्स टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके क्राइम स्पॉट पर मौजूद सबूतों की जांच करते हैं और अपराधियों को पकड़ने में मदद करते हैं।

इसके लिए वे क्राइम सीन, लड्ड सेंपल, डीएनए प्रोफाइलिंग आदि की जांच करते हैं।

फॉरेंसिक शब्द लैटिन के द्वाहें से आया है। इसका मतलब होता है फोरम का या उससे पहले का यानी किसी घटना से संबंधित या उससे पहले से जुड़ीं चीजें। आमतौर पर घटना से पहले या उसके तुरंत बाद की परिस्थिति से इसका लेनादेना होता है।

## कोर्स

फॉरेंसिक साइंस में करियर बनाने के लिए 12th में साइंस होनी ज़रूरी है। आप फॉरेंसिक साइंस एंड क्रिमिनोलॉजी या फॉरेंसिक साइंस एंड लॉ में एक वर्षीय डिप्लोमा कर सकते हैं। आप फॉरेंसिक साइंस 3 साल की बीएससी, 2 साल की एमएससी भी कर सकते हैं। इस फील्ड में स्पेशलाइजेशन और रिसर्च करने के इच्छुक हों तो फॉरेंसिक साइंस में पीएचडी



और एमफिल भी कर सकते हैं।

### संभावना

फॉरेंसिक साइंस का स्कोप काफी विस्तृत है। आपको कई सरकारी और प्राइवेट सेक्टर में जॉब मिल सकती है। इससे आपकी स्किल और जानकारी में बढ़ोतरी होगी। डिग्री पूरी होने के बाद आप खुद का बिजनस भी कर सकते हैं। फॉरेंसिक सर्विस ऑफिस खोल सकते हैं। आपको फॉरेंसिक लैब, जासूसों के कार्यालयों, बैंकों और अन्य सरकारी एवं निजी एजेंसियों में नौकरी मिल सकती है। दुनिया भर में अपराध असीमित होते हैं इसलिए इस फील्ड में काफी मौके हैं।

### स्पेशलाइजेशन (विशेषज्ञता)

फॉरेंसिक बायोलॉजी, फॉरेंसिक सीरोलॉजी, फॉरेंसिक केमिस्ट्री, फॉरेंसिक टॉक्सिकोलॉजी, फॉरेंसिक बैलिस्टिक्स, फॉरेंसिक एन्टोमोलॉजी, फॉरेंसिक बोटनी

### फॉरेंसिक साइंस के लिए शिक्षण संस्थान (विश्वविद्यालय)

पंजाबी यूनिवर्सिटी, भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी, मणिपाल यूनिवर्सिटी

दिल्ली यूनिवर्सिटी, लखनऊ यूनिवर्सिटी, गुजरात फॉरेंसिक साइंसेज यूनिवर्सिटी

### क्या बन सकते जॉब प्रोफाइल

फॉरेंसिक साइंस से अध्ययन करने के बाद हम इन्वेस्टिगेटिव अफसर

लीगल काउंसिलर बन सकते हैं। साथ ही साथ फॉरेंसिक एक्सपर्ट

फॉरेंसिक साइंटिस्ट, क्राइम सीन इन्वेस्टिगेटर भी बन सकते हैं। इसके आलावा टीचर व प्रोफेसर, क्राइम रिपोर्टर, फॉरेंसिक इंजीनियर, हैंडराइटिंग एक्सपर्ट में भी भाग्य आजमा सकते हैं। नौकरी पाए जाने की प्रबल संभावना कहां-कहां हो सकती हैं?

इंटेलिजेंस ब्यूरो, सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन, सेंट्रल गवर्नमेंट फॉरेंसिक साइंसेज लैब, हॉस्पिटल, प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी, लॉ फर्म में जॉब मिल



सकती है। पुलिस विभाग क्वालिटी कंट्रोल ब्यूरो बैंक यूनिवर्सिटी डिफेंस आर्मी भी आपकी सेवाएं ले सकते हैं।

### कितना कमा सकते हैं (सैलरी)

सरकारी सेक्टर के अलावा प्राइवेट सेक्टर में भी अच्छी सैलरी मिलती है। इस फील्ड में शुरुआती पैकेज 3 से 4 लाख रुपये रोजाना होता है। अनुभव होने पर 6 लाख से 8 लाख रुपये तक महीना कमा सकते हैं।

यदि फॉरेंसिक साइंस के बाद विदेश में अपना भाग आजमाइश करते हैं तो निश्चित तौर पर शुरुआती पैकेज 25 लाख से ऊपर का होगा।



## Get Website

in any language

**Only @ 1499/-**

(Domain + Hosting + Website)

visit : [www.dishahouse.org](http://www.dishahouse.org), email : [contact@dishahouse.org](mailto:contact@dishahouse.org)

# कैंसर रोग का इलाज हुआ आसान

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक कोलोरेक्टल कैंसर विशेषज्ञ डॉ. एलन पी. वेनुक ने कहा कि सभी रोगियों का पूर्ण रूप से स्वस्थ होना 'अभूतपूर्व' है। शोध पत्र के सह-लेखक ने उस क्षण के बारे में बात की जब रोगियों को पता चला कि उनका कैंसर पूरी तरह से ठीक हो गया है। उन्होंने न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया, 'उन सभी की आंखों में खुशी के आंसू थे।'



## कैंसर रोग का इलाज

लंबे समय से कैंसर की बीमारी को लाइलाज बीमारी माना जा रहा है लेकिन शायद अब ऐसी उम्मीद है कि वैज्ञानिकों को कैंसर की बीमारी का इलाज मिल गया है। रेक्टल कैंसर से जूझ रहे मरीजों के लिए वैज्ञानिकों ने एक ऐसा दवा खोज निकाली है, जिसका 6 माह सेवन करने से कैंसर 100 फीसदी ठीक हो जाता है। प्रारंभिक परीक्षणों में यह दवा 100 फीसदी काम कर रही है और फिलहाल इस दवा पर परीक्षण जारी है।

मिली जानकारी के मुताबिक इस छोटे से टेस्ट को फिलहाल 18 रोगियों पर आजमाया गया है, जिन्हें 6 महीने के लिए Dosterlimumab नामक दवा दी गई थी। 6 महीने बाद पाया गया कि इन सभी मरीजों में कैंसर पूरी तरह से ठीक हो गया। हाल ही यह रिपोर्ट न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में प्रकाशित हुई है।

Dosterlimumab एक ऐसी दवा है, जो लैब में तैयार किए गए अणुओं से तैयार की गई है। यह दवा एंटीबॉडी के रूप में कार्य करती है। रेक्टल कैंसर के सभी रोगियों को अद्वैतस्लर्स दवा दी गई और इसका असर देखकर वैज्ञानिक भी हैरान हैं। 6 महीने के बाद सभी मरीज में कैंसर पूरी तरह से खत्म हो गया। एंडोरेक्टिक टेस्ट में भी कैंसर के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिए। न्यूयॉर्क में मेमोरियल स्लोअन केटरिंग कैंसर सेंटर के डॉ. लुइस ए. डियाज़ जे ने कहा कि यह 'कैंसर के इतिहास में पहली बार' था।

क्लिनिकल ट्रायल में शामिल मरीज पहले कैंसर से छुटकारा पाने के लिए कीमोथेरेपी, रेडिएशन और सर्जरी जैसे लंबे और दर्दनाक इलाज से गुजर रहे थे। कैंसर उपचार के इन तरीकों के कारण कई रोगियों में मूत्र या यौन रोग होने की भी आशंका बनी रहती है। 18 कैंसर मरीजों का इग्स ट्रायल अब अगले चरण में है।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक कोलोरेक्टल कैंसर विशेषज्ञ डॉ. एलन पी. वेनुक ने कहा कि सभी रोगियों का पूर्ण रूप से स्वस्थ होना 'अभूतपूर्व' है। शोध पत्र के सह-लेखक ने उस क्षण के बारे में बात की जब रोगियों को पता चला कि उनका कैंसर पूरी तरह से ठीक हो गया है। उन्होंने न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया, 'उन सभी की आंखों में खुशी के आंसू थे।'



## महेंद्र पटेल

भाजपा युवा नेता  
पूर्व नगर अध्यक्ष  
पं. दीन दयाल उपाध्याय नगर  
जनपद- चन्दौली



## सुनील शर्मा

सभासद (भाजपा)  
न्यू मोहाल, पं. दीनन्दयल उपाध्याय नगर  
जनपद चन्दौली

## डॉ ओ पी सिंह

जिला उपाध्यक्ष चिकित्सा प्रकोष्ठ भाजपा  
जनपद चन्दौली  
प्रदेश प्रवक्ता  
नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन (नीमा) उत्तर प्रदेश



## डॉ जेपी यादव

स्वामी विवेकानन्द  
जन कल्याण हॉस्पिटल  
अलीनगर थाना के ठीक  
सामने वाले रोड में  
अलीनगर जनपद चन्दौली  
**आकस्मिक सेवा 24 घण्टे उपलब्ध**



EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

# काशी क्षेत्र से चुने गए सभी मेयर, नगर पालिका, नगर पंचायत के अध्यक्ष, सभी जीत कर आए पार्षद, सभासद को भाजपा (पिछड़ा मोर्चा) की तरफ से बधाई और ढेर सारी शुभकामना



## दीपक कुमार आर्य

(पौत्र- स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय केदारनाथ आर्य वैद्य)

क्षेत्रीय मंत्री, (काशी क्षेत्र)

भाजपा (पिछड़ा मोर्चा)

जनपदीय चेयरमैन व प्रभार पं० बंगाल

विशाल भारत संस्थान जनपद चन्दौली

पं० दीनदयाल नगर, जिला : चन्दौली

भारतीय जनता पार्टी

श्री अखिल भारतीय कान्यकुञ्ज वैश्य सभा  
राष्ट्रीय व्यापार प्रांतीय संयोजक